# शीतला

उसके कारण, निदान, और चिकित्सा का सविस्तर
वर्णन किया है, और शीतला के टीका पर
निर्पक्ष व्याख्या और शीतला के इलाज
में जो वहम कहे जाते थे उनका भेद



जिसको

## कविविनोद वैद्यभूषण पण्डित ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य

मालिक

"अमृतधारा" औषधालय तथा सम्पादक
वैद्यकपत्र 'देशोपकारक' और अनेक वैद्यक
पुस्तकों के रचियता ने लिखी

और

देशोपकारक औषधालय के कार्य कर्त्ताओं
ने छपवाकर प्रकाशित किया

औषधि या पुस्तक के मिलने के वास्ते पत्र तथा तार
का पता केवल इतना है:—

"अमृतधारा" लाहौर॥

अमृत प्रेस रलवे रोड लाहौर में छपी।

कापी १०००] [मूल्य ॥=)॥

# वाचक वृन्द !

आप जिस प्रेम से मेरी रचित पुस्तकों को खरीदते, पढ़ते, और उनका आदर करते हैं, उसके लिए जितना आप को धन्यवाद दूं थोड़ा है। जब पहिले पहिल मैंने इस कार्य्य को आरम्भ किया था, और प्रत्येक विषय पर छोटी २ परन्तु सम्पूर्ण आवश्यक बातों से पूर्ण पुस्तकों को लिखना आरम्भ किया था, तो मुझे सन्देह था, कि पबलिक मेरी सेवा स्वीकार करेगी या नहीं ? परन्तु मैं प्रसन्न हूं, कि मेरी आशाओं से बढ़ कर आदर किया गया है। और अब पाठक मुझ को लिखते रहते हैं, कि अमुक विषय पर एक पुस्तक लिखिए, और अमुक पर भी लिखिए, मेरे पास समय बहुत ही कम है, सप्ताह भर में केवल २ घन्टा पुस्तक लिखने की बारी आती है, नहीं तो प्रति मास एक पुस्तक निकालूं, और पाठकों की इच्छा पूरी करूं। जितना सम्भव है कर रहा हूं, और शीघ्र ही कुछ पुस्तकें पाठकों के भेंट होने वाली हैं ॥

# यह पुस्तक शीतला

जो आप के हाथों में है, उर्दू देशोपकारक के एक लेख का अक्षर प्रत्यक्षर अनुवाद है। एक श्रीमान् का पत्र आने पर कि शीतला का बहुत प्रकोप है, मैंने संक्षिप्त रूप से इस लेख को लिखा था, मुझे इसके बढ़ाने या पुनः पढ़ने का अवसर नहीं मिला है। परन्तु पाठकों ने इसे पसन्द किया था, इसलिए पुस्तकाकार छाप कर पाठकों के भेंटि किया आशा है, आप भी इसको पसन्द करेंगे। आगामी आवृति में वृद्धि का ध्यान है ॥

**ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य लाहौर ॥**

# भूमिका.

महोदयगण !

आप जिस प्रीति से मेरी पुस्तकों को खरीदते पढ़ते और उन का आदर सत्कार करते हैं, उसके सम्बन्ध में आप को जितना धन्यवाद दिया जाय न्यून है, जबकि प्रथमवार मैं ने इस विषय को प्रारम्भ किया था, और प्रत्येक विषय पर छोटी २ परन्तु अवश्यकीय बातों से भरी हुई पुस्तकों को लिखना प्रारम्भ किया था, तो मुझको शंका थी कि पब्लिक मेरी सेवा का आदर करेगी, या नहीं। परन्तु मैं प्रसन्न हूं कि मेरी आशा से भी अधिक आदर किया गया और अब पाठकगण स्वयं लिखते रहते हैं, कि अमुक विषय पर एक पुस्तक लिखिये और फलां पर भी लिखिये, मेरे को समय बहुतही न्यून है, एक सप्ताह में केवल दो घंटे पुस्तक लिखने को मिलते हैं, वरना प्रत्येक मास में एक नवीन पुस्तक निकालूं और पाठकों की इच्छा को पूर्ण करूं, जितना यत्न होता है, कर रहा हूं और शीघ्रही कुछेक पुस्तक पाठकगणों की भेंट होनेवाली हैं॥

॥ यह पुस्तक शीतला नामी ॥

जो आपके करकमलों में है, उर्दू देशोपकारक के एक निबन्ध की केवल नकल है, एक महाशय का पत्र आने पर कि शीतला का अधिक जोर होरहा है, मैं ने संक्षेप से इस विषय को लिखा मुझको उसके विस्तारित करने अथवा पढ़ने का भी अवसर नहीं मिला, परन्तु लोगों ने इस लेख को पसन्द कियाथा, अतः मैं ने उसको पुस्तकाकार में करके पाठकगणों के भेंट किया है, आशा है कि आप भी इसको पसन्द करेंगे, अगले ऐडीशन में विस्तार पूर्वक लिखने का विचार है॥

ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य—लाहौर.

# शीतला ।

श्रीयुत लाला जैगोपाल जी महाशय अध्यापक, मदरसे शहर तहसील कोहमरी से लिखते हैं—

"आजकल इस इलाके में शीतला का अधिक ज़ोर है, कृपया इस रोग का पूर्णरूपसे निर्णय करें-जैसे विसूचिका, बीसर्प (ताऊन) आदि का प्रथम करचुके हैं, इसी प्रकार इसको भी पूर्णता से वर्णन करें, विशेष कर इन बातों का निर्णय कीजिये जोकि इस रोग में सर्वदा प्रचलित हैं,जैसे परछांवां आदि से बचाते हैं, तथा मांस, प्याज भक्षण करके रोगी के समीप नहीं जाना, अथवा नीले रंग का बस्त्र धारण करके नहीं जाना तथा स्नान करके नहीं जाना, किंवा गर्भणी स्त्री से बचाव किया जाता है, बादल की गरज नहीं सुनने देते हैं, इसका निदान मह चिकित्सा तथा सुलभ योग कि जिनके सेवन से दाग शीतला नहीं पड़ें, और नेत्रादि स्थान भी रक्षित रहें। संसार में इसको माता विख्यात कियाजाता है, इसका पूर्णरूप से निरणय और यह रोग किस प्रकार फैल जाता है, यह सर्व देशोपकारका कार्य्य है,आशा है कि आप बहुत शीघ्र इस विषय को लिखकर पब्लिक को अनुग्रहीत करेंगे" ॥

यह पत्र हमको उस समय प्राप्त हुआ, कि आठ जौलाई का अंक लिखा जा चुका था, वरने उसी समय लिखाजाता देशोपकारक पत्र पब्लिक की सेवा करने के लिये है, बस कोई

कारण नहीं है कि सर्व दूसरे विषयों को एक तरफ रखकर प्रथम बार शीतला का वर्णन नहीं ही कियाजाय। (सम्पादक)

## शीतला और वहम।

शीतला को हमारे आर्य्यावर्त में शीतला देवी के नाम से संभाषण करते हैं, यह देवी गधे पर सवार होती है, इस वास्ते जिस बालक को शीतला निकली हो, उस को माता का गधा कहाजाता है,मसूरिका निकलने को माता की सवारी कहते हैं और चिकित्सा करने को बुरा समझते हैं, माता की प्रार्थना तथा स्तुति करते हैं, इसी के गीत गाये जाते हैं कि वही इसका जीवन दान देवेगी,इसी के साथ और भी ऐसी बातें हैं जिनका प्रचार है, परन्तु नई रौशनी के लोगों को वह सर्व बहुतही बुरे वहम मालूम होते हैं, कि पूर्वजों को बहुतही तुच्छ दृष्टि से देखते हैं। जहांतक हमने विचार किया है, यह सर्व बातें अगरचे वहमसी होगई हैं। परन्तु उन में से एकभी नहीं है जोकि किसी न किसी सिद्धान्त पर न हो, यह रोग बहुत कष्टसाध्य है, और चिकित्सा भी इसकी बहुत थोड़ी और नियत है,विविध चिकित्सों के हस्तगत रोगी को करने से उसकी मृत्यु का भय है, इसलिये हमारे महर्षियों ने इसकी चिकित्सा के सम्बन्ध में कुछेक अवश्यकीय नियम बना दिये और आज्ञा दी कि इन नियमों के विरुद्ध नहीं होना चाहिये, अर्थात् और किसी प्रकार से चिकित्सा करना बुद्धिमानों में निन्दनीय कहा है, ऊपरोक्त नियम रोगी की चिकित्सा के लिये काफी हैं। यदि शीतलाका आक्रमण अधिक कठोर नहीं है तो ऐसाही होताहै और इस से अधिक यह कि परमात्मा के ऊपर भरोसा रखो। इस दुस्साध्य

रोग में जबकि बालक की संसारिक माता इस परमप्रिय सन्तानकी जीवन आशा त्याग देती है तो आवश्यक है कि उस जगतजननी सबकी माता पर भरोसा कियाजावे और परमात्मा के गुणानुवाद करें। जिस समय महाभारत का युद्ध हुआ उसके पश्चात् मनुष्यों में बुद्धि की न्यूनता के कारण अविद्या का समय आया, तो जहां और २ बातों में वहम स्थान पकड़ते गये इसके साथ भी वैसा ही हुआ, चिकित्सा इसलिये न करो कि माता क्रोधित होजायगी, शीतला माता गधे पर आरूढ़ है, रक्त वस्त्र धारण कररही है, यह है और वह है, ऐसा कहाकरते हैं। उन सर्व वहमों का हम नीचे वर्णन करते हैं और पाठकों को जानकार करते हैं कि जिनको वह वहम मानते हैं वह कैसे उत्तम तथा अत्यन्त लाभदायक नियमों पर स्थित हैं॥

## ॥ माता गधे पर विराजमान है ॥

शीतलामाता गधे पर सवार मानीजाती है। गधे और माता का पूर्णता से सम्बन्ध है. क्योंकि गधा शीतला की बहुत बड़ी चिकित्सा है। गधे का दांत शीतला के फोले का केवल एकही इलाज है, यदि शीतला की अधिकता में गधे का दांत अर्क गुलाव में घिसकर नेत्रों में लगाया जायाकरे, तो शीतला वाले रोगी के नेत्र आरोग्य रहते हैं, जब शीतला के दाने भरजांय, तो गधे के दांत को सिरके तथा अर्क गुलाब में घिसकर या केवल जल में घिसकर उनके ऊपर लगायाजाय तो जलन, खाज सब नष्ट हो जाती है, और बहुत शीघ्र अच्छे होजाते हैं, तथा कोई भी दाग पश्चात नहीं रहते हैं, खाज आदि करने से जबकि दाने खराब होजाते हैं तथा भयानक दशा होजाती है, गधे के दांत का लेप

एकही बार बदन में करने से उनको आरोग्य कर देता है और चीचके इस प्रकार उतरजाते हैं कि अचम्भा होता है ॥ शीतला के निकलने से जिसके नेत्रों में फोला होजाय गधे का दांत अर्क गुलाब में घिसकर नित्य लगाने से फोला जाता रहता है, कहते हैं यदि शीतला की कोई चिकित्सा न कीजाय केवल प्रथम रक्त ज्योती(लाल रोशनी)दीजाय अथवा अनविंध मोती खिलाया जाय, तो माता के सब दाने बाहर निकल आते हैं, पश्चात् गधे का दांत घिसकर लगायाजाय तो सौ में निन्नानवें ९९ अवश्य आरोग्य होजांयगे। जब शीतला खूब भरजाती है और नाखून से उनके ऊपर से खुरण्ड उतारी जाती है,बहुत पीड़ा होती है, तो गधे की लीद की राख बुरकाने से जलन आदि की पीड़ा दूर होने के सिवा वह जगह साफ होजाती है गधे की लीद की धूनी भी देते हैं । गधे का चर्म थोड़ा ले कर बालक के गले में बांधने से उसको भय नहीं लगता है, इसी प्रकार गधे के दांत लीद आदि और भी बहुत उपयोगी होंगें । परन्तु ध्यान न रखने के कारण आजकल अज्ञात हैं, जितने ज्ञात हैं लिखे देते हैं ॥

## ॥ माता के वस्त्र रक्त हैं ॥

यह आर्य्यवर्त बासियों के हर्ष का स्थान है कि जो डाक्टर अब दरयाफ्त करते हैं उनके देश में वह प्रथम सेही प्रचार होरहा है। रक्त रङ्ग शीतला रोग की चिकित्सार्थ बहुतही लाभकारी साबित हुआ है, डाक्टरों की सम्मति अब इस बात पर एक होती जाती है,कि यदि शीतला के रोगी पर रक्त ज्योति (लाल रोशनी) पहुंचाई जाय तो दाने शीघ्र निकल आते हैं और शीतला की

चिकित्सा भी अधिकतर यह है कि दाने भीतर नहीं रहने पावें, और मवाद सब निकलजा॰ तो पश्चात् साधारण रक्षा की आवश्यक्ता रहती है। एक और बात है कि जब शीतला निकलने को होती है, तो स्वप्न प्रायः रक्त रंग के दीखते हैं, स्त्रियां कहा करती हैं कि मातारानी रक्त वस्त्र धारण कर दिखलाई दीहै परन्तु आयुर्वेद शास्त्र में लिखा है, यदि रक्त बस्त्र धारण करे हुये स्त्री या पुरुष दिखलाईदें तो शीतला रोग आदि का भय है। हमारे लोग भी शीतला रोगी को रक्त वस्त्र धारण कराते हैं, जो बहुतही उत्तम है। रक्त वस्त्र या रक्त रोशनी गरम होती है और गर्मी दाने को बाहर निकालती है॥

## ॥ करोमियोपेथी ॥

अर्थात् रङ्गो की चिकित्साके निकालने वालेका कुल अनुसन्धान यह है, नीला रंग शीतल है, सर्वरोग गर्मी से जो उत्पन्न होते हैं, नीले रंग की बोतल का पानी दिया जाताहै। गहरे नीले रंगमें किंचित् लाली की भी मिलावट होती है, इसलिए जहां अधिक सर्दी नहीं पहुंचानी हो उस रोगी को दे॰ हैं, पीले रङ्ग की बोतल का जल सर्वशीत रोगों में पिलाना चाहिये, क्योंकि यह उष्णता उत्पन्न करता है, रक्त रङ्ग उष्ण होता है, कोष्ट वद्धतादि को खोलना, और मकनातीसी है, शरीर के विविध अंग यदि किसी कारण से सुस्त होगये हों वह इस रङ्ग के द्वारा अपनी असली अवस्था पर होजाते हैं और अपनी पूरी पूरी हरकत में कार्य करने लगते हैं, जो शरीर के भाग ठंड से अधिक सुकड़गये हों उनको रक्त रंग अधिक फैला देता है, इससे मत्यक्ष प्रगट है कि रक्त रङ्ग से शीतला के दाने भली प्रकार बाहर निकल आते हैं, और शीतला की

पीड़ा भी नहीं रहती है, इस खोजना से यहभी पता लगगया है, कि क्यों नीला वस्त्र रोगी के पास नहीं होना चाहिये, बल्कि नीला वस्त्र धारण करके रोगी के पास जाना नहीं चाहिये, क्योंकि नीला रङ्ग रक्त रङ्ग के विरुद्ध है, यह ठंढ पहुंचाता है, रोम छिद्रों को बन्द करदेता है इसलिये दानों को भले प्रकार नहीं निकलने देता, एक डाक्टर करोमियोपैथी का बचन है कि "यदि किसी को दैवयोग से तृष्णा की अधिकता होजाय तथा मूर्छा और ज्वर की अधिकता हो, अथवा बहकता हो, तो कुछ नीले रङ्ग की बोतल का जल या नीले रङ्ग की रोशनी थोड़ी डालनी चाहिये, और दानों को अधिक नीला जल पिलाकर बन्द करदेना अत्यन्त हानिकारक है, क्योंकि यदि दाने ठठराजांय, पूर्णता से नहीं भरें तो रोगी की मृत्यु होजाती है"। बस आप समझ सकते हैं कि शीतला माता के रक्त वस्त्रादि धारणा भी एक नियम के आधार पर है, रक्त रंग और शीतला का परस्पर सम्बन्ध है, वह कैसे २ बुद्धिमान मनुष्य थे, कि उन्होंने आरोग्यता के आवश्यकीय नियमों को हरएक मनुष्य के मस्तक में भरदिया था जोकि अब-तक भी नहीं निकला है, अगरचे बुद्धि की न्यूनता के कारण से वहम की सूरत स्वीकार करली है ॥

## ॥ शीतला में चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ॥

एक यहभी वहम फैला हुआ है कि शीतला में चिकित्सा नहीं करनी चाहिये, जैसे रोगी के स्थान में यदि चिकित्सा का एक पद भी मुखसे निकल जाय तो स्त्रियें बुरा मानती हैं, हम एक बार हैरान हुये कि रोगी बालक के माता पिता को कहा कि इस को अनाबिंद मोती दीजिये, तो सब दाने बाहर निकल आते हैं,

तो उन्हों ने बुरा माना। अगले दिन एक बूढ़ी स्त्री आई और उसने कहा, बलिहारी दो दाने मोती सच्चे दे देने से मातारानी चंगीतरह दर्शन देंगी, बस फिर क्या था, तत्काल दाने मोती अनबिंध मंगवाकर दिए, मैं हैरान था कि मेरा कहना क्यों चिकित्सा और इस बुढ़िया का कहना क्यों चिकित्सा नहीं, स्त्रियें एक दूसरी को पूछ कर जो चाहें करदेवें परन्तु कोई वैद्य या हकीम बतलावें तो कभी नहीं करें, यह केवल वहम है, जैसाकि मैंने प्रार्थना की, कि चिकित्सा की एक सड़क बांधकर हमारे पूर्वजों ने कहा कि प्रत्येक को इधर उधर के इलाज में पड़ने से हानि का भय है, इसलिये सिवाय इसके कोई चिकित्सा नहीं करनी चाहिये, कि कुछेक औषधियां दानों के अच्छी प्रकार बाहर निकलआने की करली जावें। आप यदि विचार करें तो विदित होगा कि सब चिकित्सा वह स्वयं करती हैं और फिर भी कहती हैं कि चिकित्सा नहीं करनी चाहिए, जैसे कि, शीतला जिस समय निकलनी प्रारम्भ हो, केशर मुनक्का में रखकर दीजाती है, जिसका अभिप्राय यह होता है कि कुछ मादा भीतर न रहजावे और यही इस रोग की बड़ी भारी चिकित्सा है, इसी अभिप्राय से कोई कस्तूरी तथा अनविंध मोती खिलाती हैं ( २ ) नमक खाना वन्द कर देती हैं। मैंने एकवार एक स्त्री से पूछा कि शीतला वाले बालक को नमक क्यों नहीं देती हैं, बड़े पोले मुंहसे उत्तर दिया कि सदके जाइये ! नमक देने से खाज होती है, मैंने कहा कि तो फिर क्या यह चिकित्सा का एक भागही नहीं है, उत्तर मिला, हां हां सदके जाइये, इस प्रकार नहीं कहाकरते। ( ३ ) नेत्रों की रक्षा नित्य

सुर्मा डालकर की जाती है, एकबार स्त्री सुर्मा डाल रही थी, मैंने कहा कि अर्क गुलाब डाल देती तो लाभकारी है, इससे नेत्र धो डालने भी हितकारी हैं, परन्तु ऐसा कौन मान सकता था। जब पूछा कि सुर्मा क्यों डालती हो तो उत्तर मिला कि यह तो माता दी राख है। ( ४ ) शीतला को शीघ्र सुखाने,और इसलिये कि चिन्ह न पड़ें, गो मूत्र व्यवहार में लाती हैं, गधे की लीद की धूनी शीतला के दानों को शीघ्र भरने तथा ठीक होने को दीजाती है, इसी प्रकार रक्त वस्त्र धारण करना, दूध नहीं पिलाना, अंधेरे में रखना, ये सब निस्सन्देह चिकित्सा शीतला की है। चिकित्सा होती है,फिर कहती हैं चिकित्सा नहीं होनी चाहिये। स्त्रियों के हृदयस्थ करना चाहिए,कि यह भी और रोगों के प्रकार एक रोग है, यदि यह रोग न होता तो बाल्यअवस्था में जो उपाय उसके न निकलने के किये जाते हैं वह क्यों न हितकारी होते ॥

## ॥ रोगी बादल की गरज न सुने ॥

जिस समय बादल गरजता है तो शीतला के रोगी के समीप कोई और शब्द थाली या पीपे का बजाना प्रारम्भ करादिया जाता है, कि बादल के गर्ज का शब्द रोगी बालक के कर्ण में नहीं पहुंचे, यद्यपि अभीतक किसी डाक्टर ने इसकी खोजना नहीं की है परन्तु असंशय किसी बड़े अनुसन्धान पर निर्भर है। इतना तो सभी जानते हैं कि बादल की गरज कृषि पर बुरा प्रभाव डालती है, विशेष कर चनों की कृषि पर इस गरज का अधिक प्रभाव पड़ता है, यह भी हमने देखा है कि यदि किसी

मनुष्य के अधिक भारी घाव हुआ हो, और वह बादल की गरज के समय बाहर खुली पवन में बैठाहो तो वह घाव बढ़जाता है, बादल की गरज अगरचे एक साधारण शब्द है, परन्तु इस का प्रभाव बहुत ही प्रत्यक्ष है, जब फसलों पर इसका प्रभाव पहुंचता है और प्रत्येक किसान इसको जानता है तो आश्चर्य्य नहीं कि घावों पर भी इसका बुरा प्रभाव पहुंचता हो, मैं निश्चय किसी बड़े मनुष्य की सम्मति देकर यह नहीं लिख सकता कि वह हानि क्या है, मेरा विचार है कि शीतला के विगड़ जाने का भय है ॥

## ॥ परछांवां ॥

जैसे प्याज, मांस खाकर शीतला के रोगी के समीप नहीं जाना, तथा स्नान करके न जाना, अथवा गर्भिणी और रजस्वला स्त्री का नहीं जाना। मेरी सम्मति में प्याज, मांस भक्षण करके रोगी के पास न जाना मान प्रतिष्ठा के विचार से है, जब देवी उसको मान लिया गया तो उसका अपमान कौन करसकता है, स्नान करके नहीं जाना इस बात की हद है कि रोगी को स्नान नहीं कराना चाहिये, जल की झलक भी घावों के वास्ते अच्छी नहीं होती है, गर्भणी और ऋतुवती का न जाना भी मान के विचार से होगा, इस में कोई ऐसा भेद है जो अभीतक समझ में नहीं आया, या केवल यह कि वह अपवित्र और अशुद्ध होती है, ऋतुमती स्त्री से और २ अवसर पर भी बचाव किया जाता है, जैसे प्रसूति गृह में भी नहीं आने देते हैं, बहुत से वैद्य औषधियां बनाते समय स्त्री तथा विशेष कर रजस्वला स्त्री का परछावां नहीं पड़नें देते हैं।

शोक है कि इसका असली कारण अभीतक प्रगट नहीं हुआ है, हां जब मेरे लड़के को शीतला निकली थी तो मैंने रजस्वला से बचाव नहीं कियाथा, परमात्मा की कृपा से लड़का बहुत अच्छी प्रकार आरोग्य हुवाथा ॥

## ॥ दूसरे देश ॥

शीतला के सम्बन्ध में दूसरे प्रायः देशों में भी अनेक वहमहैं। ध्यान से देखने से विदित होता हैं, कि जिस बात के विषय में वहम भारतवर्ष में पाये जाते हैं,उसके चिन्ह अन्य देशों में भी अवश्य पाये जाते हैं, जिसका असली कारण यह विदित होता है कि ५००० पांच हज़ार वर्ष पूर्व आर्य्यवर्त सबसे विद्वान् देश था। यहां के मनुष्य देशान्तरों में जाते थे, दुनिया का बहुतसा भाग आर्य्यवर्त के आधीन था। अमरीका के राजा की लड़की से अर्जुन का विवाह हुआ था। ईरान, कन्धार, चीन, जापान सब इस के आधीन थे। शीतला के विषय में वहम और देशान्तरों में भी हैं। निम्नलिखित जो विषय वास्ते लेख अभी प्राप्त हुआ था, नीचे लिखा जाता है।

## शीतला रोग की देवी।

### जापानियों के विचार।

प्राचीन समय में जब कि टीका लगाना इस पृथिवी में नहीं जानते थे, तो शहर टोकियू में यह सर्व प्रचार था, कि यदि रोग शीतला की अधिकता होती थी तो उसी समय एक मेला लगाया जाता था, जिसको ( हास्मतसूरी ) या मेला शीतला

कहते थे, जिसका अभिप्राय यह होता था कि इस का पूजन करके अधिक फैलने से रोका जाय। आजकल के लोग जो कि पूजा का हेतु और विधान को कठिनता से जानते होंगे, इस बात को सुनकर अवश्य यह ध्यान करेंगे कि इस का असल अभिप्राय क्या था, और आजकल फिर यह रसम शहर टोक्यू की शीतला से हनन ज़िलों में फिर जारी की जारही है, यह रीती तहवाइयों है। शीतला पीडित मनुष्य तथा उन के समीपी सम्बन्धी एक मेज बनवाते थे, जो ४ फुट लम्बी और २ फूट चौड़ी होती थी और उसको लाल वस्त्र से ढक करके एक खास ( कमरे ) में जहां मित्र तथा सम्बन्धी और समीपी उसका न्यौरा लेने आते थे रखी जाती थी, और उस के ऊपर चावलों के भरे हुए थैले, रखे जाते थे, और उसके ऊपर एक प्रकार रक्त का कागज जो कि पवित्र और पूजनीय माना जाता था, काटकर के रखा था। यह एक बनावटी पूज्य स्थान बनजाता था, सब घर के मनुष्य इकट्ठे होकर दोनों गोड़े निवाकर १२ दिन तक पूजा करते थे, और उस के पश्चात् उन चावलों को तथा अन्य वस्तुओं को दरया में डाला जाता था, अथवा शहर के बाहर दीन मनुष्यों को बांटा जाता था, और सब घर के मनुष्य और जिसको शीतला निकली है वह गरम जल में रक्त रंग डालकर उबालकर रक्त रंग का जल करके उस से सब भले प्रकार स्नान करते हैं, इस का अभिप्राय केवल रक्त रंग में है, बारह दिन तक मेला लगा रहता है, सब मनुष्य रक्त रंग के तौलियों के काम में लाते हैं, और रक्त रंग की मखमल तथा अन्य रक्तवर्ण के वस्त्र धारण करते हैं,

और कोई वस्तु ऐसी स्वीकार नहीं करते जो रक्त वर्ण नहीं हो, अपनी सन्तानों व दास दासियों को बहुत सुन्दरता से रखते हैं। स्त्रियें भी केशों में तेल नहीं लगातीं हैं, बल्कि रक्त रङ्ग से बालों को संवारती हैं, और उन दिनों में बुरे कामों से अत्यन्त बचाव करते हैं, बुरी बातों को ध्यान भी नहीं लातीं। माता की पूजा से आम खयाल यह है, कि शीतला माता एक घराने में बारह दिन तक रहती हैं, इसलिए वह उसकी भली प्रकार सेवा करते हैं कि शीतला देवी प्रसन्न रहे, और क्रोधित होकर अपने पीछे कोई बुरे असर न छोड़ जावे, आनन्द पूर्वक जावे, और फिर आने का नाम न लेवे। वहम सब देशों में समान हैं परन्तु ज्यों २ अविद्या नष्ट होकर विद्या फैलती जाती है न्यून होते जाते हैं—यह सब असल में भारत के ख्यालों की ही नकल है। इंगलैंड आदि देशों में विद्वान श्रेणी के बाहर के मनुष्यों के भी ऐसेही ख्याल हैं, इस भूमिका के पश्चात् अब हम—

## शीतला का वर्णन प्रारम्भ करते हैं

शीतला एक कठिन प्रकार का छूत का ज्वर है, जिसके साथ लाल लाल दाने निकलते हैं, चेचक तुर्की नाम है, उर्दू में यही बोला जाता है, इसको यूनानी में हुम्माजदरी, अंग्रेज़ी में स्मालपाक्स (Smallpox) या वेरी ओला (Variola) नाम है, वैद्यक में मसूरिका—या शीतला कहते हैं, और फारसी में आबलह कहते हैं, तथा सर्व साधारण जन माता कहते हैं यह संक्रामिक रोग है, एक रोगी से दूसरे को लगजाया करती है। इस का

विष वायु में असर करता है, और इस वायु में जो स्वांस लेवें उस पर इस का प्रभाव पड़जाता है, विष प्रवेश करने के पश्चात् बारह दिन तक कोई लक्षण सिवाय सुस्ती या प्रतिश्याय (जुकाम) आदि के प्रकट नहीं होता है। १२ दिन के भीतर यह विष अपनी स्थिति पूर्णता से कर लेता है, और फिर एकही बार फूटता है, अधिक तो वायु द्वारा परन्तु रोगी के बिस्तरे, रोगी की खाट, रोगी के बस्त्रों द्वारा भी एकसे दूसरे को लगजाती है, शीतला के दानों के भीतर का मवाद लगने से रोग होजाता है, अतएव जबतक टीका शीतला का प्रचार नहीं हुआ था, तो रोगी मनुष्य के शीतला के दानों का मवाद दूसरे मनुष्यों को लगाते थे, और उसको नरम शीतला होकर आरोग्यता होजाती थी और फिर नहीं निकलतीथी। कृष्णवर्ण मनुष्यों पर इसका प्रभाव अधिक होता है, यह रोग बहुधा बालकों को होता है। हमारा ख्याल है कि इसके यह अर्थ नहीं कि बड़े मनुष्यों को नहीं होती है, बात यह है कि सब आयुभर में यह रोग प्रायः एकही बार होता है,इसलिए जब शीतला रोग फैलता है तो तरुण तथा बृद्धों को तो प्रायः बालकपन में निकल चुकी होती है, इस वास्ते बालकों पर इसका प्रभाव होता है। अतएव एक ऐसे जजीरे में जहां प्रथम कभी शीतला या खसरा नहीं हुआ था, जब पाहिले पहल वहां यह रोग शीतला फली बालकों—तरुणों—वृद्धों सबको हुई, जिन्हों ने टीका आदि नहीं लगवाया हो, अथवा जिन को प्रथम न हुई हो उनको बड़ी आयु में भी होसकती है, कभी कहीं बिरलेही मनुष्य को दूसरीबार निकलती है, और

करोड़ों में से किसी एकको तीसरी बार निकलीहो, ठंढे देशों की अपेक्षा गरम देशों में शीतला रोग अधिक होता है, ग्रीष्म ऋतु भी इसको बढ़ाती है ॥

यहां ऐसा स्मरण रखना चाहिए कि शीतला विष जिसके भीतर प्रवेश करगया है, तथा ज्वर उत्पन्न होगया तो चाहे दाने अभीतक नहीं निकले हों तोभी इस मनुष्य से दूसरे को छूत लगसक्ती है। यदि शीतला के रोगी की मृत्यु होजाय तो मृत्यु के पश्चात् भी उसके शरीर से विष का प्रवाह होता है, स्त्री, पुरुष, वृद्ध, तरुण, बालक सब को यह रोग होसकता है। और तो और गर्भस्थ बालक भी रोग ग्रस्त होजाता है, परन्तु ऐसा कभी होताहै। एकवर्ष की आयुतक बहुत कम भय है। गत वर्ष मुझको एक स्त्री के देखने का अवसर हुआ जो गर्भिणी थी। उसको शीतला ज्वर हुवा, लड़की उसके उत्पन्न हुई यह कन्या समयसे प्रथम उत्पन्न हुई, ज्वराधिक्य के कारण से उत्पन्न हुई, इस कारण कई सप्ताह के पश्चात् उसकी मृत्यु होगई, उसकी जननी को अधिक शीतला निकली लड़की जबतक जीवित रही उसीका दूध पीती रही, इसके दानों का मवाद इसको लगता था, इस का श्वास छूता था, सभी कुछ था, परन्तु शीतला इसको नहीं निकली। शीतला बहुत कठिन रोग है, मृत्यु का भय तो है ही यदि रोगी बच जाय तो किसी के नेत्र में फोला होजाता है, किसी के मुख पर सदैव के लिये दाग पड़ जाते हैं, जो सुंदर रूप को नष्ट कर देते हैं, कोई २ नेत्रहीन भी हो जाते हैं, परमात्मा इस से बचावे ॥

**निदान**—कड़वा, खट्टा, लवण, खारी, बिगड़ा भोजन

विरुद्ध भोजन, भोजनोपरांत भोजन करने से अथवा लट्टू अधिक खाने से, विषवासित फूल आदि से बिगड़ी हुई वायु के भीतर स्वांस लेने से, साग पात अधिक भक्षणसे, उत्पन्न हुवे वातादि दोष दूषित रक्त से मिलकर मसूरिका रोग उत्पन्न होता है, इस की सूरत मसूर के समान होने के कारण इस का नाम मसूरिका है, दूषित रक्त का इस में विशेष सम्बन्ध होता है, (माधव निदान) ॥

ऊपर्युक्त लेख का अभिप्राय यह है, कि इन कारणों से शरीर दूषित होकर यहां तक होता है, कि विष इस में प्रवेश कर जाता है। डाक्टरी में इससे अधिक कोई कारण शीतला के नहीं दिये हैं कि एक से दूसरे को लगती है, परन्तु प्रथम को भी तो किसी प्रकार होती है। शेखउलरईसबूअलीसीना ने इसको बहुत ही उत्तमता से लिखा है, जो कि पाठकगण की आसानी के लिये सहज भाषा में नीचे लिखते हैं:—

## ॥ देखने योग्य युनानी वर्णन ॥

दुर्गन्धता के कारण रक्त में एक प्रकार का उफान (जोश) उत्पन्न होता है, जिस के कारण रक्त परमाणु परस्पर पृथक होते हैं, तथा मोहम्मदअरज़ानी लिखता है, कि उत्पत्ति शीतला और खसरे की बालकों में रक्त के कारण होती है क्योंकि रक्त बालकों का कच्चा तथा तर होता है, बदल उस में आवश्यकीय है, इस के पकाने के लिये ताबियत खर्च होती है, और यह संभव नहीं है, कि कोई गरम तर वस्तु का पाक हो और एक दशा से

दूसरी दशा में आवे और फिर जोश न पैदा हो, यही कारण है कि बालकों में रक्त विपाक के समय उस के जोश के कारण फुन्सियां उत्पन्न होती हैं,परन्तु ऐसा भी हो सक्ता है कि रक्त जोश कर और पुखता हो और प्रत्यक्ष कोई फुन्सी आदि न हो, और जोश रक्त कभी प्राकृतिक होता है और कभी अप्राकृतिक ॥

## तबई (प्राकृतिक) जोश ॥

गर्भ में बालक का भोजन स्त्री का रज होता है, इस का कुछ शेष हो या,गर्भाधान समय से ही अशुद्ध ऋतु वीर्य्य से मिला हो तथा कोई वस्तु खराब इस रक्त में गर्भाधान के पश्चात् उत्पन्न हो गई हो,(गर्भवती के रद्दी भोजन करने के कारण जिस में मल अधिक हो) तो इस रक्त का विपाक नया और शुद्ध उत्पन्न होने के लिये इस में उफान हो, जैसा कि अंगूरी शराब बनाने के वास्ते अंगूर का रस निकाल रखते हैं,तो इस में उफान उत्पन्न हो कर के शराब बना देता है, सारांश इसका एक रङ्ग हो जाता है, जो वस्तु इस में झाग के समान वातज प्रमाणुओं से होती है तथा जो वस्तु पृथिवी अंश की हैं, सब इसमें से पृथक होजाती हैं॥

## गैर तबई (अप्रकृतिक) जोश ॥

यह वह है कि सबब रक्त का भीतरी नहीं बल्कि बाहर होता है,जिस से दोष स्वकार्य की पूर्णता को त्याग अपने कर्तव्य कार्य से बदल जाते हैं ॥

प्रथम वह दोष रक्त में प्रवेश कर जाते हैं—फिर अत्यन्त उफान सर्व दोष व रक्त में उत्पन्न करते हैं, तथा चक्कर खाने, और बज

बजाने जैसा शब्द उफान के समय उठता है, जिस प्रकार प्रकृति में फसल बदलने पर होता है, विशेष कर बसन्त ऋतु बदलने पर यह बाहर का कारण कई एक प्रकार से होता है । ( क ) छूत—शीतला व खसरा. ऐसे रोग हैं. कि उनका असर अधिक दूर तक पहुंचता है, एक आदमी से दूसरे आदमी तथा एक नगर से दूसरे नगर तक यह रोग फैलता है. यह संक्रामिक रोग है, एक रोगी से, दूसरे रोगी को लग जाता है। (ख) दक्षिण दिशा की वायु जब अधिक चलती है, उसके पश्चात शीतला रोग उत्पन्न होता है, गरमतर प्रकृति को शीतला निकलने का अधिक भय है, चाहे उसके शरीर की रतूबत में दूषित मवाद का अंश हो,या उसके शरीर का रक्त फसद आदि द्वारा न्यून निकाला गया हो (ग) भक्ष्य पदार्थों में भी ऐसी वस्तु हैं. जिनके खाने मे मसूरिका ( शीतला ) रोग उत्पन्न होता है, विशेष कर उस समय, जब कि उन पदार्थों के पश्चात् गरम वस्तुओं का अधिक सेवन किया जावे, और उन वस्तुओं की आदत भी नहीं हो। जैसे घोड़ी और ऊंटनी का दूध, यदि अधिकता से सेवन किया जावे और उनके खाने का अभ्यास भी न हो, पश्चात मदिरा का अधिक सेवन किया जाय, किंवा और ऊष्मौषधियों का सेवन किया जाय, तो शीतला का रोग होता है ॥

शीतला अकसर मनुष्यों को एक समय के लिये होती है, तरुण तथा वृद्ध मनुष्यों को शीतला कम निकलती है, अथवा कारणों की अधिकता और उस नगर की उष्णता तथा तरी अधिक हो, तो निकलती है, और खुश्क प्रकृति वाल

मनुष्यों को शीतला न्यून निकलती है। वसंत ऋतु में शीत की अपेक्षा शीतला अधिक निकलती है और वर्षा ऋतुके पश्चात् भी शीतला निकलती है, विशेष कर जब इस से प्रथम ग्रीष्म ऋतुमें अत्यन्त गर्मी पड़े और वर्षा ऋतुमें भी कुछ गरमी शेष हो तो शीतला अधिक निकला करती है। डाक्टर लूईकोहनी और कुदरती चिकित्सकों का वर्णन है, कि दूषित मवाद, शरीर के भीतर उत्पन्न होता रहता है, जब यह अधिक बढ़ जाता है, तो तबियत इसको निकालना चाहती है, एक प्रकार का युद्ध होता है, मवाद दानों की सूरत में बाहर निकलता है, और ज्वर की अधिकता भी इसी युद्ध के कारण से होती है, हम यहां सविस्तर इस का वर्णन नहीं कर सकते,और न यह वर्णन भारत वर्षकी वैद्यक के वर्णन से किंचित भी विरुद्ध है॥

**शीतला के लक्षण**---अब हम शीतला का लक्षण आरम्भ करते हैं। चेचक के चिन्ह एक दम उठते हैं, अंगमर्द हो कर सरदी ज्वर तत्काल होजाता है, सिर तथा कमर में दर्द होता है, उबकाइयां आती हैं, ज्वर की उष्णता १०२ से १०४ के मध्य में होजाती है, और अगले दिन उससे भी अधिक होजाती है, तबीयत निर्बलता होजाती है क्षुधाबन्द होजाय तृषा अधिक लगे, जिव्हा के ऊपर तह जम जाती है, और कोष्ठ बद्धता होती है, ज्वर के तीसरे दिन प्रायः ४८ घंटे के पश्चात शीतला के दाने निकलने आरम्भ हो जाते हैं, मुफरहउलकलूब पुस्तक युनानी में लिखा है, खसरा, तथा शीतला के ज्वर का लक्षण पीठमें दर्द, नाकका खुजाना और बहना नेत्रों से आंसू, सिर में दर्द, सब शरीर में वेदना और स्वप्न में

डरना, त्वचा में जलन हो कभी २ किसी २ बालक को खांसी, कमर में दरद, तथा श्वास कम आना, आवाज का बैठना प्रतीत होता है, यदि ज्वर इस प्रकार का विदित हो तो कहना चाहिये कि इसको खसरा या शीतला निकलने वाली है, विशेष कर जब कि ऋतु भी हो" ॥

ज्वर की बढ़ती घटती का भी ध्यान रखना इस में सहायक है। अतः शीतला ज्वर का घटाव बढ़ाव इस प्रकार होता है :—
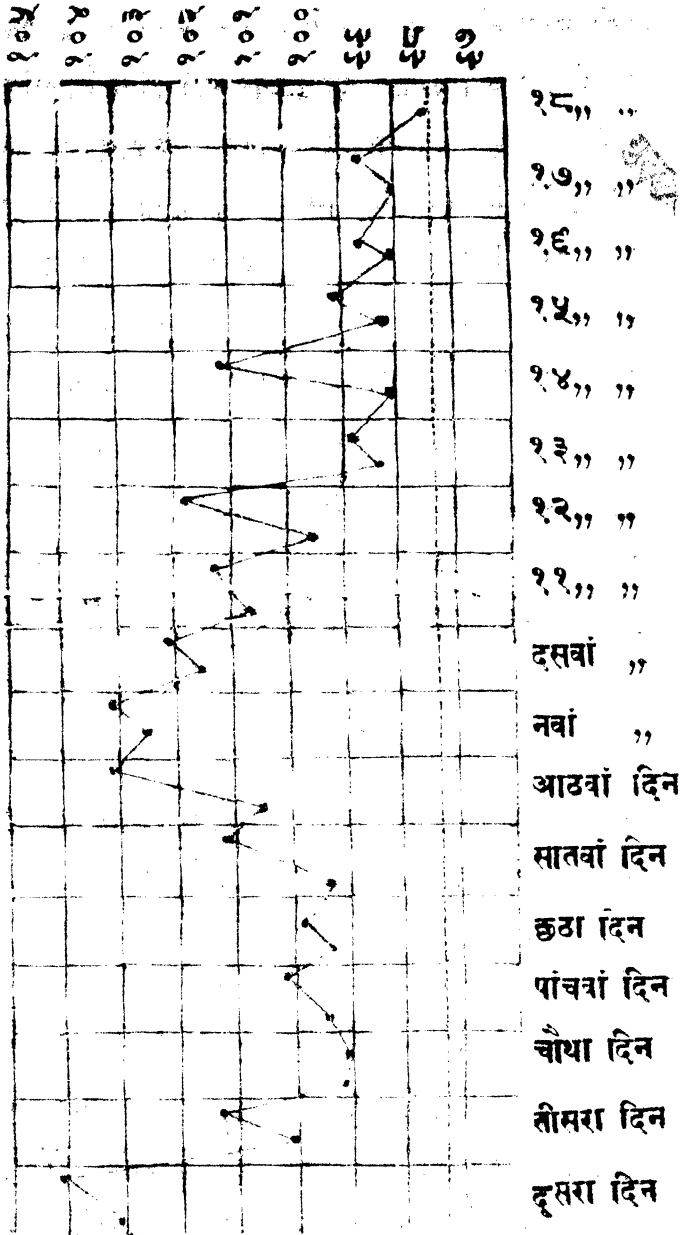
नोट—प्रत्येक ज्वर में सदैव इस प्रकार का नक्शा बनाना चाहिए। इस से पता लगता रहता है, कि ज्वर किस प्रकार चल

रहा है, इसको समझ लो, दांई ओर से ९७ से लेकर १०५ तक दर्जे हरारत थर्मामिटर में। ९८॥२ दरजे ज्वर नहीं होता है, जोकि बिंदीदार लकीर से दिखलाया गया है, ऊपर दिन लिखे हैं, एकही घर में दो बार बिंदी देने से अभिप्राय सायम् प्रातः ऊष्मा (हरारत) है जैसे शीतला में दूसरे दिन ज्वर प्रातः १०४ और सायं १०५ ह तीसरे दिन जबकि दाने निकलते हैं, प्रातः १०१ से कुछ अधिक और सन्ध्या को १०२३ है, चौथे दिन इससे भी कम हो गया है, प्रातः १०० से ऊपर, सन्ध्या को १०० है, सातवें दिन फिर कुछ अधिक होता है, आठवें तथा नवें दिन १०४ से किंचित् अधिक रहा है, क्योंकि इस समय शीतला बल पर होती है, फिर घटना, प्रारम्भ होता है, और कभी कम कभी अधिक होता है, अठारवें दिन शरीर बिलकुल स्वच्छ (साफ) होगया है॥

## शीतला के दाने

तीसरे दिन उत्पन्न होने प्रारम्भ होते हैं, प्रथम छोटे २ लाल उभार मुख, मस्तक, शिर पर विदित होते हैं। इसके पश्चात् छाती, कमर, बाहू और हाथों पर भी निकलते हैं, और सब के पश्चात शरीर के निचले भाग टांगों तथा पाओं पर विदित होते हैं, इस समय ज्वर की उष्मा न्यून होजाती है, यह रक्त चिन्ह शीघ्र बड़े होते जाते हैं इन को यदि अंगुली से स्पर्श किया जाय तो ऐसा अनुभव होता है कि दूर तक फैले हुए हैं, इन के विदित होने के तीसरे दिन इनके मध्य में रतूवत दिखलाई देती है जोकि प्रथम स्वच्छ तथा उज्वल होती है, अर्थात दानों के मध्य में एक छोटासा उज्वल छाला ज्ञात होता है, दो दिन तक यह छाला बढ़ता रहता है,

जो कि दाने निकलने पर भी किंचित ही न्यून होता है। दाने शीघ्र ही मानों दूसरे दिन ही उत्पन्न हो जाते हैं। मुख पर सब से अधिक उत्पन्न होते हैं, इतने कि परस्पर मिल जाते हैं। पृथक् भी नहीं प्रतीत होते हैं। चेहरा बहुत शोथयुक्त सा हो जाता है, और पपोटे सूजकर नेत्र बन्द होजाते हैं। पीप पड़ने के समय अधिकतर दाने परस्पर मिल जाते हैं, और बड़े २ पीप युक्त घने ज्ञात होते हैं। नाक, कण्ठ, गले की झिल्ली अधिक रोग युक्त होते हैं। पीप पड़ने के समय जो दूसरी बार ज्वर उत्पन्न होता है, वह भी अधिक होता है, रोगी घटता है, नाड़ी अधिक चंचल ( तेज ) होती है। मोह या मूर्छा भी होती है। मानो दुःसाध्य शीतला रोग का नाम कन्फिल्युअन्ट, है। इसमें मृत्यु अधिक होती हैं प्रायः ग्यारहवें दिन रोगी की मृत्यु हो जाती है, यदि आयु शेष है तो ग्यारहवें दिन लक्षणादि में न्यूनता प्रारम्भ होने लगती है, और चौदहवें दिन आरोग्यता हो जाती है॥

मै लिग्नैन्ट स्मालपाक्स Malignant Small pox

इसको हम असाध्य शीतला कह सक्ते हैं, इसको परप्यूरावेरी ओला Perpura Variolae भी कहते हैं। यह प्रथम से भी बहुत कठिन है, ज्वर के दूसरे ही दिन अथवा २४ घंटे के भीतर २ दाने निकल आते हैं, और तत्काल ही उनमें पीप के स्थान रक्तादि उत्पन्न हो जाता है, त्वचा के नीचे किसी २ स्थान पर रक्त बहजाता है, चेहरा लाल और फुला हुआ होता है,

नेत्र बहुत लाल होते हैं, मूत्र में आलब्यूमन (ओज) होता है, अथवा रक्त बहता है, मूर्छा मोह इस में बहुत न्यून होती है प्रायः तीन ही दिन में उसकी मृत्यु हो जाती है ॥

(घ) हेम्योरेजिकस्माल पाक्स जिसको वेरीओला हेमोरेजीका पौस्टियूलोठा, Haemorrhagic small pox, Variolla haemorrhagica postulosa भी कहते हैं, हेमोरेज के अर्थ लहू का बहना है, पस इसको शीतला जिरयान खूनी तथा शीतला दमवीया या रक्तस्रावी शीतला लिख सक्ते हैं॥यद्यपि शीतला दुसाध्य में रक्त का संचार होता है, परन्तु वह बहुत शीघ्र होता है, और उसमें साधारण शीतला की न्याई रतूवत भरती है, जो बहुत स्वच्छ (साफ) होती है। और इस में पीप बनने की जगह दानों के नीचे रक्त बन जाता है। १ टांगो पर पहिले रक्त जोश भी मारता है। ज्वर तथा अन्य लक्षण कष्ट साध्य होते हैं, बारीक झिल्लियों से भी रक्त जारी हो सकता है। नाक, फेफड़े, गर्भ स्थान, गुर्दा, तथा गुदा, से भी यदि रक्त निकलने लगजाय तो अत्यंत घोर है, इसमें भी मृत्यु ही प्राप्त होती है, परन्तु उपरोक्त प्रकार सेन्यून, होती है।

(४) माडी फायड स्मालपाक्स, Modified small pox जिसको वेरीओलायड भी कहते हैं। वेरी ओला शीतला का लातिनी नाम है, वेरीओलाइड, छोटी शीतला से अभिप्राय है, माडीफायड के अर्थ संशोधित है, पस यह एक नरम प्रकार की शीतला है, वह प्रायः उन मनुष्यों को निकलती है, जिन

को टीका लग चुका है, परन्तु वह ठीक नहीं लगा और, कुछ मवाद भीतर रहगया, अथवा टीका लगने को इतना विलम्ब होगया है, कि अब फिर रोगी का शरीर विषको धारण करने योग्य होगया है, साधारण शीतला कभी नरम होसक्ती है, उपरोक्त लेखानुसार, और कोई खास परीक्षा नहीं है, कि यह आर्डेनरी शीतला है, या माडीफ़ाईड, और इस विचार से तो इसके पृथक वर्ण करने की आवश्यता भी न थी, परन्तु किसी २ डाक्टरों का कथन है, कि इसमें नियमों की विरुद्धता अधिक होती है, यह हो सकता है, कि वह बहुत ही सूक्ष्म अथवा सूक्ष्म ज्वर कोई २ दाने उत्पन्न हों, और हो सकता है कि पीप तक वरन-कतिपय समय पीप बनने तक भी नौबत न पहुंचे, रोगी आरोग्य हो जाय, कभी २ ज्वर अधिक भी हो जाता है, परन्तु ज्वर की अधिकता बहुत थोड़ समय तक रहती है, यदि पीप उत्पन्न हुई तो इस समय का ज्वर अति सूक्ष्म होता है, रोगी हंसता खेलता आरोग्य हो जाता है। (ब) इनअक्योलिटड स्माल पाक्स अर्थात् शीतला का टीका। जब शीतला का टीका लगाया जाय तो जहां टीका किया जाय वहां दूसरे दिन एक फोड़ा या छाला सा उत्पन्न होता है, जोकि पीछे रतूबतदार और पश्चात् पीप युक्त होता है, उस समय रोगी के शरीर में भड़कन होती है, मुंडे पड़ जाते हैं, और ज्वर भी उत्पन्न हो जाता है। ग्यारहवें दिन साधारण शीतला के लक्षण प्रारम्भ हो जाते हैं, और सर्व चिन्ह साधारण शीतला के उपरोक्त लेखानुसार होते हैं, यह तब होता है, कि शीतला का विष बालक में अधिक प्रविष्ट

होगया हो, यह कभी ही होता है, आक्रमण नरम ही होता है, कभी २ मृत्यु हो जाती है।

## शेख़ बूअली सीना क़ानून में लिखते हैं :—

"जिस समय शीतला उत्पन्न होती है, प्रथम शरीर में खुजली सी होने लगती है, पश्चात् ऐसी चीजें उत्पन्न होती हैं, जैसाकि कांटों के सिरे, परन्तु गोल बाजरे के समान, इसके पश्चात सर्व दाने उत्पन्न हो जाते हैं। प्रथम रतूबत, पश्चात पीप से भर जाते हैं, पश्चात मवाद निकल जाता है, और खुशक रेशे रंगारंग के हो जाते हैं,इस के पश्चात पपड़ियां गिर जाती हैं,और आरोग्यता हो जाती है, प्रायः जदरी (शीतला) जब प्रगट होती है तो इसका रंग (फलगमूंनी) के समान लाल होता है, परन्तु कभी कभी रङ्गत खाकी और बनफशी और स्याह आदि भी होती है, रंग के कारण से शीतला के निम्न लिखित भेद हैं। रक्त, श्वेत, पीत, हरा, बनफ़शई, कोई श्यामता लिए और खाकी होती है। हरी और बनफशई, नीलता युक्त रंग की शीतला अति भयानक है, और जिस प्रकार श्यामता इस में बढ़ती जाय हानि इस की अधिक होती जाती है। श्वेत रंग सब से न्यून दूषित है, यदि कुछ दाने उत्पन्न हों तथा बड़े हों, उत्पन्न होने में कष्ट न हो, ज्वर सूक्ष्म हो, और उत्पन्न होने के पश्चात् ज्वर जाता रहे, और प्रारम्भ ज्वर से तीसरे दिन दाने निकलें, श्वेत रंग के दाने देखने में नहीं आते, इस लिये ज्ञात होता है. कि प्रत्येक प्रकार की शीतला साधारण जिसका ऊपर वर्णन हुआ दाने कम लाल होते हैं, अतः उसको हानि रहित लिखा है, बूअली

सीना ने तो कठिन शीतला ज्वर जिस में दाने श्वेत होते हैं, इसको भी शीतला में सम्मिलित कर लिया है, अनुमान कहता है, कि आईनरी शीतला की नरम अवस्था इस को समझा जावे, और उन श्वेत दानों की शीतला की उत्तम प्रकार यह है, कि दाने बड़े हों, और अधिक हों, चाहे समीप २ भी हों, परन्तु परस्पर मिले न हों, क्योंकि यदि दाने परस्पर मिल जांय, तो वह अधिक मांस को घेर लेते हैं, और उनके मेल से एक गोल आकार उत्पन्न होताहै, जो अधिक बुराहै, यदि दाने दुहरे उत्पन्नहों। वह भी अच्छे नहीं हैं, श्वेत दाने जब छोटे२ और कठिनता से उत्पन्न हों, तो रोगारम्भ में यद्यपि स्वास्थ्य की आशा अधिक होती है, परन्तु अंत में इस बात का भय होता है, कि दाने कठिनता से पकेंगे, इसलिये रोगी की संज्ञा बिगड़ जायगी, यहां तक कि मृत्यु भी हो जावे, क्योंकि इस शीतला का मवाद गाढ़ा होता है ॥

एक प्रकार की शीतला अति भयानक है, जिस में प्रायः रोगी की मृत्यु ही होती है, यदि दानों का रंग भी बनफशई है, और यह कि कभी दाने उत्पन्न हों, और कभी भीतर बैठ जांय, और यदि लहूज भी हो, अर्थात् दाने त्वचा के ऊपर भली भांति नहीं उभरें, तथा निर्बलता के कारण उन के नहीं उभरने की आशा हो तो इस से भी अधिक भयानक है, और किसी अंग के दाने हरे या श्याम रंग हो जाने से रोगी की मृत्यु हो जाती है, याद रहे कि यदि कोई अंग दानों के पूरे उभार के पीछे हरा हो तो बल न्यून नहीं होता है, बल्कि बढ़ता जाता है और मृत्यु का भय नष्ट हो जाता है। यदि प्रथम शीतला

उत्पन्न हो पश्चात् ज्वर विदित हो, तो यह प्रथम ज्वर होकर शीतला उत्पन्न होने वाली से अधिक भयानक है, शीतला रोगी की श्वास और आवाज़ का अधिक ध्यान रखना आवश्यक है, यदि ये दोनों अच्छे हैं, तो रोगी अच्छा है, यदि रोगी का श्वास उलटा चले तो निश्चय जानना चाहिये कि अत्यन्त निर्बलता हो चुकी, अथवा भीतर के परदों में शोथ होचुकी, हृदय के परदे की दाह जिसको अंग्रेज़ी में पैरीकारडआइटस कहते हैं, इस का होना भयानक है। अब यदि तृषा की अधिकता होती जाय, तथा बेचैनी, घड़ी २ अधिक २ होती जाय, और शीतला अथवा खसरा ठंडा होने लगे, तो रोगी की शीघ्र ही मृत्यु हो जायगी। यदि शीतला इस प्रकार की हो, जिस का उत्पन्न होना, तथा विदित होना, अति विलम्बता से हुवा हो, तो और भी मृत्यु का चिन्ह है। प्रायः शीतल रोगी बात कोप वा रक्त कोप कंठ गत रोग से मरता है। कभी अत्यन्त निर्बलता से, अथवा पेचिश व अंतडीयों के खराश से, यदि बनफशा के रंग की शीतला तथा खसरा भीतर बैठ जाय, तो जानों कि रोगी को मूर्छा होने वाली है, यदि रक्त का मूत्र हो और उस के पश्चात, कालेरंग का मूत्र हो तो रोगी की मृत्यु होगी, विशेषकर जब कि अत्यन्त निर्बल होवे, यदि रक्त मिले दस्त तथा हरे अथवा मांस के धोवन के सदृश और निर्बलता अधिक होती जाय तो अवश्य मृत्यु को प्राप्त होवे॥

## ॥ हमीका ॥

युनानी किताबों में एक प्रकार की शीतला हमीका वर्णन

की गई है, परन्तु ज्ञात होता है, कि सूक्ष्म शीतला का नाम पृथक तौर पर इसीका रख लिया गया है, यह शीतला तथा खसरे के मध्य की समझनी चाहिये। इसी प्रकार मोमी और रसासी भी एक प्रकार की शीतला वर्णन की जाती है जिसमें दाने चेहरे तथा छाती और पेट पर पिंडली और पांव की अपेक्षा अधिक उत्पन्न होते हैं यह किस्में रही हैं, और इस बात की सूचक हैं, कि मवाद शीतला अधिक गाढा है, वह हाथ पांव की ओर से नहीं निकल सका है ॥

## ॥ वैद्यक में शीतला के भेद ॥

दोषानुसार वर्णन कीगई हैं, साधारणतः वही लक्षण हैं जो ऊपर वर्णन किये गये ॥

वात मसूरिका के दाने कृष्ण, लाली युक्त, रूक्षता अधिक लिए हुए होते हैं, अधिकता से उत्पन्न होते हैं, उनमें सुई चभोने जैसी अधिक पीड़ा होती है, शीघ्र पकते हैं, जोड़, अस्थी और पोरवों में फोड़ने के समान पीड़ा होती है, थकावट, तृषा, जीभ और तालू का सूखना खांसी, कम्पन, अरुचि होती है ॥

## २—पित्तज मसूरिका के लक्षण ।

पित्तज मसूरिका ( चेचक सफ़रावी ) के दानों का मुख रक्त पीत तथा कभी २ श्वेतता लिये भी होता है, जलन और सोजन अधिक हो, शीघ्र पक जाते हैं, प्यास की अधिकता, अरुचि,

मुख भीतर से अधिक पक जाता है, नेत्रों में दाने निकलना, ज्वर अधिक तेज, विष्टे का रंग नीला होजाता है ॥

## ३—कफज मसूरिका के लक्षण ॥

कफज शीतला ( चेचक बलगमी ) वाले के मुख से झाग गिरना, कफ निकले, शरीर में तरावट, शरीर में भारीपन, सिर में दर्द, उबकियां, बेकली, निद्रा की अधिकता, श्वास, और दाने श्वेततायुक्त, चिकने मोटे बहुत होते हैं, इनमें खाज अधिक होती है शूल, तथा चिरकाल में पकते हैं ॥

## ४—रक्तज मसूरिका के लक्षण ॥

रक्तज शीतला ( चेचक दमवी ) के लक्षण पित्तज मसूरिका के समान होते हैं, परन्तु दानों में खुश्की न्यून, तथा लाली अधिक होती है ॥

## ५--सन्निपातज मसूरिका के लक्षण ॥

त्रिदोषज शीतला के दाने नीले, चपटे, और लम्बे होते हैं, शूल अधिक, दुर्गन्ध युक्त मवाद निकले, बहुत काल में पकें, तथा दाने अधिक उत्पन्न होते हैं, ऐसा जानो ॥

मेरी सम्मति में--असाध्य शीतला तथा मेलिगनेन्ट स्मालपाकस जो डाक्टर वर्णन करते हैं वह यही है, वह दोषों का वर्णन नहीं जानते, भेद तो उन्हों ने भी इतनेही कहे हैं, परन्तु बिना कारण, वैद्यक उनके कारणों को बताती है, कि दोषों का इनमें फरक है, इस प्रकार कफज शीतला नरम, पित्तज शीतला आरडनरी शीतला है, रक्तज शीतला हेम्यूरजक है ॥

याद रहे कि दो २ दोष मिलकर भी होसक्ते हैं, ऐसी अव-स्था में दानों के चिन्ह परस्पर मिलते हुवे होते हैं. कफज, और पित्तज शीतला का नाम रूमातक है, सर्वसाधारण इसको सोमि माता कहते हैं ॥

## ॥ आवश्यक नोट ॥

विदित हो कि प्रत्येक प्रकार की शीतला इस प्रकार से अत्यंत दुसाध्य होती हैं, यदि उस का सम्बन्ध सप्तधातुओं से होजाय, सप्तधातु यह हैं, रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थी, मज्जा और वीर्य्य में प्रत्येक का विपाक होकर एकसे दूसरी बनती हैं, रसगत शीतला के दाने त्वचा के उपरी भाग में होते हैं, भीतर नहीं होते तथा घिरे हुवे होने के कारण इसका अंश बहुत न्यून होता है. इसके दाने जल के बुलबुले के समान होते हैं, और इनके फूटने से जल निकलता है ॥

## ॥ रक्तगत शीतला ल० ॥

जिस शीतला का असर रक्त में पहुंचाहो उसकी फुंसिया तांब के रंग के सदृश शीघ्र पकने वाली तथा इसका ऊपरी छिलका पतला होता है, इसके फूटने से रक्त मिली रतूबत निकलती है प्रथमवाली शीतला से यह अधिक दुस्तर है ॥

## ॥ मांसगत शीतला के ल० ॥

यदि मांस में शीतला पहुंचजाय तो उसके दाने स्निग्ध, तथा कठिन होते हैं, अधिक दिनों में पकते हैं, छिलका उन का नी-

नीला होता है। बेचैनी, भड़कन, तथा खुजली अधिक होती है, मूर्छा, जलन और तृषा अधिक होती है।

## मेदागत शीतला ल०

यदि शीतला का प्रभाव चर्बी में पहुंच जाय, तो उस के दाने गोल होते हैं, नरम कुछ ऊंचे और कुवर्ण होते हैं, ज्वराधिक, शूल (दर्द) अधिक होताहै, हिज़यान मूर्छा, जलन, ये अधिक होंगे, इस में दो चारही सौ में आरोग्य होते हैं, यूनानी का भी यही तहकीकात है कि स्याह अत्यन्त दुस्कर है।

## अस्थिगत शीतला ल०

यदि शीतला हड्डी और उसके भीतर की मज्जातक पहुंच जाय, तो उसके दाने बहुत छोटे, रुक्ष, चिपटे, तथा कुछ ऊंचे होते हैं। चित्त बहुत खराब रहता है, मूर्छा होती है, सर्व अस्थियों में काटने के समान पीड़ा होती है, अत्यंत बेचैनी, तथा अत्यंत दर्द होता है, शीघ्र ही रोगी यमालय पहुंच जाता है, इसको हम दूसरे अनुसन्धान में यों बतलाते हैं, के दाने पूर्णता से नहीं निकले हैं, तथा भीतर अधिक रहते हैं, क्योंकि हड्डी के भीतर तक पहुंचे होते हैं।

## वीर्य्य गत शीतला ल०

यदि शीतला मज्जा से बढ़ कर वीर्य्य में पहुंच जाती है, तो उस रोगी की अवश्य मृत्यु होजाती है, दाने चिकने तथा गीले होते हैं, पृथक २ छोटे २ और शूल अधिक होता है, दर्द की

अधिकता इसके अंश के बढने से बढ जाती है, सर्व शरीर में होता है, मूर्छा, सोज, बेसबरी, प्रलाप, अन्त में मृत्यु होजाती है, ये असाध्य है ।

## नोट नं० १

यह स्मरण रखना चाहिये, कि शीतला जब बाहर निकलती है तो शरीर के भीतर ही कई एक पर्दों में उत्पन्न हो जाती है कुछ बाहरी हद नहीं है, यह परमात्मा की माया और कृपा तथा उसकी ही दयाळुताहै, कि इस प्रकार फुन्सियां होती हैं, मर्म स्थान बचजाते हैं, वरन-मर्म स्थान में एक छोटी सी फुन्सी मृत्यु कर सक्ती है ।

## नोट नं० २ साध्यासाध्य

रस तथा रक्त तक जिस शीतला का अंश पहुंचा हुवा है, उस को बिना ही चिकित्सा आरोग्यता प्राप्त होजाती है, कफज, पित्तज शीतला भी अति दुःसाध्य नहीं हैं, हां वात पित्त श्लेष्मवात इनकी शीतला अधिक दुःसाध्य हैं, इनमें शीघ्र चिकित्सा करनी अधिक आवश्यकीयहै, सन्निपातज शीतला जिसमें फुन्सियां रक्त तथा जामन के रंग के सदृश अथवा लोहे के मैल के रंग की, या अल सी क बीज के समान होती हैं, वे असाध्यहैं, चिकित्सा नहीं करना इसी प्रकार जिसका असर अस्थि मज्जा और मनी तक पहुंच गया वह सब असाध्य हैं, शीतला में यदि खांसी, हिचकी, प्रलाप, ज्वरकी अधिकता, भ्रम, मूर्छा, तृषा, जलन, नेत्र टेढे होना, नाक नेत्र से रक्त जाना, कंठ में घराट का बोलना, भयानक श्वास, केवल नासा द्वारा श्वास लेना, तृषाकी अधिकता, तथा वायुकी अधिकता,

होकर शीघ्र मृत्यु होजाती है, यदि शीतला के रोगी की हथेली, पहुंचे, और कंधे में सोजन हो वह भी असाध्य है।

## नोट नं० ३

बाज वैद्य कहते हैं कि मसूरिका चेचक नहीं है बल्कि चेचक को संस्कृत में शीतला कहते हैं, मसूरिका छोटी शीतला का नाम है, हम ने जहां तक अनुसन्धान किया है, मसूरिका ही चेचक है, शीतला इस का दूसरा नाम है, बाज़ वैद्यों ने जो शीतला पृथक लिखा है, तो उसे उन का अभिप्राय बड़े दानों वाली चेचक से ज्ञात होता है, अतएव लिखा हैं। के यदि प्रथम ज्वर उत्पन्न हो कर मसूरिका बड़े दानों वाली उत्पन्न होवें तो उस को बृहती शीतला कहते हैं, यह सात दिन में निकलती है, ७ ही दिन में भरती है, तथा ७ दिन में सूखती है, और उस समय फुन्सियां पक कर झड़ती भी हैं। बड़ी शीतला के विषय में भावप्रकाश ग्रंथ में इस प्रकार लिखाहै। "यदि मसूरिका ही में शीतला देवी का आवेश होता है तो इस को शीतला कहना चाहिये, जिस प्रकार भूत ज्वर, भूत होता है, इसी प्रकार इस शीतला का ज्वर होता है। यह शीतला ७ प्रकार की होती है। प्रथम ज्वर उत्पन्न होकर, पश्चात् बड़ी २ फुन्सियां शरीर में उत्पन्न होती हैं, वह बड़ी शीतला कहलाती है। प्रथम ही सप्ताह में उत्पन्न होती है, दूसरे सप्ताह में भरती है, और तीसरे सप्ताह में सूखजाती है, तथा स्वयम् जाती है। यदि कोई शीतला पक कर फूटे तो एरने उपले की राख उस पर छिड़कें, और नीम की टहनी पत्तों वाली

से मक्खी हटाते रहें, ज्वर होते ही ठंडा जल पीने को देवे, उष्ण जल नहीं देना, शीतला रोगी को शुद्ध तथा पवित्र रखें, और शुद्ध, सुन्दर, पृथक् ठंडे स्थान में रखें, रोगी को अपवित्र मनुष्य नहीं स्पर्श करे, और न उस के पास जावे, बहुत से वैद्य शीतला में औषधि देते ही नहीं, और बहुत से अवश्य देते हैं। जो देते हैं उन की सम्मति के अनुसार निम्न चिकित्सा लिखते हैं:-

आगे जाकर ७ प्रकार की शीतला के निम्न वर्णन लिखे हैं ( १ ) बड़ी शीतला जिसका वर्णन ऊपर होचुका है। ( २ ) कोदवा यह बात कफ से उत्पन्न होती है, दानों की सूरत कोदों के समान होती है, पकते नहीं हैं, १२ दिन में बिना चिकित्सा जाती रहती है, यदि औषधि देनीहो तो खरदरारिष्ट देवें उत्तम है ( ३ ) पानिसहा—उष्ण से उत्पन्न होती है, खुजली होती है, हाथ फेरने से आनन्द मिले, सातवें दिन अपने आप सूख जाती है, दाने राई के सदृश होते हैं। ( ४ ) बालकों के मुख पर उष्णता, से राई के सदृश हों, वह दुखकोदरवा कही जाती है, यह भी कुछ दिन में अपने आप सूख जाती है। ( ५ ) प्रथम ज्वर शूल अधिक, कुष्ट के समान रक्त तथा ऊंचे दाने होते हैं, फुन्सी मिल जाने से कई एक फुन्सियां दिखलाई देती हैं, ज्वर केवल तीन ही दिन रहता है ( ६ ) सर्षपिका यदि शीतला पीत सरसों के सदृश हो, उसमें मर्दन नहीं करना। [ ७ ] चिर्मानि २—स्याही मायल जिसके दाने हों, कई एक शीतला बिना चिकित्सा ही जाती रहती हैं, कई एक शीतला कष्ट साध्य

हैं, कठिनता से आरोग्य होता है, कई एक शीतला असाध्य है, उन में चिकित्सा करने से भी आरोग्यता नहीं होती है ॥

( नोट )—यह हमारी सम्मति है, कि शीतला केवल प्रथम प्रकार को कहना चाहिये, जिसका दूसरा नाम मसूरिका रख दिया है, वह भी भाव मिश्रने जिनको थोड़ाही काल व्यतीत हुवाहै, प्राचीन वैद्यों ने मसूरिका और शीतला का पृथक वर्णन नहीं किया है, शेष ६ भेद इसके साधारण हैं। उनके प्रत्येक के पृथक २ नाम अंग्रेज़ी तथा यूनानी में लिखता, परन्तु इस पुस्तक में इसका काम नहीं है, उपरोक्त दोनों प्रकार में दो बातें याद रखनी अत्यावश्य हैं प्रथम यह कि जल शीतल देना चाहिये, तथा उष्ण जल देना निषेध है, और ऐसा ही युनानी तथा डाक्टरी में लिखा है, जैसा कि आप आगे अवलोकन करेंगे, इस प्रकार स्थान ठंडा होना चाहिये, इसका अभिप्राय यह है, कि चेचक गर्मी दाने हैं दानों के निकालने की कोशिश के लिये जहां कुछ उष्ण पहूंचाने की आवश्यकता है, वहां तृषा की अधिकता तथा ज्वर की अधिकता दूर करने के लिये ठंडा जल तथा अन्य चीजों की आवश्यकता है, नहीं तो होसक्ता है, कि ज्वर इतना अधिक होजाय कि जिससे मृत्यु हो जाय, सर्व साधारण जन भी केशर और मुनक्का देते हैं, वहां वह भी इसकी उष्णता को न्यून करने को देते हैं। कमरा साधारण ठंडा उत्तम है, शीतल उस दशा में जबकि ज्वर अत्यन्त अधिकहो, और उष्ण अवस्थामें कि ज्वर साधारणहो।

———

## शीतला से निम्न लिखित और उपद्रव भी होजाते हैं॥

शोफ,कोष्ठबद्धता, वायु, खांसी, पार्श्वशूल,रक्तष्ठीवी, जिह्वक (जिह्वा सूजन), नेत्ररोग, रक्तपित्त, नेत्ररोग, फोला, अंडकोशका शोफ,गर्भाशय में शोफ,गर्भनष्ट,शरीर के अवयवों में शोफ, उन्माद हकलापन,फोड़ आदि, अनेक रोग उत्पन्न होजाते हैं, कर्ण की अस्थि में घाव,अधरंग आदि रोग भी होजाते हैं ॥

## परिणाम ॥

प्रत्येक प्रकार के साथ फल भी पीछे साथ ही लिखा जाता रहा है, जैसे अमुक प्रकार की शीतला में आशा आरोग्यता की है,और अमुक प्रकार की शीतला में लक्षण असाध्य होने से नहीं होती, यही परिणाम है ॥

## निदान ॥

शीतला जब कि फैल रही हो, तो कम्प, अत्यन्त शिरोवेदना, पीठ में दर्द, वमन आदि चिन्हों से शंका करनी चाहिये, कि शीतला होगी। नाक में कण्डू ( खुजली ), सोते हुए डरना, मुख और वर्ण का लाल होना,आंखों से कभी अश्रूपातादि चिन्ह जो पीछे लिखे गये शंका को पुष्ट करते हैं। और यह चिन्ह दूसरे दुःसाध्य रोगों में भी होसक्ते हैं । परन्तु जबकि चेचक फैल रही हो तो हमें इसी का सन्देह करना चाहिये ॥

## चेचक और लाल ज्वर ॥

मसूर के सदृश कठिन गोल दाना जो कि पहिले मुख पर प्रकट होता है,चेचक का दाना समझना चाहिये। असाध्य चेचक Malignant

में और प्रकार के भी दाने निकलते हैं । २४ घण्टे के भीतर ही लाल तप scarletina के सदृश लाल दाने निकल आते हैं, अन्तर यह है, कि लाल तप में कण्ठ शोथ होजाता है, गले और छाती पर पहिले दाने प्रकट होते हैं । और असाध्य चेचक के दाने निकलने के पश्चात् ही अति शीघ्र रुधिर स्राव होना आरम्भ होजाता है । चेहरा लाल, आंखें लाल और फूली हुई होती हैं । इन चिन्हों का विशेष ध्यान रखना चाहिये । क्योंकि यह कठिन अवस्था है । और शीघ्र ही चिकित्सा जो भी होसके करनी चाहिये । बहुधा कठोर रक्तज दाने जोकि घोर ज्वर के साथ प्रकट होते हैं, चेचक के ही होते हैं ॥

## चेचक और हुमीक़ा ॥

चेचक की एक छोटी किस्म हुमीका पीछे वर्णन होचुकी है । उसको अंग्रेजी में (Chicken-pox) चिकन पौक्स वा (Vericilla) वैरीसिल्ला कहते हैं ॥

पहिले इसे चेचक ही समझा जाता रहा है, परन्तु अब यह एक पृथक् रोग समझा जाता है । और टीका इस पर कुछ प्रभाव नहीं डालता, हलके प्रकार की चेचक और इसमें अन्तर करना कभी २ कठिन हो जाता है । हुमीक़ा का विशेष यह चिन्ह है; कि इसमें ज्वर थोड़ा होता है, और ज्वर के साथ ही ग्रीवा, पृष्ठ और वक्षस्थल पर कुछ लाल दाने निकल आते हैं । कभी ज्वर पीछे और कभी केवल १० वा २० घण्टे पूर्व भी होसकता है । इसके दाने को दबाने से ऐसा नहीं प्रतीत

होता है, कि वह गहरा है। इसके अन्दर साफ या दूध की रंगत की तरलता होती है। परन्तु चेचक में शिर और पीठ में पीड़ा और वमन होती है। दाने अधिकतर मुख, बाहु, और हाथों में होते हैं। और शरीर के मध्य भाग में कम, उसको बहुधा हंसनी खेलनी माता कहा जाता है। अर्थात् उसको माता ही माना जाता है। यह बहुत हलकी अर्थात् हंसते खेलते निकलती और हंसते खेलते ही दूर होजाती है॥

## शीतला और खसरा॥

शीतला की निदान खसरा से भी करते हैं। यदि भूल होजाय तो भी हानि नहीं होती। क्योंकि बहुत से वैद्य इन दोनों की चिकित्सा एक ही बताते हैं। और इनमें बहुत थोड़ा अन्तर करते हैं। खसरा को अंग्रेजी में मीजल्ज (Measles) कहते हैं। यह ज्वर के चौथे दिन के पश्चात् प्रकट होता है। बालों की जड़ों के समीप कुछ दाने होते हैं। खांसी, प्रतिश्याय (जुकाम) अवश्य होता है। और ज्वर बहुत घोर नहीं होता है॥

## शेखबूअली सीना की भी यही सम्मति है॥

कि शीतला और खसरा की एक चिकित्सा है। इन में बहुत कम अन्तर है। जैसा कि लिखा है:—

"हसबा एक प्रकार की पित्तज शीतला है। हिन्दी में उसको खसरा कहते हैं। शीतला और हसबा में प्रायः अवस्थाओं का कोई अन्तर नहीं है। केवल इतना भेद है कि खसरा में गर्मी

अधिक होती है । और इसके दाने छोटे अर्थात् त्वचा के ऊपर नहीं निकलते, और त्वचा ऐसी उभरी हुई नहीं होती कि जिस का कुछ ध्यान किया जावे. विशेषतः आरम्भ में खसरा त्वचा के ऊपर कम प्रतीत होता है । परन्तु शीतला के दाने आरम्भ में ऊंचे होते हैं । खसरा के दाने शीतला की अपेक्षा कम होते हैं । और आंख में खसरा शीतला की अपेक्षा बहुत कम निकलता है, शीतला और खसरा के प्रकट होने के चिन्ह लगभग एक से होते हैं, परन्तु उबकाई आना, जुकाम और खांसी खसरा में अधिक होते हैं, व्याकुलता और गर्मी अधिक और पृष्ठ व शिरःशूल कम होती है । शीतला में विकृत रक्त अधिक है, इसलिये यह बातें होती हैं । खसरा प्रायः एक बार ही निकल आता है । और शीतला थोड़ी२ निकलती है । जो रोगी के बचने के चिन्ह शीतला में हैं वही खसरा में हैं ॥

## शीतला और आतशक ॥

कभी आतशक के दाने भी एकदम फूटते हैं । घोर सन्निपात में भी कभी वैसे ही चिन्ह कि जैसे शीतला के प्रकट होने में होते हैं । त्वक्दाह में भी दाने निकलने आरम्भ होजाते हैं । यह सर्वथा पृथक् २ रोग हैं । और समझदार आंख कभी इन में भूल नहीं कर सकती । उपदंश में ज्वर आवश्यक नहीं है । और हो भी तो दानों से तीन दिन पूर्व नहीं होता, सन्निपात में जोड़ों में पीड़ा और उनका सूजना । त्वक्दाह में शीतला का विशेष चिन्ह नहीं होसकते हैं ॥

## शीतला और मोहारका ॥

कतिपय समय शीतला और मोहरिका में भी भ्रम होसकता है। मोहरिका ज्वर दो प्रकार का होता है। प्रथमः"तप मोहरिका हज़ियानी" जिसको अंग्रेजी में "टाईफस फीवर" और अरबी में में "हुम्मा मुताबिका मुतजाइदह" कहते हैं। यह बड़े घोरं रूप से दो सप्ताह तक निरन्तर चढ़ा रहता है। और उन्माद से प्रलाप भी रोगी करने लग जाता है, और शरीर पर भूरे और कुछ काल धब्बे वा बुख़ार प्रकट होते हैं॥

द्वितीयः—'तप मोहारिका इसहाली' जिसको अंग्रेजी में टाईफाइड फीवर और अरबी में 'हुम्मा मुताबिका मुतनाकिसा' कहते हैं। यह भी एक प्रकार का घोर संसर्गिकि ज्वर है, आंतों में घाव हो जाते हैं। दुर्गन्धयुक्त मल बहुत आने लगजाता है। और त्वचा पर गुलाबी रंग के मण्डल प्रकट होते हैं। यह २१ दिन तक चढ़ा रहता है। स्मरण रखना चाहिये, कि "तप मोहरिका इसहाली" में शरीर पर गुलाबी दाने दूसरे सप्ताह तक निकलते हैं। और धब्बे गुलाबी रंगत के होते हैं। और शीतला की नाईं इन में पीप आदि नहीं पड़ती। और यह अधिकतर छाती और पेट पर होते हैं। और ज्वर अत्यन्त तीव्र होता है। इसी प्रकार "मोह-रिका हजियानी" में भूरे और कुछ काले धब्बे निकलते हैं। जो मोटे शीतला के दानों के समान नहीं होते, हाथ पांओं और सिर में पीड़ा होती है। और धब्बे पांचवें वा छटे दिन निकलते हैं। दोनों के साथ ज्वर तीव्र होता है। धब्बे पहिले

छाती, उदर और मणिवन्ध पर प्रकट होतें हैं। प्रलाप और ज्वर का वेग बहुत होता है। हृल्लास, मतली, मुख का रक्त वर्ण होना, शिरोवेदना और ज्वर, इस का और शीतला का प्रायः मिलता है। अतः बड़ी बुद्धिमता से इनका भेद जान ले॥

"तप अफ़्नती" जिसको अंग्रेजी में ( septicaemia ) कहते हैं। इसमें शीतला का सन्देह होता है। यह एक प्रकार का घोर संसर्गिक ज्वर है। जो रक्त में पीप वा अन्य दूषित पदार्थ के प्रविष्ट होजाने से उत्पन्न होता है। इसकी घोर अवस्थाओं में आन्तरिक अंगों यथा फुप्फुस (फेफडा), यकृत (जिगर), प्लीहा, आंतों, जोड़ों, और अन्य स्थानों में बड़े २ व्रण होजाते हैं। वारम्बार शीत ज्वर होजाता है। और रोगी अत्यन्त दुर्बल होजाता है॥

सुर्खबाद में भी शीतला की शंका होसकती है। सुर्खबाद को युनानी में हुमरा और डाक्टरी में (Erysepelis) कहते हैं। यदि इसके चिन्ह स्मरण रक्खो कि प्रथम इस में कम्प युक्त हलका ज्वर होता है। फिर ज्वर बढता जाता है। यदि रोगी युवा हो तो प्रायः नकसीर फूटती है। और बालक हो तो हाथ पांओं में उद्वेष्टन होजाती है, दो दिन पीछे शरीर के किसी विशेष भाग की त्वचा में पीड़ा, दाह और वर्ण का रक्त हो जाना होता है। ढीली त्वचा हो तो शोथ अधिक होजाता है। उस शोथ और मसूर जैसी फिसी में कोई अन्तर नहीं कर सकता। सार यह

कि शीतला के विशेष चिन्हों को स्मरण रखकर अन्य रोगों से उसका निर्णय कर लेना चाहिये ॥

## चिकित्सा ॥

अब जबकि शीतला के कारण निदान आदि का सविस्तर वर्णन हमने कर दिया है, चिकित्सा की ओर ध्यान दिया जाता है। डाक्टरी, युनानी और वैद्यक तीनों प्रणालियों का इस चिकित्सा में वर्णन होगा। ताकि जिस प्रणाली से कोई चिकित्सा करनी चाहे वा जो प्राप्त हो सके उससे चिकित्सा कर सके, और हो सकता है, कि किसी स्थान पर मिलाकर भी काम चलाना पड़े। परन्तु औषधियों की अपेक्षा सावधानी इस में आवश्यक है, अतः प्रथम आवश्यक बातें लिखी जाती हैं॥

१.–रोगी को पृथक रखना चाहिये। कारण इसका यह है, कि बहुत ही संसर्गिक रोग है। वायु के द्वारा इस की छूत लगने के अतिरिक्त रोगी के वस्त्रों आदि के द्वारा कई वर्ष पीछे भी निरोग बालकों में छूत लग सकती है। रोगी की सेवा करने वाले और चिकित्सक भी इसको एक से दूसरे तक पहुंचाते हैं। अतः आवश्यक है, कि अपने घर के दूसरे बच्चों, और औरों के बच्चों की प्यारी जान और आरोग्यता के निमित्त बहुत सावधानी की जाय। भारतवर्ष में यह तो कठिन प्रतीत होता है, कि लोग बाहिर रोगी को लेकर छप्पर में रहें। यदि घरों में भी रहें, तो एक कमरा पृथक् होना चाहिये। और रोगी

के सेवक दो वा तीन नियत होने चाहिये कि जो बारी २ जावें। दूसरे बच्चों को इसके समीप भी न फटकने दें। रोगी की कुशल पूछने जो आयें घर के अन्य जन उससे बाहिर ही बातें करें। कमरा के द्वार पर दारचिकना के पानी वा मर्करी लोशन से भिगो कर चादर लटका देना चाहिये। और सुगन्धित पदार्थ बाहिर रखने चाहियें। हो सके तो सुगन्धित पदार्थ बाहिर जलाने चाहियें। ताकि रोगी के कमरे की दुर्गन्धि बाहिर न आवे। रोगी को थूक, मल मूत्रादि के लिये एक पात्र रखना चाहिये, और उसके समीप राख रखनी चाहिये। ताकि ऊपर डालदी जाया करे। कारबालिक ऐसिड पानी में घोल कर इसमें डाल रक्खें तो और भी अच्छा है। फिर एक मनुष्य इनको बाहिर लेजाकर भूमि में गाड़दे। वा ऐसे स्थान पर डाले; कि दूसरे बच्चों को छूत लगने का भय न रहे। रोगी के सेवक को चाहिये कि दो पोशाकें रक्खे। और बाहर के कमरे में आकर पहिले वस्त्र उतार कर नवीन पहिन ले। तब बाहिर जावे। परन्तु दूसरे बच्चों से फिर भी न मिले, बारी २ प्रत्येक सेवक इसी प्रकार आया करें॥

वैद्य और डाक्टर को चाहिये, कि अपने सुख के लिए दूसरे को हानि न पहुंचावें, प्रत्येक जब शीतला के रोगी को देखकर आवें तो हाथ भली भांन्ति फीनाइल के पानी वा मर्करी लोशन अर्थात् दारचिकना और नौशादर के पानी वा अमृतधारा के पानी से धोवें, वस्त्र बदलें और स्नान करे।

नहीं तो न्यून से न्यून शरीर के नग्न भाग तो अवश्य ही धोवें। और रोगी के पास बहुत देर तक बैठें भी नहीं। इस प्रकार उन सब नियमों पर चलना चाहिये जो कि संसर्गिक रोगों में होते हैं। सविस्तर वर्णन नहीं लिखा जा सकता। देखना हो तो रिसाला "प्लेग से बचाव" मूल्य ।≡)॥ अमृतधारा कार्य्यालय से मंगवा कर देखें। इसमें इसका सविस्तर वर्णन है, क्योंकि ताऊन भी एक संसर्गिक रोग है॥

एक बात और भी स्मरण रहे, कि रोगी जब स्वस्थ हो जावे तो उसको आरोग्यता का स्नान कराए विना औरों से न मिलने दें। और स्नान के समय इसके सारे शरीर और बालों को किसी रोगकीटाणु नाशक औषधि के साथ धोलें। जैसे कि $\frac{१}{०००२}$ की शक्ति का मर्करी लोशन पर्याप्त है॥

## रोगी का कमरा॥

यह तो स्पष्ट है कि रोगी का कमरा पृथक् होना चाहिये, अब यह प्रश्न है, कि इसमें प्रकाश और वायु का क्या प्रबन्ध होना चाहिए। डाक्टर लिखते हैं; कि रोगी को वायु और प्रकाश युक्त खुले कमरे में रखना चाहिए। हमारा विचार यह है, कि यह इनकी भूल है। शीतला के रोगी की चिकित्सा में कृत-कार्य्यता का बड़ा भारी भेद यह है, कि दाने स्वयं सुगमता से निकलें। इसके लिये आवश्यकता है, कि बाहर की शीतल वायु से बचाया जाय, नहीं तो भली भांति नहीं निकलते हैं।

यदि कमरा वायु युक्त होगा तो उसकी शीतलता रोम कूपों को खुलने न देगी। चाहे थोड़ी ही शीतल हो। परन्तु बाहर की शीतल वायु का प्रवेश न होगा, तो उष्णता के कारण रोम कूप खुलेंगे। और स्वेद आकर दाने सुगमता से निकलेंगे। कमरे की वायु को केवल इस अवस्था में शीतल करदेना चाहिए, जब कि गर्मी अत्यन्त बढगई हो। और रोगी को अत्यन्त व्याकुलता हो, अत्यन्त ज्वर हो और उसकी उष्णता कम न हो। और जिह्वा काली पड़ने लगे। और सब अवस्थाओं में कुछ गर्म और कुछ अवस्थाओं में मध्यवर्त्ती शीतोष्ण रखनी चाहिए। शुद्ध नवीन वायु के प्रवेश के निमित्त झरोखे, थोड़े खुले रक्खे जा सकते हैं। शीतल वायु के झोंके का तो डाक्टर भी निषेध करते हैं, और वस्तुतः यह विष तुल्य घातक है। प्रकाश के सम्बन्ध में हमारे लोगों में यह प्रसिद्ध है, कि सर्वथा रोगी को नहीं पहुंचना चाहिए। और इसी लिए अंधेरे कमरे में रक्खा जाता है। प्रकाश में रखना हलाहल विष समझा जाता है। और जहां तक हमने विचार किया है, वहां तक कोई युक्ति इसके विरुद्ध हमें प्रतीत नहीं होती है॥

पिछले वर्ष हमारे मुहल्ला में जब शीतला फैली तो मैंने इस विषय में सोचना आरम्भ किया। हमारे साथ के गृह में एक लड़की को शीतला निकली। अज्ञानता से उसको प्रकाश में रक्खा गया। वह सुन्दर गृह था जिसको शीशे लगे हुए थे। और प्रकाश बराबर पड़ता था। लड़की मरगई। इसके साथ के

घर में एक अन्य लड़की को निकला वह भी प्रकाश में रक्खी गई और वह भी मर गई। इस घर में फिर एक बालक इस रोग से ग्रस्त हुआ। उसको अत्यन्त अन्धकार में रक्खा गया, वह बच गया। इसके पश्चात् मेरे पुत्र को शीतला निकली, उसको भी हमने अन्धेरे में रक्खा। प्रकाश यद्यपि थोड़ा सा पड़ता था तो वह लाल होता था। ईश्वर की कृपा से वह भी स्वस्थ हुआ। उसके पश्चात् मुझे किसी को प्रकाश में देखने का अवसर नहीं मिला है। मैं नहीं कहता कि उपरोक्त दोनों रोगियों की मृत्यु केवल प्रकाश के कारण हुई परन्तु मुझे निश्चय है कि हमारी स्त्रियां इस विषय में सच्ची हैं, कि प्रकाश में रोगी को नहीं रखना चाहिये। हम लोगों को शीतला के सम्बन्ध में अधिक अनुसन्धान का अवसर ही नहीं मिल सकता है, क्योंकि चिकित्सा कराना ही बुरा समझते हैं। इस लिये साहस से कोई बात नहीं कही जासकती। परन्तु शरीर जब दुर्बल हुआ होता है, और आंखों में दाने निकले होते हैं, उस समय प्रकाश अवश्य कोई हानि करता होगी। मैंने किसी डाक्टर की युक्तियां इस विषय में नहीं पढ़ीं, न हीं वैद्यक वा युनानी की पुस्तकों में सविस्तर पढ़ी हैं। इसलिये मैंने लोकाचार को उत्तम समझ कर ऐसा लिखा है॥

## लवण॥

शीतला में लवण देना वर्जित है। कारण यह है, कि दानों को खाज अधिक होजाता है। इससे रोगी खुजलाता

है। चीचके पहिले उतर जाते हैं और कष्ट होता है। पुस्तकों में तो इसका भी वर्णन नहीं है। परन्तु प्रत्येक मनुष्य समझ सकता है, कि यह बात सर्वथा सत्य है॥

## दुग्ध॥

डाक्टर कहते हैं कि तृषा मिटाने के लिए दूध खूब देना चाहिए। उसके भी हम विरुद्ध हैं। ऐसी ही बातों से तो हम को निश्चय होता है, कि डाक्टरी ने अभी चिकित्सा में उन्नति नहीं की है। हमारी इसके विषय में यह सम्मति है, कि ४ वा ५ दिन और अधिक से अधिक ७ दिन तक दूध थोड़ा २ दिया जा सकता है। इसके पश्चात तो सर्वथा ही बन्द करना चाहिए। सातवें वा आठवें दिन दानों में पीप पड़ती है। अब यदि दूध जारी रहेगा, तो आवश्यक है, कि पीप चिरकाल में शुष्क होवे, और न जाने अधिक होकर कष्ट देवे। दूध अपनी स्निग्धता और शीतलता के कारण इस में सहायक है। यह देखा गया है, कि जिनको शीतला में दूध दिया जाता है उनके दाने चिरकाल तक रहे, और कतिपय समय उनमें से पीप चिरकाल तक बहती रही॥

## दही॥

दही के हम विरुद्ध नहीं हैं, उसका कारण यह है, कि प्रथम तो यह ज्वर की ऊष्मा को न्यून करता है, और दूसरे

आति तृषा को दूर करता है। मीठा दही इस में बड़ा गुणकारी है। इस पर यह शंका होसकती है कि यह शीतल है, परन्तु शीतल वस्तु का देना वर्जित है। यादि शीतला बहुत हलके प्रकार की हो, और गर्मी के लक्षण प्रकृति में पाए जाएं, तो इसको कम देना चाहिए। परन्तु जब ज्वर के वेग वा तृषा में ऐसी औषधियां देने की आवश्यकता होती है कि वह शांति भी दें और हानि न करें, दही इन में से एक है। जबकि हम वस्त्रादि से बाहर से ऊष्मा पहुंचा रहे हैं, और ज्वर का वेग, अशान्ति और तृषा और गर्मी की अधिकता है, तो भीतर कोई ऐसी औषधी देनी चाहिए जो इन सब को कम करती हो, इस कारण सब युनानी हकीम शीतला में शीतल और शुष्क औषधियों की अनुमति देते हैं। ऊष्मा अधिकतर बाहिर की पहुंचाई जावे। और अन्दर रोगी के शीतल और शुष्क वस्तुऐं देनी चाहियें। उष्ण औषधी आरम्भ में दीजाती है। घोर ज्वरों में जबकि गर्म औषधियां दीजाती हैं, तो दूध और चावलों का भोजन आवश्यक होता है॥

दही के खाने से प्रलाप और उद्वेग भी न्यून होजाता है। और हम यह भी कह सकते हैं, कि दानों के निकलने में भी कोई रुकावट नहीं है, कुष्ट के लिए एक औषधी है, जोकि हम पहिले दही में देते हैं, जिस से शरीर फूलता है। जब ऐसा होजावे

तो मक्खन में दी जाती है। इस मे अपनी प्राकृत अवस्था पर आता है। इस से भी हम परिणाम निकालते हैं, कि दही शीतला के दानों पर कुछ बुरा प्रभाव नहीं डालता। लोकाचार से ऐसा भी होजाता है, कि स्त्रियां बच्चे को दही जितना कि वह मांगे देती हैं जो ठीक नहीं। यद्यपि पुस्तकों में इसपर कहीं विवाद नहीं है, तथापि ऐसी प्रथा है, इसलिये हमने अपनी सम्मति लिख दी है॥ स्मरण रहे दूध की नाई घृत भी ७ दिन तक दिया जासकता है। इसके पश्चात् कम दें तो हानि नहीं है। इस से दानों को उस प्रकार की हानियां नहीं पहुंचती हैं॥

## जल॥

जल ऐसी वस्तु है, कि जिसकी शीतला के रोगी को हर समय आवश्यकता होती है। अति तृषा शीतला का एक चिन्ह आप पढ़ चुके हैं। उसको यदि न बुझाया जाय। तो प्रलाप आदि का भय है, क्योंकि अशान्ति और व्यथा आगे ही बहुत अधिक होती है॥

आप शीतल घड़े का पानी थोड़ा २ देते रहें। एकही वार बहुत सा न दें। यदि रोगी चाहे तो लैमोनेड, आरञ्जेड आदि थोड़ा २ पिला सकते हैं। मतली व वमन यदि होंगे उसको भी यह शमन करने में सहायक होंगे, परन्तु यदि रोगी की तृषा बढ़े तो सर्वथा न दें। जब तक दाने भले प्रकार दूर नहीं हुए। तृषा निवृत्ति के लिये दूध भी दिया जा सकता है। मूंग का

रस तृषा को बुझाता है । और ज्वर के वेग को भी कम करता है ॥

## आहार ॥

आहार के सबन्ध में बहुधा रिवाज यह हैं,कि रोगी जो मांगे दिया जाता है, लवण और दुग्ध को वर्जित करते हैं। यह ठीक नहीं है । यद्यपि यह सत्य है, कि यह ज्वर ऐसा नहीं है कि जिस में अन्य ज्वरों की नाईं पथ्यापथ्य की आवश्यकता है। यह स्वयं आता है, और स्वयं चला भी जाता है । परन्तु यह भी तो आवश्यक है कि कोई ऐसी वस्तु न दी जाय जो चिकित्सा सम्बन्धी नियमों के विरुद्ध हो । जैसा कि वर्णन हुआ है, दूध ६ दिन के पश्चात् ठीक नहीं । तैल की वस्तु अच्छी नहीं ऐसे भोजनों को वार्जित रक्खें जो गुरु और विष्टम्भी हों। तीक्ष्ण, अत्यम्ल पदार्थों को भी वर्जित रखना आवश्यक है। अति शीतल वस्तु भी नहीं खानी चाहिये । मल मूत्र के वेग को रोकना बहुत बुरा है । वैद्यक की एक पथ्यापथ्य निर्णय नामी पुस्तक में यूं लिखा है:—

## शीतला में निम्नलिखत बातें उचित है ।

प्रथम लंघन, फिर वमन वा विरेचन, रक्त स्राव (यह दाने निकलने से पहिले २ कर्त्तव्य हैं) श्वेत साठी और शाली चावलों के भात का खाना, चना, मूंग,मसूर,यव, परवल,करेला,आषाढ़ में उत्पन्न होने वाले फल,ककौड़ा, केला, सहंजना, सौंचरलवण, दाख, अनार, शुद्ध और बलकारक सब खाद्य और पेय पदार्थ

( तात्पर्य यह है अच्छे प्रकार के बल प्रद शीघ्र पचने वाले पदार्थ दें, यथा डाक्टर, आशजो, मांस रस, कुक्कटांड की ज़रदी, अराकूट इत्यादि देते हैं। यह सब विचार कर आज्ञा दें) जो मांस खाने वाले हैं। उनके लिये तोता, मैना आदि, चिड़ा, चकोर, कबूतर जल काक आदि की आज्ञा दी है। परन्तु वर्जित रक्खा जाय तो उत्तम है॥

हकीम अरज़ानी मुफर्रह उल्कुलूब में लिखते हैं:—

"शीतला और खसरा के रोगी के लिये भोजन और मांस रस के वर्णन में यूं लिखा है। शीतला में शीतल वस्तु जो कुछ शुष्क हो हितकर है। यथा यव वा मसूर के सत्तू खट्टे अनार के रस वा कच्चे सेब के रस वा रिवाज के पानी के रस के साथ, यदि प्रकृति शुष्क हो और छाती और कंठ के भीतर शुष्कता हो, परन्तु ज्वर बहुत अधिक न हो, तो विरेचन देकर गुलाबार्क के साथ यव के सत्तू देवें। और अम्ल पदार्थ न दें। और यदि अतिसार हो, और अत्यन्त उष्णता हो, और छाती और कंठ भी ऊपर की कठोर हो तो सत्तू को पुनः भून लें, और "कुर्सतबाशीर *" के साथ मिलाकर खावें और यदि अतिसार बहुत आवें तो तुष रहित यव, अनारदाना,

---

* कुर्सतबाशीर का योग यह है। वंशलोचन १ तोला। खुरफा-बीज भुने ३ माशा। गुलाबपुष्प २ माशा, बूरादा चन्दन सफेद, भूनी हुई कीकर की गूंद, निशास्ता भुना हुआ, शाह बलूत भुना हुआ, सत्वमुलेठी, चूके बीज भूने, जिरिशक, मुनक्का प्रत्येक ६ माशा, गुलनार अकाकिया (कीकर का साड़) प्रत्येक ३ माशा, सब को बारीक करके सेब या जिरिश्क, या बीही के रस में मिलाकर टिकियां बनालें, और सुखालें। मात्रा बालक के लिये २ माशा। जवान के लिये ४ माशा।

खशखाश के दाने सम भाग लेकर पानी में पीसकर गर्म करके यवागू बनावें और शनैः २ पिलावें। यदि कंठ में कठोरता न हो और अनिद्रा हो तो अनारदाना, उपरोक्त यवागू में डालना 'कुरस तबाशीर अफ्यूनी'*भी देना अवस्था के अनुकूल वैद्य की सम्मति पर निर्भर है। परन्तु यतः खसरा का मादा कम और हानि कारक अधिक होता है, और पित्त दग्ध रुधिर को नाश करता है, इसको जो कुछ दिया जावे शीतल और अम्ल हो, यथा यवागू और उसके भीतर खटाई भी मिलालें, यदि खांसी न आती हो तो। और तरबूज और कद्दू (घिया) का स्वरस गुणकारी है। इन में खटाई मिलाकर देना और औषधियां और आहार प्रत्येक देश में जो प्रचलित हों सो यथा योग्य देने चाहिये। दही की अपेक्षा युनानियों ने यव को अधिक प्रयोग किया है। सो युनानी हकीमों की यह सम्मति है कि शीतल रुक्ष आहार दिये जावें। मेरी सम्मति में जब ज्वर बड़े वेग का हो, यह चीजें उचित हैं। परन्तु साधारण अवस्थाओं में सर्दी ही सर्दी नहीं पहुंचानी चाहिये। प्रत्युत दोनों प्रकार के आहार देने चाहिये, और सर्दी अधिक नहीं लगने देनी चाहिये।

---

* कुरस तबाशीर अफ्यूनी इस से भी अच्छी समझी गई है। क्योंकि ज्वर को कम करने और अतिसार दूर करने के अतिरिक्त नींद भी लाती है। वह यह है :—वंशलोचन, गुलाबपुष्प, काहूबीज, खुर्फाबीज, कासनी, तन्तड़ीक प्रत्येक ३ माशा, गुलनार, श्वेत चन्दन, अहिफेनशुद्ध, प्रत्येक १ माशा, चूके का बीज ४ माशा, कर्पूर २ रत्ती, सब आदि के पानी में टिकिया बनावें। मात्रा बच्चे के लिये ½ माशा जवान ३ माशा तक। दो तीन बार दिन में दे सकते हैं॥

यहा मैं एक नुकता निवेदन कर देना चाहता हूं।

पहिले यह समझा जाता था कि शीतला के दाने जितनी अच्छी प्रकार निकाले जा सकें अच्छा है, परन्तु वर्तमान समय यह विचार है कि यत्न यह किया जाना चाहिए, कि दाने कम निकलें, और कष्ट कम हो, दाने बहुत गहरे न हों, ताकि कुरूप चिन्ह शेष रह कर सौन्दर्य का सत्यानाश न करें।

सौन्दर्य जैसी वस्तु को स्थिर रखने के लिए जितना भी यत्न हो थोड़ा है। जैसे कि इस रोग की चिकित्सा विधि में यह वर्णन किया जाता है, कि दाने कम निकलें। परन्तु जो निकलें निर्विघ्न अच्छे हों। और उन में अधिक पीप न पड़े, रोगी की शक्ति का ध्यान रक्खें, और व्याधियों की चिकित्सा नियम पूर्वक करें। डाक्टर लोई कोहनी और अन्य प्राकृतिक चिकित्सा कर्त्ताओं का कथन है, कि शीतला भी अन्य ज्वरों की भान्ति संचित विकृत दोषों को निकालने के निमित्त होती है, और पूरी आरोग्यता यही है, कि विकृत दोष सर्वथा निकल जावें, ताकि फिर कभी आक्रमण न करें। हमें भी यह अच्छा प्रतीत होता है, परन्तु विलायत में सौन्दर्य का इतना ध्यान रक्खा जाता है, कि जो कुछ मानुषी शक्ति से बन पड़े करते हैं। मैं दन्त चिकित्सा पर एक पुस्तक पढ़ रहा था, मैं हैरान था कि अगले दन्तों की थोड़ी सी कुरूपता के कारण दो तीन दाढ़ों के निकालने की आवश्यकता पड़े तो डाक्टर लोग आज्ञा दे देते हैं। सब दन्त साज़ी का सार सौन्दर्य को स्थिर रखना है।

इस बात को ध्यान में रखकर डाक्टर लोग यत्न करते हैं, कि मुख पर दाने जहां तक सम्भव हो कम निकलें। परन्तु इस में यह

भय हो सकता है कि दाने जो निकलते हैं पूर्णतया न निकलें। हमारी सम्मति तो यही है, कि दानों को निकलने देना चाहिए। आहार न अति शीतल और न अति उष्ण चाहिए। यदि ज्वर बहुत अधिक हो तो सर्द और साधारण हो तो मध्यवर्त्ती अर्थात न बहुत सर्द और न बहुत गर्म भोजन चाहिए। यवागू, दही सागूदाना आदि वा जो बालक मांगे दें॥

## मेघ की गर्ज और बिजली की चमक।

मेघ की गर्ज और विद्युत की चमक से बहुत बचाया जाता है। विद्युत की चमक दाने पर प्रभाव डालती है, इस में कोई संशय नहीं है। मुझे एक घटना स्मरण है, कि रोगी बालक पर विद्युत की चमक पड़ी थी और वह तुरन्त अचेत हो गया, और उसकी दशा मन्द हो गई। जैसा कि मैं पीछे वर्णन कर चुका हूं, इस में कुछ रहस्य प्रतीत होता है। और जबतक बड़े २ तजरुबा के पश्चात् इस के विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं मिलता, हम को इसी के अनुसार कार्य्य करना चाहिए। मेघ की गर्जना जब हो तो अन्य शब्द पीपे आदि का करते हैं। और विद्युत की चमक से रक्षा तो स्वयं ही हो गई जब कि पृथक् अन्धेरे कमरे में रक्खा जाता है। स्त्रियां ऐसे रोदन शब्द को जो शीतला से मृत्यु के कारण हो, बालक तक पहुंचने नहीं देतीं। और उस को भी ऐसा ही बुरा कहती हैं, इसका कारण कोई हम को प्रतीत नहीं होता है, सब रोने के शब्द बुरे होने चाहियें॥

## वस्त्र।

शीतला के रोगी के वस्त्र कैसे होने चाहिये? यह बात भी कम वर्णनीय नहीं है। युनानी पुस्तक मुफरह उल्कुलूब में लिखा है—

"उचित है कि दाने प्रकट होने के समय रोगी को उष्ण और कोमल वस्त्र पहिनावें और घर की वायु सामान्य ( मोतदिल ) करें तो रोम कूप खुल जावें, और किंचित्मात्र स्वेद आवे और दाने सुगमता से निकलें" पुनः एक स्थान पर लिखा है, "परन्तु जिस समय इन ज्वरों में वस्त्र धारण से गर्मी अधिक हो निर्बलता हो, मूर्च्छा हो, तो चाहिये कि घर की वायु ठंडी करें और शीतल सुगंधियां सुंघावें। नाक के समीप पंखा हिलावें परन्तु शरीर को छिपाए रखें, कि वायु की शीत शरीर में न पहुंचे। परन्तु बारह आदि सुगंधियों के सुंघाने से शान्ति हो और हृदय को सर्दी पहुंचाने की अत्यन्तावश्यकता हो, तब उचित है कि कभी २ इस का वस्त्र छाती और हृदय के स्थान से हलका करें ताकि प्रसन्नता लाभ करें। परन्तु सावधान रहें, कि वायु की शीत हृदय के अतिरिक्त शरीर के और किसी भाग में न पहुंचे। जब छाले निकल चुके हों, पर अशान्ति, उष्णता और ज्वर न्यून न हुआ हो, और जिह्वा काली हुई हो। तो उस समय शरीर को उष्ण रखना ठीक नहीं। प्रत्युत कुच्छ शीत पहुंचाई जा सकती है"॥

इस पर ननुनच की आवश्यकता नहीं। स्पष्ट है कि शीतला में गर्मी और ज्वर के आधिक्य के होते हुए भी शरीर को गर्म रखना इस लिये आवश्यक है, कि रोम कूप खुले रहें। और दाने निकलने बन्द न हो जावें। उस समय पर्यन्त कि जब तक दाने भली भान्ति प्रकट न हो जावें, शरीर पर कोमल और उष्ण वस्त्र रखने चाहियें। और जैसा कि पीछे वर्णन

हुआ है कि रक्त वस्त्र दानों के निकालने में सहायक होता है। इस लिये हम कोमल उष्ण और रक्त वस्त्र होने की व्यवस्था देते हैं, कोमल होने की आवश्यकता भी निस्संदेह इसी कारण है कि कोमल दाने सारे शरीर पर होते हैं। लाल फलालैन भी इसी हेतु अच्छी प्रतीत होती है॥ शरीर को शीतल वायु से शीत काल में तो विशेषतः सुरक्षित रखना चाहिये। यद्यपि लाल रज़ाई भी काम देती है, जो कि कोमल वस्त्र की बनी हो। परन्तु फलालैन भी कम लाभदायक नहीं, जो कि कोमल उष्ण और रक्त है। नीचे ऊपर दोनों के लिये यही रखें। ग्रीष्म ऋतु में यदि उष्णता अधिक हो तो शरीर को ढांपे रखना तो आवश्यक है, परन्तु फलालैन के स्थान में दूसरा कोई रक्त वस्त्र यथा फुलकारी आदि काम दे सकती है। एक बात और स्मरण रखने वाली है कि शरीर पर वस्त्र पाजामा, कुरता, सदरी, कोट आदि नहीं होने चाहियें। इन को तो उतारने पहिनने में भी शरीर को कष्ट पहुंचता है। और इन को बान्धना और भी बुरा है। सो एक ही लंबा सा वस्त्र चाहिये कि जिस से शरीर ढांपा रहे वा एक लंबा ढीला कुरता। मुख के ढांपने की आवश्यकता ही नहीं। यदि उष्णता और अशान्ति अधिक हो, तो हृदय का स्थान नग्न करदें। और वायु कमरे की शीतल करदें। पर वस्त्र अवश्य रखें ताकि दाने भली भान्ति निकल आवें। दाने निकलने के पश्चात् यद्यपि शरीर को शीत पहुंचाना बुरा है परन्तु उष्णता, अशान्ति और घोर

ज्वर के समय फिर जब कि वस्त्र की आवश्यकता नहीं रहती है इस नियम के अनुसार प्रत्येक अवस्था में क्या करना चाहिये। यह बुद्धिमान भली भान्ति समझ सकते हैं। कोई बड़ा तत्व वेत्ता होने की आवश्यकता नहीं है॥

## चिकित्सा जो प्रचलित है॥

शीतला के दिनों में जब ज्वर बालक में प्रकट हो और उसके साथ भय आदि चिन्ह विद्यमान हों तो शंका की जाती है। तीसरे दिवस मुख पर रक्त दाने थोड़े भी प्रकट हों तो एक दो बृद्धा स्त्रियों को दिखाती हैं। वह जब कहदें कि माता रानी ही विराजमान हो रही है, तो उस समय मुनक्का में डालकर केशर की दो तीन तुरियां दी जाती हैं।

यदि बच्चा खाने में असमर्थ है तो यूंही केशर की एक तुरी मिष्ट पदार्थ में देदेते हैं। उस समय से कहती हैं कि अब माता का नाम रक्खा गया है। मानों तब से ही शीतला के संबन्ध में सावधानता आरम्भ होजाती है। उससे पहिले कुछ सावधानता नहीं की जाती। रोगी को एक पृथक अन्धेरे कमरे में लेजाती हैं। माता की भेंटें गाती हैं। ओषधियां केवल मुनक्का, केशर और मोती अनविद्धे दी जाती हैं। खाने को लवण के अतिरिक्त और जो कुछ मांगे, दिया जाता है। और दूध सात दिन, पर्य्यन्त देती हैं।

इस के पश्चात् घृत दुग्ध सर्वथा वर्जित रखती हैं हां घी थोड़ा सा दिया जाता है। रक्त वस्त्र बच्चे के शरीर पर रखा जाता है। इसको हर प्रकार से संतुष्ट किया जाता है। माता का

गर्दभ ( गधा ) इसको पुकारा जाता है । माता का गधा यह कहता है और माता का गधा यह मांगता है । सातवीं वा अठवीं रात्री को जब के दानों में स्थित मल ने पीप में परिवर्तित होना है अत्यन्त अशान्ति, ज्वर और निद्राभाव होता है। और लगभग सारी रात्री भेंटें गाती रहती हैं । उबले हुए चने और अन्य ऐसी ही वस्तु सिरहाने रखती हैं । इसरात्री कहती हैं कि आज माता प्रविष्ट होकर अब केशर अपने गधे पर छिड़केगी । कई तो कहा करते हैं कि कोई द्वार बन्द न करना । प्रातः उठकर देखती हैं कि सब दाने और आस पास की त्वचा पीली हुई होती है। क्योंकि पीप पड़ जाती है । तब कहती हैं कि माता कंगू ( कुंकम ) छिड़क गई. माता के चने और अन्य वस्तु बाहर माता के स्थान पर लेजाती हैं। लौटते हुए गधे की लीद ले आती हैं। और गोमूत्र और गधे की लीद की धूनी दी जाती है। और गो मूत्र दानों पर लगाया जाता है। और जब तक खुरंड बनकर उतर न जाएं, यही चिकित्सा होती रहती है, जोकि अच्छी है । पीप बनने की रात्री यदि सकुशल व्यतीत हो जावे तो ( प्राणों की ) रक्षा समझी जाती है । जब खरिंड उतर जाता है तो बच्चे को प्रथम माता के स्थान पर लेजाकर कुछ पूजन करती हैं। और इस दिन से बच्चे को फिरने की आज्ञा होजाती है । इसके पश्चात् अब हम

## पुस्तक लिखित चिकित्सा का वर्णन करते हैं ।

उस समय जब कि दाने तो नहीं निकले पर चिन्हों से यह पता लग जावे, कि यह शीतला का ज्वर है । तो यूनानी हकीमों का कथन है कि रक्तमोचन ( फ़सद ) करना चाहिये वा जोंक

लगवाना चाहिये,हम एक प्रामाणिक पुस्तक (किताबे कानून) के शब्द नीचे उद्धृत करते हैं। "शीतला की चिकित्सा में पुष्कल रक्त निकलवाना चाहिये। परन्तु केवल तब ही जब कि कोई विशेष हेतु इस के विरुद्ध न हो। रुधिर निकलवाने का समय चौथे दिवस पर्य्यन्त है। क्योंकि जब दाने निकल आवें तब रक्त मोचन वर्जित है। इस के पश्चात् तो रुधिर केवल उस अवस्था में निकलवाना चाहिये जबकि विकृत मवाद (मादा) का प्राबल्य बहुत हो और दाने बहुत ही भरे हों, वैद्य आवश्यक समझे। परन्तु फिर भी थोड़ासा रुधिर जोकि विकृत मवाद के प्राबल्य को कम करे लेना ( निकलवाना ) चाहिये। रक्तमोचन इस रोग में अतीव लाभदायक है। विशेषतः यदि नाक की नाड़ी को खोला जावे तो नकसीर को लाभ होता है। वा नकसीर स्वयं आजावे तो जब तक रुधिर शुद्ध न आवे बन्द न करनी चाहिये।

( प्रकृति उस विकृत मादे का निस्सरण करा रही है इस से दाने न्यून निकलेंगे ) और ऊपर के अंगों का हानि से बचाव होजावेगा और बालकों के वास्ते इसमें सुगमता होती है. यदि ज्वर का उद्वेग बहुत हो और रुधिर भली भान्ति निकलवाया न जाय तो शरीर में किसी स्थान पर वह घोर रूप से अवश्य प्रकट होगा ( हैमोरेज चीचक शायद इसी कारण होती है ) अपिच, यदि कोई मनुष्य नित्य अपनी उष्मा को शीतल वस्तुओं से बुझाता रहता है उसको शीतलाज्वर हुआ है तो यदि रक्तमोचन किया जावे तो सुत्र शरीर की किसी ओर होजाने का भय है"। सज्जनो ! तुलना कीजिये— इसकी अंग्रेजी चिकित्सा से जो यह है कि ज्वर के वेग को कम

करने के लिये रोगी के शरीर को शीतल जल तथा मंदोष्ण जल से स्पञ्ज करें, क्या इस से रुधिर के गुरु और शीतल होने से विकृत दोषों के निःसरण में कष्ट न होगा ? हम तो इसके विरुद्ध हैं। रक्त मोचन इस लिये उत्तम है कि प्रकृति को सहायक है । परन्तु यह भी नहीं करना चाहिये, यदि रोगी दुर्बल हो वा अत्यन्त गर्मी हो, जिसका चिन्ह यह है कि मुख का स्वाद कड़वा हो, आंखें पीली हों, मूत्र अग्निवर्ण का हो, इस अवस्था में रुधिर का निकलना वर्जित समझें। क्योंकि हानि करता है । इस अवस्था में प्रथम हलका सा विरेचन देकर प्रकृति को नर्म करें, और शान्ति स्थापन में लग जाएं । यथा यह योग (नुसखा) देना :—

गुल नीलोफर, गुल बनफशा, सौंफ, शाहतरा प्रत्येक चार २ माशा, उनाब ७ दाने आध सेर पानी में २ चार घंटे भिगो दें, फिर मल छान कर शर्बत नीलोफर डाल कर खाकसी अर्थात् खूबकलां धुली हुई ५ माशा फका कर ऊपर से उसको पिलावें, यदि शीत ऋतु हो, तो उपरोक्त वस्तुओं में मुलैठी ३ माशा, अजमोद ६ माशा, अधिक डालें । खाकसी अर्थात् खूबकलां ज्वर और शीतला दोनों के वास्ते गुणकारी है । चुनांचे जब ज्वर हो और चीचक की शंका हो, तो इसको देते हैं । यदि शीतला हुई, तो भी उत्तम, न हुई तो भी उत्तम । उपरोक्त योग के साथ इसी वास्ते खूबकलां दीगई है । परन्तु स्मरण रहे कि देने से पूर्व खूबकलां पानी से धो लेनी चाहिये ॥

# अवश्य वक्तव्यः—

नुसखों में मात्रा जवान की लिखी जारही है । आयु के अनुसार कम कर लिया करें । इस अवस्था में अर्थात् जबकि अभी तक दाने नहीं निकले भोजन इस प्रकार का देना चाहिये कि जो पुष्टि कारक हो, गर्मी को कम करे, और विकृत मुवाद को निकलने के लिये प्रेरित करे, और कबज़ ( कोष्टबद्धता ) न करे, प्रत्युत सारक हो, जो कि केवल खुलकर मलोत्सर्ग करावे, न कि विरेचन करदे । शेख लिखता है । "कि इस अवस्था में कबज़ निवारक वस्तुओं में से इमली सर्वोत्तम है, यदि केवल इमली से शौच न हो, तो शीरखिश्त अधिक करें । पर चाहे शीरखश्त मिलावें, वा आलू बुखारा वा तरञ्जबीन, इस बात का ध्यान रहे, कि दस्त न आवें । केवल प्रकृति नर्म होजाए" । और हम अपनी ओर से इतना विशेष कहें कि यह अत्यन्त गर्मी में ही थोड़ा दें, और केवल उस समय जबकि प्रकृति ( तबीयत ) को नर्म करने की आवश्यकता हो, अन्यथा कदापि प्रयोग में न लावें । क्योंकि शीतल वस्तु रुधिर को गाढ़ा करती हैं । और तबीयत भी उस समय यह चाहती है, कि अधिक ( अशुद्ध ) मुवाद को शरीर से निकाले, शीतल वस्तुओं से रुधिर का जोश ( उद्वेग ) कम होजावेगा, जोकि तबीयत की घबराहट का कारण होगा । जब पित्त प्रबल हो, तो शीतल सारक वस्तु दें । क्योंकि इसके विना निर्वाह नहीं होता । तृषा निवृत्ति के लिये लैमोनेड वा आरञ्जेड का शीतल जल पिलावें । डाक्टर लिखते हैं कि यदि उस समय ज्वर के

साथ अचेतता तथा प्रलाप भी विद्यमान हो, तो यह योग दें:—

ऐमोनिया कारब ५ ग्रेन, पोटासी कारब १५ ग्रेन, लाइकर ऐमोनिया ऐसिटेप२०बून्द। इन दवाइयों को एकत्र मिलादें और ऐसिड साईट्रिक १५ ग्रेन, जल १ औंस यह पृथक् मिलावें। जब पिलाना हो दोनों को मिलादें, जोश उठेगा उस समय पिलावें। इस प्रकार दिन में दो चार बार दें तो उत्तम है॥

मैं फिर एक बार नोट करदूं कि नुसखों में मात्रा बड़ों के लिये लिखी जाती है, बच्चों के लिये चौथाई वा अर्धभाग आयु के अनुसार कर लेना।

इस प्रकार से जब ज्वर की प्रथमावस्था के दो दिन पूरे हो जावें, तो तीसरे दिन दाने निकलने आरम्भ हो जाते हैं, जिसके सम्बन्ध में युनानी पुस्तक "कानून" में लिखा है:—

"यदि प्रतीत हो जावे, कि रोग लंबा हो जावेगा। और दूसरा दिन व्यतीत हो जावे, और शीतला प्रकट होने लग जावे। उस समय अधिक शीतल वस्तुओं का प्रयोग बहुत बुरा है। क्योंकि सर्दी से मादा (रुधिरादि विकृत दोषधातु) गाढ़ा होकर अन्दर रुक जाता है। और जब वह प्रकट होता है, तो वह प्रधान अंगों पर बल डालता है कि, जिस से अशान्ति होती है और कभी मोह (बेहोशी) भी प्रकट होती है"॥

हकीम अरज़ानी भी यही लिखता है, कि "जिस समय दानों का कोई प्रभाव शरीर पर हो, तो प्रकृति को नर्म करके मादा को निकालने वाली, सर्दी पहुंचाने वाली, और रुधिर को गाढ़ा करने वाली वस्तुओं को वर्जित रक्खें"॥

जब से दाने शरीर पर प्रकट होने लगें, रुधिर निकालना निषिद्ध है। परन्तु चीचक मोहलक (मैलिग्नैन्ट समालपाक्स) वा चीचक दमवी (हमवोरेजक समालपाक्स) में कि जिन में दूसरे तीसरे दिन ही त्वचा के नीचे रुधिर बहना आरम्भ हो जाता है। थोड़ा सा रक्तमोचन इस रुधिर को कमया बन्द कर सक्ता है। जैसे कि लिखा भी है—"और रुधिर अत्यन्त प्रबल हो और भय हो, कि कोई आपत्ति लावेगा। तो दानों के निकले हुए होने पर भी थोड़ा सा निकाला जा सक्ता है। और परीक्षा में आया है, कि उस समय जबकि यथोचित रुधिर लिया गया, शरीर में हलका पन प्रकट हुआ और रोग शान्ति से समाप्त हुआ"।

शेख लिखता है "कि दानों के निकलने के पश्चात् मादा की सहायता ऐसी औषधियों से करनी चाहियें, जो जोश को अधिक करें। और बन्धी हुई विकृत धातु के मुंहे खोलदें, ताकि तबीयत अशुद्ध मादों को भली प्रकार निकालदे। जैसेकि सौंफ वा क़फ़स वा दोनों के पत्तों को कूट कर और निचोड़ कर उस में शक्कर मिलाकर दें, दो दो तोला कुछ बार, वा सौंफ क़फ़स आदि का काढा (क्वाथ)। कभी थोड़ा सा केसर (२ चावल) भी मिलाते हैं। और अंजीर का पानी बहुत उत्तम है, क्योंकि अंजीर में मादा को बाहर निकालने की शक्ति बहुत होती है। और मादा का बाहिर निकालना रोग से मुक्त होने का एक मात्र कारण है। ऐसे समय में निम्नलिखित औषधी भी गुणकारी है:—

रोई लाख ४ तोला, छिलका उतरी दाल मसूर २० माशा, कतीरा ९ माशा पाव भर पानी में जोश दें, जब आधा रहे, उतार कर मल छान कर पिलावें।

निम्नलिखित औषधि भी मादा के निकालने में सहायाता करती है:—

अंजीर जरद ७ दाने, दाल मसूर छिलका उतार कर १ माशा, कतीरा, सौंफ प्रत्येक ६ माशा आध पाव पानी में जोश दें, जब तृतीयांश शेष रह जाय, तो मल छान कर पिलावें।

ऐसे समय में तेल रोगी के समीप भी नहीं लेजाना चाहिये। और वस्त्र ओढाने चाहियें, ताकि रोमकूप खुलें, और शीतल वायु से विशेष कर जाड़ों में बचाना चाहिये। और हर समय रोगी की इस प्रकार रक्षा करनी चाहिए, जिस प्रकार कि पसीना निकालने के समय की जाती है। क्योंकि सर्दी से रोमकूप बन्द होजाते हैं। और जो अशुद्ध मल निकलने को होते हैं, भीतर की ओर पलट जाते हैं। बरफ से ठंडा किया हुआ पानी पीना और खेश में प्रविष्ट करना (अर्थात् ऐसे गृह में रखना कि खस आदि की टट्टियां और पर्दे लगाकर उसकी वायु को शीतल किया गया हो) बहुत बुरा है। यदि किसी कारण, चाहे ओढाने आदि की गर्मी से मोह सदृश अवस्था प्रकट हो, वा अचेतती हो जाती हो, तो उस समय भी केवल उस वायु को शीतल करना चाहिए, जो नासिका द्वारा मस्तिष्क तक पहुंचती है, (जैसे कि पंखा पर गुलाब, कपूर, चन्दन लगाकर नाक के समीप वायु करना। वा धनिया, चन्दन कपूर, अर्क गुलाब में पीस कर बोतल में रखना, और कभी २ लखलखा के समान सुंघाना)। यदि गर्मी बढ़ती जावे और जिह्वा की कालिमा (स्याही) भी अधिक ही अधिक होती जावे। और गर्मी पहुंचाने से तबीयत अधिक अचेतता की ओर झुकती

जावे। और लखलखा का सूंघना भी पर्य्याप्त न हो। तो उस समय कपड़ा हृदय से दूर करना और कमरे की वायु शीतल करना आवश्यक हो जाता है। सो उचित सीमा तक सर्दी पहुंचानी चाहिये।"

इसके साथ ही मुकर्रह उल्कुलूब की यह आज्ञा भी स्मरण रखें "शीतल जल घूंट २ देते रहें। और चन्दन और कर्पूर सुंघावें। तो हृदय और मस्तिष्क को पुष्टि दे। और मादे को बाहिर निकालने में सहायता दे। यदि देखे कि मादा गाढ़ा है और रोम कूप कुछ बन्द हैं। तो उचित, है कि मादे को नर्म करे, और रोम कूप खोलें। और मादा के गाढ़े होने का चिन्ह यह है कि, दाने छाती और इसके आस पास बहुत निकलें। और रोम कूपों के कम खुलने का चिन्ह यह है, कि त्वचा खर्खरी हो और स्वेद काम आवे।

"और मादे को नर्म करने और रोम कूपों को खोलने का यत्न करते समय रोगी की ऊष्मा ( गर्मी ) का अवश्य ध्यान रक्खें। और इसके अनुसार चिकित्सा करें, यथा—यदि नाड़ी और श्वास अपनी वास्तविक अवस्था में है। और अचेतता, अत्यन्त गर्मी और दुःख (शोक) शरीर में नहीं है। जिह्वा काली नहीं हुई,तो चाहिये, कि घर की वायु गर्म करें। और शीतल जल न दें, प्रत्युत ताजा घूंट २ और कभी गर्म का ही घूंट वा सौंफ का पानी दें, और कोई वस्तु न दें और न ही सुंघावें ( और वह औषधियां दें, जोकि कानून की लिखी हुई लाख वा अंजीर जरद वाली ऊपर लिखी जा चुकी हैं) या यह काढ़ा दें:—

लाख धोई हुई १ तोला, मसूर छिले हुये २० माशा, कतीरा ९ माशा, फूलबनफशा ६ माशा, अंजीर ज़रद ७ दाने, सौंफ

६ माशा, दाख मुनक्का १० दाने, तीन पाव पानी में काढें। जब पाव भर पानी रहे। तो मल छान कर पिलावें। यदि अचेतता, अत्यन्त गर्मी और जिह्वा की कालिमा प्रकट हो, तो ऊष्ण वस्तुओं को बन्द करदेना चाहिये। और शीतल जल दें। और शीतल वस्तु सुंघावें। और रोम कूपों के खोलने के लिये ऊष्ण जल की भाफ करना (केवल तब ही जब कि अशान्ति और शीतता न करे) गुणकारी है। और इससे भी अधिक ऊष्णता हो, तो घर की वायु को ठंडा करना और शीतल सुगंधियों का सुंघाना, और जब शान्ति की अत्यन्तावश्यकता हो, तो उस समय हृदय को शीतल करना उचित है कभी २ वस्त्र उसका छाती और हृदय के स्थान से हलका करें। तो शान्ति प्राप्त करे, परन्तु सावधान रहे, तो वायु की शीत उस स्थान के अतिरिक्त अन्य स्थान में न पहुंचे" ॥

केसर और मुनक्का का खिलाना भी इस अवस्था में लाभकारी है। क्योंकि वह भी मादा को अति शीघ्र निकालता है। थोड़ा २ सा प्रातः और सायं काल को देसकते हैं। यदि अत्यन्तावश्यकता हो, तो उसके स्थान में दो चार दाने अनविद्ध मोती के देवें। मुनक्का में लपेटकर निगलवा दिया। छोटा बच्चा हो, तो पीसकर देवें ॥

कतिपय वैद्यों की सम्मति है, कि पीने के लिए इस अवस्था में अर्क क्योड़ा अत्यन्त ही लाभकारी है। क्योंकि मल के निकालने में सहायक है। और हृदय को पुष्टि देता है। और गर्मी को कम करता है। मेरी सम्मति में अर्क क्योड़ा और अर्क सौंफ मिलाकर घूंट २ दे सकते हैं। और कभी यह पानी।

इस प्रयोजन के लिए जो एक नुसखा अर्क क्योड़ा का है जो कि अत्यन्त लाभकारी है। और इस रोग के आरम्भ से ही पिया जा सकता है। शक्ति इसकी बहुत अधिक है। शरबत क्योड़ा के कई नुसखे हैं परन्तु शेखुउल रईस ने जो सब से उत्तम लिखा है, वह हम यहां उद्धृत करते हैं:—

## अर्क क्योड़ा की निमार्ण विधि।

यह अर्क क्योड़ा शीतला, खसरा, सुर्ख बादा, और रुधिर सम्बन्धी सर्व रोगों के लिये लाभकारी और यकृत और आमाशय की दाह (गर्मी) को दूर करने और प्यास बुझाने के लिए गुणकारी है और हृद्य है॥

विधिः—लकड़ी क्योड़ा की साबत लेकर उसको तराशें, और उसका बूरा लेकर बारीक पीसें, इस से अर्धभाग श्वेत चन्दन का बूरा डालें। और सिरका अंगूरी वा खालिस अंगूर के निचोड़े हुए जल में तीन दिन भिगोवें, सिरका अंगूर का जल जितना भी अधिक हो उत्तम है। तीन दिन के पश्चात नर्म आग पर पकावें। ताकि लकड़ी क्योड़ा की गलजावे, मलछानकर निचोड़ें, गाढ़ा होगा। यह दो भाग लें, फिर खट्टी छाछ लेकर दही इस से पृथक करें, चाहे गर्म करके दही तोड़े वा पानी उसका निथार लें, तात्पर्य यह है, कि दही का पानी बिलकुल साफ आवे। और इस में जौ का आटा प्रविष्ट करें, और मलकर धूप में रखें। जब तक कि इस में खटाई आजावे, फिर इस से पानी निथार लें। फिर और जौ का आटा मिलाकर खट्टा करके निथारें, जितनी वार अधिक इस क्रिया

को करेगें। उतना ही लाभ होगा। इस पानी के पांच भाग कर लेवें, फिर अमरूद, खट्टा विही, खट्टा अनार, खट्टा सेब, जंगली सेब, निम्बू, खट्टा आलूबुखारा, खजूर का फूल, नकछिकनी कच्चा तूत, और खट्टी कच्ची खोबानी, इन सब का जल और अंगूर, रीवास, कोपल अंगूर, फूल गुलाब, नीलोफर और बनफशा इन में से प्रत्येक का निचोड़ तीन २ भाग, बिजोरा और नारंज का निचोड़ प्रत्येक $\frac{2}{3}$ भाग, और धनिया, काहू, पत्र खशखाश सबज, पत्र कासनी, और पत्र खुर्फा, इन सब का निचोड़ प्रत्येक $\frac{1}{4}$ भाग, और बेद, सेब, अमरूद, जङ्गली सेब, गुलाब, पत्र लाल साग इन सब के पत्तों का निचोड़, फूल गुलाब खुश्क, गुल नीलोफर खुश्क, ज़रिश्क खुश्क का निचोड़, तुख्म कासनी, तुख्म काहू, गुलनार, तुख्म नीलोफर तुख्म फूल गुलाब प्रत्येक $\frac{1}{2}$ भाग, पोदीनी तर का $\frac{1}{6}$ भाग, जरिश्क तर का निचोड़ $\frac{1}{2}$ हिस्सा, इन सब ओषधियों को मिलाकर आग्न पर रखें। और मसूर ४ भाग, और छिलका उतारे हुए जौ २ भाग, समाक़ (तिंतड़ीक) ३ भाग, दाना अनार ३ भाग डालकर पकावें। जब तक कि सारा पानी आधा रहे। तत्पश्चात् उतार कर, मल छानकर तोलें और इस पानी में प्रतिसेर ४ माशा कर्पूर सूक्ष्म पीसकर पात्रों के पैंदे में छिड़कें। और इस के ऊपर उक्त ओषधि धीरे से डालें। और इसका मुख बन्द करदें ताकि वाष्प बाहिर न निकल सके। आग पर चढ़ादें, और जब प्रतीत हो, कि एक उबाल आगया होगा। उतार कर भली भान्ति हिलादें और मर्तबान में डालकर बन्द करके

रखें। कतिपय लोग इस औषधि में थोड़ा बालछड़, सोंठ और सौंफ, अफीम, काली मिरच और नागरमोथा डालते हैं, जोकि अच्छा है। मात्रा इसकी लगभग ३ तोला के है। यह एक प्रकार की मद्य रहित अत्युत्तम मद्य समझनी चाहिये। शीतला के वास्ते इससे बढ़कर बहुत थोड़ी औषधियां हैं। और बराबर जारी रक्खी जा सकती हैं। अर्थात् जब दाने निकलने आरंभ हों तो उपरोक्त सब नियमों का ध्यान में रखकर इनके भली भान्ति निकलने का यत्न करना चाहिये। मादे और तबीयत की लड़ाई है। तबीयत (प्रकृति) मादे को बाहर भगाना चाहती है। यदि मादा (विकृत मलदोषधातु) प्रबल हो गया, तो मृत्यु है। यदि तबीयत प्रबल हुई, तो स्वास्थ्य है। सो तबीयत की सहायता करना अत्युत्तम चिकित्सा है। तीसरे दिन से लेकर जब कि दाने निकलते हैं। अतः दाने निकलने से तीन दिन तक इन नियमों का विशेष ध्यान रक्खें। क्योंकि यदि फुंसियां तुरन्त बैठ जावें, वा अधिक न उभरें, वा काली पड़ जावें, और सड़न(जलन, दाह) हो, तो परिणाम बुरा होता है। यह ध्यान रक्खो, कि जब रोगी नाक से अधिक श्वास लेवे, और प्यास बहुत अधिक हो, तो उसका भय है। तीन दिन के पश्चात् सातवें दिन पर्यंत साधारणतया इन ही नियमों पर चलना चाहिये। इनही नियमों को ध्यान में रखकर उपरोक्त नुसखों के साथ वा इनसे अतिरिक्त निम्न लिखित—

## वैद्यक नुसखे।

भी प्रयोग में लाये जा सकते हैं।

नोट—इन औषधियों की मात्रा आयु के अनुसार करलें, १ माशा से ६ माशा साधारण खुराक है:—

छोटा पंचमूल, बृहत् पंचमूल, रास्ना, आमला, खस, धमांसा, गिलोय, धनिया, नागरमोथा, इनका क्वाथ वात की शीतला के लिये लाभकारी है। मजीठ की छाल, पिलखी की छाल, सिरसव बड़ की छाल इनको पीसकर घी में लेप करने से बहुत लाभ होता है ॥

जब शीतला पकने पर आवे, अर्थात् दाने प्रकट होने के पांचवें छटे दिन गिलोय, मुलट्ठी, दाख, गन्ने की जड़ और अनार इनका क्वाथ वा थोटा गुड़ डालकर पीने से वात अधिक उपद्रव नहीं करती, और शीतला सुगमता से पक जाती है। यह भी बात मसूरिका के वास्ते है ॥

धूप—बांस की छाल, तालीस, लाख, बनोले, मसूर, जौ का आटा, बच, अतीस, घी यह सब वा इनमें से जो मिले, एक धूनी देनी चाहिये, यह धूनी आरम्भ और अन्त दोनों समय में दी जा सकती है। ब्रह्मी का रस भी पिलाते हैं ॥

पटोलपत्र, सरिवा, नागरमोथा, पाढ़ा, कुटकी, खैर की छाल, नीम की छाल, खरेटी, आमला, इनका क्वाथ वात की मसूरिका को अत्यन्त लाभकारी है ॥

पित्त की मसूरिका में विरेचन नहीं देना चाहिये। खीलों का चूर्ण मिश्री मिलाकर खाने से अधिक उष्णता और ज्वर को कम करती है ॥

पटोल की जड़ वा पटोलपत्र का क्वाथ वैसे ही वा गन्ने के रस के साथ देवे। नीम, पित्तपापड़ा, पाढ़ा, पटोलपत्र, रक्तचन्दन, अडूसा, धमांसा, आमला, नेत्रबाला, कटुकी इनका क्वाथ बनाकर ठंडा होने पर मिश्री मिलाकर पिलाने से पैत्तिक मसूरिका

वा रक्तज मसूरिका में बहुत लाभ होता है। अत्यन्त ज्वर और अत्यन्त तृषा के दूर होने के साथ दानों के निकलने में कोई बाधा नहीं होती ॥

दाख, खजूर, पटोलपत्र, नीम की छाल, अडूसा, खील, आमला, धमांसा इनका काढ़ा मिश्री मिलाकर देने से रक्त तथा पित्त दोनों प्रकार की शीतला को लाभ पहुंचता है ॥

ऐसी शीतला कि जिस में कफ प्रबल हो, अर्थात् कफज शीतला में अडूसा, नागरमोथा, चिरायता, हरड़, बहेड़ा, आमला, इन्द्रजौ, जवांसा, परवल, नीम के पत्र इनका क्वाथ (काढ़ा) पीना चाहिये। बड़ा पंचमूल और अडूसा इनका काढ़ा भी लाभकारी है। अडूसा के रस में शहद मिलाकर पीना भी लाभकारी है। यदि दाने कठोर हों, तो दिन में इसी को दो तीनवार दिया करें ॥

खैर की छाल, नीम पत्र, सिरस की छाल, गूलर की छाल, इनको पीस कर लेप करना भी अच्छा लिखा है ॥

धमांसा, पित्त पापड़ा, पटोलपत्र, कटुकी इनका काढ़ा ऐसी शीतला को हितकारी है। जिसमें पित्त कफ दोनों प्रबल हों ॥

गिलोय, पित्तपापड़ा, धमांसा, कटुकी का काढ़ा वातपित्त की मसूरिका को बहुत हितकारी है। सोंठ, नागर मोथा, गिलोय, धनिया, भारङ्गी, अडूसा के पत्ते का काढ़ा, वात कफ की शीतला को लाभकारी है।

जो त्रिदोषज हो, वह प्रायः असाध्यः होती है। इस के दाने नीले, चपटे, लम्बे कठोर दानो वाले होते हैं। और बहुत दिनों में पकते हैं। और दुर्गन्धि युक्त पीप निकलती है। उन

में से जिन के होने से कंठ रुक जाता है । अरूचि, ऊंघ (तंद्रा) बकवास, बेचैनी भी अधिक होती है । तो यह असाध्य है । तथापि यह नुसखा देना चाहियेः—

नीम के पत्र, पित्तपापड़ा, पाढ़ा, परवल कड़वा, कटुकी, श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, खस आमला, अडूसा, धामासा, इनका काढ़ा देना चाहिये ॥

शीतला में ज्वर घोर हो तो श्वेत चन्दन, अडूसा, नागर मोथा गिलोय, दाख, इनका काढ़ा देवें ॥

पटोल पत्र, गिलोय नागर मोथा, अडूसा, धमांसा चिरायता, नीम की छाल, पित्तपापड़ा, कटुकी, इनका काढ़ा शीतला में अत्यंत लाभ कारी है । कच्ची, पक्की दोनों में दे सकते हैं ॥

यदि शीतला के दाने निकल कर फिर अन्दर चले जावें । तो कचनार की छाल का काढ़ा, सोना मुक्खी २ रत्ती के साथ पीवे ।

अपूर्व रहस्यः—करंजुआ इस काम के लिये अद्वितीय है ।

करंजुआ के पत्ते यदि रोगी के नीचे बिछावें, तो सारे दाने शाम तक फिर बाहर निकल आते हैं, और यदि दाने निकलते समय बिछावें, तो कष्ट के बिना ही दाने निकल आते हैं । करंजुआ के पत्ते रोगी के कमरे के अन्दर लटका छोड़ें । क्योंकि इनका आश्चर्य जनक लाभ होता है ।

अनुपम रहस्यः—यदि शीतला निकलते २ बैठ जावें, तो बच्चे को थोड़ा शुद्ध मधु खिलावें, और केसर में कुड़ता तर करके

पहिनावें। और इसके बिछौने पर खूबकलां बिछावें । दाने तुरन्त उभर आवेंगे। इसके पश्चात् वही साधारण सावधानता रखें।

मुफर्रह उल्कुलूब में लिखा है "कि दाने यदि निकलकर फिर छिप जावें, इस समय तबीयत को सहायता देनी चाहिये। और शीरा (घोटा) सौंफ ताजा वा खुश्क का और शीरा तुख्म अजमोद तर वा खुश्क का अकेला वा दोनों एकत्र करके खिलाना सम्पूर्ण लाभ करता है"।

## डाक्टरी

जैसा कि वर्णन होचुका है, अब यह विचार होगया है कि शीतला में यह यत्न होना चाहिये, कि दाने बहुत न निकलें, और पीप पड़ने से कष्ट न हो, और त्वचा गलकर रोगी कुरूप और कुदर्शन न होजाय, देखते हैं कि यह आवश्यक नहीं कि रोगी को गर्म रखा जावे, और गर्म औषधियों से ही दानों को अधिकतर निकाला जावे ।

जो कुछ पीछे वर्णित हुआ है, उस से तो यही परिणाम निकलता है, कि दानों को उभारना ही उत्तम है । और शायद डाक्टरों का ऐसा करना केवल सौन्दर्य रक्षा के विचार से ही है।

हम नीचे डाक्टरी चिचित्सा भी लिखते हैं, जिनको डाक्टरी पर विश्वास हो इस प्रकार चिकित्सा करें । इतना अवश्य करदें कि आन्तरिक तो यही यत्न होना चाहिये कि दाने भली भान्ति निकलें, और बाहर मुख को बचाना चाहिये, कि वहां दाने कम निकलें। और जोश का नक़ास कई दानो के स्थान में दोचार दस दानो में हो। इस रीति से कोई

हानि न होगी। यदि तबीयत को मादे के निकालने के लिये यत्न न किया गया, तो अच्छा नहीं। अस्तु ! डाक्टर इस अवस्था में लिखते है, कि किसी बड़ी चिकित्सा की अवश्यकता नहीं। रोगी के बाल यादि ज्वर होते ही मुंडवा दिये जावें, तो उत्तम है। और शरीर में उष्णता अधिक हो, तो पांच२ ग्रेन कोनीन या कुनीन मिक्सचर बनाकर तीन२ चार२ घंटे के पीछे पिलावें। परन्तु पतला (द्रव) भोजन न दें। जो २ व्याधियां साथ हों, उनकी चिकित्सा करते जावें। यथा यादि शिरोवेदना अथवा बेहोशी की बकवास हो, रोगी के सिर पर ठंडा पानी वा बरफ लगावें। निद्राभाव के वास्ते टिंकचर ओपियम १५ बूंद, या डोवर्स पौडर १० ग्रेन सोते समय दें। वा २० ग्रेन सोडियम ब्रोमाईड थोड़े से जल में घोलकर पिलावें, वा थोड़ीसी व्हिसकी उष्ण जल में मिलाकर पिलावें। अतिसार, वमन, खांसी यदि आरम्भ होजाय, तो इसकी यथोचित चिकित्सा करें। और बाकी तबीयत (प्रकृति) को अपने आप पर छोड़दें।

## दागों (चिन्हों) के न बढ़ने की विधि।

और साथ२ यत्न यह करें कि दाने कम निकलें। दाग न पड़ें। रोगी के शरीर पर रोग जन्तु नाशक औषधियां (ऐंटिसैप्टिक) लगाने से रोग की छूत भी नहीं होती। और दाने कम निकलते हैं। इसलिये कारबालिक एसिड एक डराम वा परमैंगनेट आफ पोटाश २० ग्रेन १ औंस उष्ण जल में मिलाकर स्पंज के द्वारा २-४ वार सारे शरीर पर लगावें। वा परक्लोराइडमर्करी २ ग्रेन, ऐमोनिया क्लोराइड ४ ग्रेन शुद्ध जल २ औंस मिलाकर एक कोमल बुर्श के

द्वारा सारे शरीर पर दिन में ३-४ बार लगावें। इस प्रकार कांडी लोशन वा सल्फ्यूरिस एसिड से भी फुंसियों को पूंछते हैं। इसके अतिरिक्त लिखा है, कि दानों में छेद करें ताकि मादा (पीप आदि) निकल जावे। इन रीतियों से चिन्ह नहीं रहता और न ही मुख कुरूप होता है॥

इस के अतिरिक्त कुछ और औषधियां भी इस लाभ के लिये प्रयुक्त होती हैं। यथा नाइट्रेट आफ सिल्वर की बत्ती वा इसका सौल्यूशन १० ग्रेन औंस वाला फाया के द्वारा फुंसियों पर लगावें वा प्रत्येक दाना में छेद करके पीप आदि निकालें और १ ड्राम १ औंस वाला कास्टिक लोशन शीघ्र ही पिचकारी द्वारा प्रत्येक दाना में प्रविष्ट करें। मर्क्यूरियल प्लास्टर (पारा का मर्हम २५ भाग-मोम १० भाग-टार ५ भाग मिलालें। यदि शीत ऋतु हो, तो ग्लिसरीन थोड़ीसी मिलालें ताकि जम न जाय) दानों में इसको लगावें।

गन्धक मर्हम, टिंकचर आयोडीन, गट्टा पर्चा क्लोरोफार्म में मिलाकर कारबालिक तेल वा ग्लिसरीन में मिलाकर लगाना बहुत लाभकारी है। प्रयोजन इन औषधियों का यह है कि वायु से फुंसी सुरक्षित रहें। और किसी प्रकार की खराश न हो। त्वचा में कोमलता आजावे। रोगन जैतून तथा मीठे तैल से भी यही प्रयोजन सिद्ध होता है। रोगन जैतून के साथ चूने का पानी केले के रस में मिलाकर लगाना लाभ पहुंचाता है। जब पीप निकल जावे, तो आक्साइड आफ जिंक घृत में मिलाकर वा ग्लिसरीन और अर्क गुलाब मिलाकर लगावें और रोगी को खुजलाने से मना करें। बच्चों के हाथों में नर्म

कपड़े की थैली सी कर पहिनादें ताकि खुजलाने न पावे। यदि खुजली हो तो बारंबार स्फंज से शरीर को पोंछें। कोई शुष्क चूर्ण जैसे कि बारीक आटा वा स्टार्च हेयर पौडर, कपड़े में छनी हुई एरने की भस्म इत्यादि छिड़कें, इस प्रकार जब शरीर सुरक्षित किया जाय और पीपादि को भी निकाला जावे, तो न चिह्न गहरे हो सकते हैं और न दाने अधिक निकल सकते हैं। तथापि फिर यहां लिखदूं कि ध्यान यह रखें कि आंतारिक भाव से दानों का निकलना बन्द न हो। अर्थात भीतर शीत न पहुंचे। और न बाहर अधिक शीत से रोमकूपों को बन्द करादिया जावे। और यदि निकले हुए दाने बैठ जावें, और आरम्भिक चिह्न जैसे तशन्नज, बकवास आदि आरम्भ हो जावें, तो रोगी को उष्ण जल में बिठलाकर सिर पर शीतल जलकी धारें डालें। गर्दन पर प्लस्तर और पिंडलियों पर राई लगावें। यह है डाक्टरी चिकित्सा॥

शीतला की दूसरी अवस्था का वर्णन समाप्त करने से पूर्व कतिपय और आवश्यक बातों तथा आंखों आदि की रक्षा करने का वर्णन करना आवश्यक है। जब दाने निकलआवें और अचेतता हो, तो सर्द शर्बत और औषधियां निश्शंक होकर देवें। ताकि ज्वर की उष्णता और अचेतता न्यून हो। और उस समय दस्त सर्वथा न आने दें। खसरे में तो उस समय दस्त आना बड़ा भयानक होता है।

यदि दस्त स्वयं आरम्भ होजावें, तो बन्द न करें परन्तु यदि शक्ति में कुच्छ अन्तर न पड़ता हो तो। यदि देखें कि

तबीयत इस के पीछे खराब होती है, तो तुरन्त कुर्स तबाशीर काबिज़, बीही के पान आदि से बन्द करदें। यदि शीतला में नकसीर फूटे, उसको बन्द नहीं करना चाहिये। क्योंकि प्रकृति इस मार्ग से भी दूषित रुधिरादि को निकाल रही है। परन्तु जब रुधिर शुद्ध आना आरम्भ हो, तो तुरन्त बन्द करदें अन्यथा दुर्बलता होगी॥

ध्यान रहे, कि दानों के प्रकट होने के समय आंख, नाक कान, कंठ, फेफड़ा, अन्तड़ी और जोड़ों की रक्षा आवश्यक होती है। चाहिये कि यह अंग दानों के निकलने से बचे रहें। और यदि निकलें भी तो सर्वथा साधारण हों।

## आंख की रक्षा।

१.–समाक(तंतड़ीक)को गुलाब के अर्क में घोलें। और छाने और इस में थोडा सा काफूर मिलाकर रातदिन में कई वार आंखों में लगावें।

२.–धनिया का तत्काल निकाला हुआ पानी, और खट्टे अनार का पानी लाभ कारी है॥

३–माजू अर्क गुलाब में घिसकर टपकाना भी यही प्रभाव रखता है॥

४–मुलट्ठी का काढ़ा टपकाना उस समय लाभदायक है जब दाने आंख में निकलआवें॥

५–मुलट्ठी, छिलका हर्ड, छिलका बहेड़ा, आम्ला, न्याज़बू, दार हलदी, दारचीनी, नीलोफर खस, लोदर, मजीठ इन को

पीसकर आंखों पर लेप करे। वा इन के काढ़े को आंखों में डालें, तो दाने आंख में न निकलें, यदि निकलें तो अच्छे हों इस काढ़े में यदि काफूर ( कर्पूर ) मिलावें तो उत्तम है ॥

६–सेब के गूदे का रस आंखों में लगावें तो आंखों को कोई भय नहीं है, प्रथम तो दाने नहीं निकलते यदि निकलते हैं, तो आराम हो जावेगा ॥

७–यदि कृष्णांजन ( काला सुरमा ) और कर्पूर का पानी धनिया के साथ पीसकर कई वार आंख में डालें, तो आंख की लालगी और आंख के ऊपर प्रकट हुए २ दानों को लाभ पहुंचता है ॥

८–स्त्रियां कृष्णांजन कई वार सलाई के द्वारा लगाती रहती हैं ॥

९–यदि दाने समग्र शरीर पर बहुत निकल रहे हों, और अधिक ( दानों का भय हो ) तो जो औषधि आंखों में उपरोक्त औषधियों में से डालें इस के पश्चात् आंख पर गद्दी देकर और सीसक ( सिक्का ) का एक पत्रा रखकर पट्टी से बांधें, और बच्चा घबराहट के कारण खोले, तो फिर ठहर कर बांधे।

नोटः—आंखों में ड्रापर के द्वारा औषधि डाल सक्ते हैं ॥

१०–डाक्टर कहते हैं कि यदि आंखें बहुत लाल और मदाविष्ट सी प्रतीत हों, तो उनपर शीतल जल में कपड़े की गद्दियां भिगो करके रखें। वा बोरिक एसिड १ ड्राम, अर्क गुलाब १ औंस में घोलकर इस में गद्दियां भिगोकर इसको प्रातःकाल और सायंकाल आंखों में टपकाते रहें।

# घ्राण के अन्तर्भाग की रक्षा ।

१.—सिरका और गुलाब नाक में हर घड़ी दाने निकलने के दिनों में टपकाते रहें । एक चमचा के द्वारा वा छोटी पिचकारी के द्वारा डाला जा सकता है ॥

२—रोग़न गुल थोड़ा सा कर्पूर मिलाकर नाक में टपकाया करें । रोगन मोरद भी लाभदायक है ॥

३—रोगन गुल, सिरका और कर्पूर यथोचित परिमाण में पीसकर गाढ़ा लेप बनाकर रखना और नाक में लेप करते रहना बहुत अच्छा है ॥

# कंठ की रक्षा ।

१.—जूंही कि कोई फूंसी शरीर पर प्रकट हो जावे, रोगी को कह दें कि अनार के दानों को किसी किसी समय चबाकर इसका पानी निगले । यदि बच्चा हो तो अनार का पानी इस के मुंह में डालें ।

२—समाक, मसूर छिले हुए, गुलसुर्ख का काढ़ा, अर्क गुलाब में मिलाकर गरारे ( गण्डूष ) करना लाभदायक है ॥

३—शर्बत तूत का गरारा भी लाभदायक है ॥

४—आम्ला, मुलट्ठी के काढ़े में शहद डालकर गरारे उस समय अधिक लाभदायक हैं, जब कि मुंह और गले में दाने निकल आयें हों ॥

५—आब अनार, आब शहतूत आदि शीतल जल के कुरले गुलाब मिलाकर लाभदायक हैं ॥

६–१ ड्राम सिरका, २ ड्राम शहद, १० औंस जल मिलाकर गुरारे करने से रक्षा भी होती है, और यदि राल अधिक बहती हो, तो बन्द हो जाती है ॥

७–पोटासी क्लोराम १ ड्राम, बोरिक एसिड १ ड्राम, १० औंस पानी में मिलाकर गुरारे करने चाहिए। इनका उपरोक्त लाभ है ॥

## छाती की रक्षा।

यदि छाती पर बहुत दाने प्रकट हों, तो इसकी रक्षा आवश्यक है क्योंकि फेफड़े आदि को हानि न पहुंचे ॥

१–यदि पित्ताधिक्य हो और मलावरोध (कबज) हो तो बीहदाना का लुआब, मिश्री, बादाम रोगन थोड़ा २ चटाएं बादाम कूट कर मुंह में रखें, वा मगज़ मीठे कद्दू की मींगी ३ भाग, बादाम मींगी १ भाग, कतीरा ½ भाग, मिश्री ३ भाग, घोट कर लुआब इसपगोल वा लुआब बीहदाना के साथ घोल लें और चटाया करें ॥

२–यदि पित्ताधिक्य हो, और तबीयत नर्म हो, अर्थात दस्त आते हों, तो गोंद कीकर, मींगी बादाम, मगज खीरा और निशास्ता प्रत्येक को भून करके अच्छी प्रकार कूटें, और लुआब इसपगोल (भुने हुए) में मिलाकर चटाएं ॥

३–यदि उष्णता अधिक न हो, तो मक्खन मिश्री थोड़ा सा खिलाना पर्याप्त होगा ॥

४–शेख लिखता है "कि फेफड़े की रक्षार्थ चटनी मसूर से उत्तम कोई वस्तु नहीं, अर्थात मसूर और खशखाश पीस

कर लुआब इसपगोल में चटनी बनावें, और हृदय की रक्षार्थ अंजीर और मसूर का काढ़ा (जो ऊपर वर्णित हो चुका) लाभ दायक है, क्योंकि वह हृदय के आस पास से उष्णता को दूर करता है ॥

## जोड़ों की रक्षा।

१.—यदि किसी जोड़ पर बहुत ही दाने निकलें, तो उचित है कि उसको शीघ्र चीर कर पीप निकाल दी जावे, और जो घाव हो उसकी पश्चात चिकित्सा की जावे। अन्यथा जोड़ को हानि पहुंचेगी।

२—सन्दल (चन्दन), मामीसा, अरम्नी मट्टी, फूल गुलाब, तनिक सा काफूर, सबको अर्क गुलाब में मिलाकर पीसकर जोड़ों पर लेप करना भी लाभ दायक लिखा है ॥

## अंतड़ियों की रक्षा।

अंतड़ियों में कभी कभी चेचक के कारण खतरा और घाव उत्पन्न हो जाता है। रुधिर आता है। अत्यन्त पीड़ा होती है। इस की चिकित्सा कठिन हो जाती है। अंतड़ियों की रक्षा का ध्यान विशेषतः उस समय रखें, जबकि शीतला कम निकल रही हो। वा निकलकर अन्तर्मुख हो गई हो। क्योंकि इस अवस्था में हो सकता है, कि शेष मादा अन्दर गिरे। अंतड़ियों की रक्षा दाना निकलने के पश्चात् आवश्यक होती है क्योंकि उस समय में अतिसार का भय होता है। इसलिए दाना निकलने के पश्चात् दस्त बुरे

माने जाते हैं। और अतिसार ही खराश और घाव का हेतु होता है॥

इस से यह भी प्रकट है कि मलावरोधक वस्तु देना ही आंतड़ियों की रक्षा है। कुर्स तबाशीर और आब वही लाभ दायक है। यदि कभी अन्त में अतिसार प्रकट हो तुरन्त इसी प्रकार की मलनिरोधक वस्तुओं से बन्द करने चाहियें॥

वैद्य गंगाधर चूर्ण आदि दे सकते हैं॥

## सूचनार्थ नोटः—

आंख की रक्षा इस लिये की जाती है, कि इसके अंदर छाले निकलने से कभी तो आंख जाती रहती है, और कभी सफेदी पड़ जाती है, और कंठ की रक्षा इस लिये की जाती है, कि इसमें कभी खुनाक (कंठ शोथ) हो जाता है, और कभी इतने घाव हो जाते हैं, कि निगलना कठिन हो जाता है, और कभी मासखोरा भी हो जाता है, जो घातक है॥

नथनों की रक्षा इस लिये की जाती है, कि इन में से ऐसे घाव उत्पन्न हो जाते हैं, कि वायु का गमनागमन बन्द हो जाता है॥

छाती की रक्षा इस लिये है, कि फेफड़े में शीतला के दाने ऐसे पड़ जाते है, और श्वास प्रश्वास में कठिनता उत्पन्न होती है, और यदि इन दोनों में पीप पड़ जावे तो, सिल(राज यक्ष्मा) का भय है॥

जोड़ों की रक्षा इस लिये है कि कभी इन में पीड़ा बैठ

जाती है, अंतड़ियों की रक्षा का कारण खराब और घाव का उत्पन्न होना लिखा जाचुका है ॥

रक्षा के करते हुए भी यदि कुच्छ खराबी हो जावे, तो चिकित्सा उसकी यथा योग्य करनी चाहिये, जो कि उन व्याधियों में उचित हो ॥

आंख की स्फैदी के लिये गधे का दांत बहुत लभादायक है, और शेख साहिब रौगन पिस्ता के डालने की आज्ञा देते हैं, भारत वर्ष में स्त्रियां शीतला के पश्चात या आंख में कोई बाधा (उपद्रव)हो जाने पर रोगन पिस्ता का प्रयोग करती हैं, और युनानी वालों ने श्याफ अबीयज़ की बहुत प्रशंसा की है. बूअली सेना लिखते हैं, "कि यदि आंख में दाने उत्पन्न भी हो गये हों, तो उनको लगाना चाहिये और तत्पश्चात भी यह लगाना लाभदायक है"॥

**नुसखा श्याफ अबीयजः**—सफेदा, कतीरा, गोंद कीकर प्रत्येक ९ माशा, निशास्ता ३ माशा, अफीम ६ रत्ती, कुन्दर १ माशा सब को कूटकर लुआब इसपगोल में मिलाकर प्रयोग में लावें ॥

॥ द्वितीयावस्था का वर्णन समाप्त हुआ ॥

---

## अथ तृतीय अवस्था ।

जब सब दाने निकल आवें, और ७ दिन निरुपद्रव व्यतीत हो जावें, और केवल एक दिन भय का है, और वह दिन वह है, कि जिस दिन दानों में पीप बनती है, और इस कारण ज्वर भी अत्युग्र हो जाता है, परन्तु ईश्वर की कृपा से पूर्व ही प्रतीकार यदि उचित किये गये हैं, तो यह पीप बेचैनी, अशान्ति,

और अस्वप्नता के पश्चात स्वयं बन जाती है, और इस के पश्चात रोगी सो जाता है ॥

डाक्टर लिखते हैं, आठवें दिन जब ज्वर का वेग हो तो रोगी में विष के प्रभाव को कम करने के लिये कुनीन और क्लोरीन मिक्सचर १ औंस के परिमाण में दिन में ३ वार देना बहुत लाभदायक है, कुनीन और क्लोरीन मिक्सचर की विधि यह है, कि एक १२ औंस की खाली बोतल लेकर उस में २० ग्रेन पोटासी क्लोराम डालें, और उसपर १ ड्राम तेज हाईड्रो क्लोरीक एसिड डालकर बोतल के मुख पर तुरन्त शीशा का मजबूत डाट लगादें, अब इस में क्लोरीन गैस के उत्पन्न होने से बोतल हरे रंग की वायु से भर जावेगी, फिर इस में थोड़ा २ पानी डालकर और उसका मुख बन्द करके अच्छी प्रकार हिलाते जावें, यहां तक कि बोतल जल से पूरित हो जावे, एक ही वार बहुत सा जल न डाल देवें, जब बोतल जल से भर जावे, तब इस में २५ ग्रेन कुनीन घोल कर रख लें, बस तैयार है, अथवा ३ ग्रेन कुनीन १५ ग्रेन साइट्रिक एसिड १ औंस पानी में घोल करके और ऐमोनिया कारब ५ ग्रेन और पोटासी कारब १५ ग्रेन पृथक एक औंस जल में घोल कर दोनों को मिला कर जोश की अवस्था में पिलावें। और ऐसी खुराक दिन में ३, ४ वार दें।

दुष्ट स्वप्न निवृत्ति के लिए १० ग्रेन डोवर्स पौडर वा १५ बूंद टिंकचर ओपियम दे सकते हैं ॥

और ज्वर के आधिक्य के वास्ते तिब्बी (हकीमों का) नुसखा यह है:-

जहर मोहरा खताई १ माशा, अर्क बेदमुश्क में घिसें इस में

शर्बत नीलोफर २ तोला, शर्बत उनाब २ तोला, अर्क क्योड़ा ४ तोला, अर्क गाओजबान ८ तोला मिलाकर पिलावें ॥

यदि दुष्ट चिन्ह उत्पन्न हो जावें, और रोगी अत्यन्त दुर्बल हो जावे, तो यह पुष्टि कारक योग ( नुसखा ) है:—

जहर मौहरा खताई, मोती अनविद्धे, याकूत रमानी, (पन्ना) सत मलेठी प्रत्येक १ माशा, दाना इलायची, कुहरवाशमई प्रत्येक ४ रत्ती, पत्ते गुलशकाकल १ माशा सब को बारीक पीसकर और उस में शर्बत सेब और थोड़ासा क्योड़ा मिलाकर चान्दी का वर्क सोने का वर्क दोनों एक २, सब को परस्पर मिलाकर चटनी बनावें, खुराक १ माशा दिन में दो बार दें। वैद्य ज्वर उतारने वाले रस दे सकते हैं॥

नोट—शीतला के दाने स्वयं पकते और खुष्क होते हैं, और खुष्क रेशा इन पर से पृथक हो जाता है, तथापि कभी ऐसा हो सकता है, कि स्वयं उनको पकाना पड़े, इसलिये "मुफ-रेह उलकुलूब" में एक अद्याय पकाने, खुष्क करने और खुष्क रेशा (खरींड) को पृथक करने की विधियों के संबन्ध में लिखा गया है, उसको उद्धृत करदेना पर्याप्त समझते हैं :—

## शीतला के दानों के पकाने की विधि

जब शीतला निकले, ज्वर, बेचैनी और अशान्ति न्यून हो नाड़ी और श्वास प्रश्वास अपनी स्वाभाविक अवस्था में हो, और जाने, कि दाने चिर में पकते प्रतीत होते हैं, तो चाहिये कि बाबूना और अकलील उलमुल्क, मुनक्का, और खतमी और गेहूं का छान जो २ मिले, यह सब एकत्र पानी में २ पात्रों में गर्म करे

और चारपाई के इतस्ततः वस्त्र ओढ़ कर एक पात्र पाओं की ओर एक पात्र धड़ की ओर नीचे चारपाई के रक्खें। और पात्र का आवरण ( ढकना ) थोड़ा २ खोलें ताकि सूक्ष्म वाष्पें शरीर में प्रविष्ट हों। और दाने पानी वाले होजावें, कि पकना इनका यही है। तत्पश्चात् शुष्क करने की युक्ति करें।

## दानों के शुष्क करने की विधि :—

जिस समय दाने सम्पूर्ण निकल आवें, और ७ दिन व्यतीत होजावें। और ( दाने ) सर्वथा पक जावें, देखें जो इनमें से बड़े हैं *। सोने की सिलाई से चीरें, शनैः २, और पानी उसका कोमल वस्त्र में उठावें, इस के पश्चात् फूल गुलाब खुश्क, वा बर्ग मोरद बर्ग चंबेली वा चन्दन की लकड़ी, या झाऊ की धूनी

---

*नोट:—शेख साहिब की सम्मति है, कि तीसरे दर्जा में अवश्य सोने की सलाई से चीरा देना चाहिये। अपिच लिखा है, कि जब सम्पूर्णतया शीतला के दाने निकल चुकें, और सातवां दिन व्यतीत होजावे, उत्तम युक्ति यह है, कि सोने की सूई से छिद्र कर दाने में का अशुद्ध जल निकाल दिया जाय, और रूई से पोंछ लें। और लवण मलना आवश्यक है, परन्तु लवण मलना और (दाने में का) जल निकालने के मध्य में विलम्ब होना चाहिये, क्योंकि नए घाव पर लवण हानि पहुंचाता है। प्रत्युत बड़े दाने के अतिरिक्त और दाने टूटे हों वा न, उन पर लवण मलना आवश्यक है। और मोटे दानों को चाहे अपनी अवस्था पर छोड़दें। अभिप्राय यह है कि छिदे हुए दानों से जब तक अशुद्ध जल न बह निकले लवण न छिड़कें। अत्यन्त पीड़ा होगी। संक्षेपतः यह, कि शुष्क करने के लिये लवण सब से उत्तम लिखा है। लवण छिड़कने की विधि अभी जो वर्णन की जाती है अच्छी है॥

देवें । परन्तु उष्ण काल में फूल गुलाब,और मोरद और चन्दन की धूनी उत्तम है । और शीतकाल में बर्ग सोसन और झाऊ की लकड़ी अच्छी है । और किसी स्थान पर घाव न होजावे, इस वास्ते फूल गुलाब,एलवा,कुन्दर अंज़रूत (लाई) और दमुलअख्वैन (हीरादोखी) पीसकर घाव पर छिड़कें। यदि दाने बड़े और उन में पानी बहुत होवे तो गुलाब के पते वा चावल का आटा वा जौ का आटा ऊपर बिछौने के डालें। और रोगी को उसके ऊपर सुलादें । और यदि खरीड छिल गया हो, तो चंबेली पत्र जो ताज़े तोड़े गये हों, रोगी के नीचे बिछादें और गुलाब के पते और बर्ग मोरद शुष्क को बारीक पीसकर छिले हुए स्थान पर छिड़कें, और इसी प्रकार नर्म रेत के ऊपर सुलाना शीघ्र प्रभाव डालने वाला है,और एक ही दिन में लाभ पहुंचाता है । और यदि छाले विलम्ब से शुष्क हों, लवण के पानी के बिना निर्वाह नहीं है,और उत्तम यह है कि मसूर लाल और गुलाब पत्र और लकड़ी झाऊ की छील करके पानी में पकावें, और उस पानी में लवण डालदें और साफ और नर्म रूई उस में भिगोएं और छाला के ऊपर रखें, ताकि रूई का पानी इस में पहुंचे और शीघ्र शुष्क करे, और यदि उष्णता हो तो थोड़ासा कर्पूर और सन्दल सफेद उस पानी में घोलें। और गुलाब पत्र और बर्ग सेब जंगली और स्फेदा और मुर्दार संग बारीक पीसकर छिड़कें, यदि छालों में घाव होगए हों, तो मर्हम काफूर का प्रयोग करें ।

## कथा ।

मुहम्मद शुकर उल्लाह लड़का इस दास का है, इस के बड़े २ छाले निकले थे, और दाने उसके पानी से भरे थे, और इसमें सूजन अतिशय थी, और यतः भारतवर्ष में चीरना दानों का प्रचलित नहीं है। और दास ने उस समय तक किसी को आज्ञा न दी थी, इसलिये इस काम ( चीरने ) में संकोच करता था। अन्त में आवश्यकतानुसार वृद्धा स्त्रियों के अत्यन्त वर्जन करने पर भी इस पर अनुष्ठान करके सोने की सूई से चीरना आरम्भ किया, जिस स्थान से कि पानी निकलता था, तुरन्त उसमें शान्ति होती थी, और क्रमशः शनैः २ तीन पहर के भीतर सब दानों को चीरा, कि जिस से ईश्वर की कृपा से पूर्णतया आरोग्यता प्राप्त हुई, इसको बारंबार परीक्षा हुई, और लाभ इसका बहुत शीघ्र पाया ॥

## खुश्क रेशा के दूर करने की विधि

यह शीतला की चोथी अवस्था है। चीचके गिर पड़ने के पश्चात् एक रेशा उतरता है । जिस के पीछे चिन्ह गहरा होजाता है। खुश्क रेशा उस छिलके को कहते हैं जो घावों के ऊपर प्रकट होता है। जब कि दाने सूख जावें और यह खुश्क रेशा रह जावे, देखें कि खुश्क रेशा कैसा है। यदि खुश्क और पतला है और नीचे इस के आर्द्रता ( तरी ) नहीं है, चाहिये कि तैल की शीतोष्ण ( नीम गर्म ) बूंद इस पर टपकावें, तो शीघ्र गिरजावें। और तैलों में से उत्तम तिलों का तैल है। परन्तु अति दूषित ( रद्दी ) छाले के ऊपर इसके स्थान में तैल फूल

बनफ़शा डालें, क्योंकि तैल से दाग़ रह जाता है । और यदि खुश्क रेशा मोटा है, वा नीचे इसके पानी है, उसको धीरे से उखाड़ें, तैल लगाने के विना और पानी निकालें, पश्चात् देखें कि गहराई रखता है वा नहीं । यदि गहराई हो तो एलवा, बोल, हलदी, मुर्दासिंग, रूपा मक्खी, स्फेदा और सिन्दूर का चूर्ण छिड़कें । यदि गहराई नहीं है और त्वचा के बराबर है, तो फटकरी और लवण लेकर उस पर छिड़कें, और छोड़ें । दूसरी वार फिर खुश्क रेशा होगा, उसको फिर धीरे से उखाड़ें, फिर यदि उसके नीचे वैसे ही पानी हो, तो पुनः वही क्रिया करें और पानी न हो, तो चिकित्सा की आवश्यकता नहीं है, अब जो रेशा उत्पन्न होगा, रोग़न उस पर डालें जैसा कि वर्णन हुआ ॥

## चिन्ह दूर करना ।

और जब छाले अच्छे हों, और चिन्ह उनके रह जावें, तो चिन्ह दूर करने के लिये खुश्क बांस की जड़, आटा बाकला, खबूजा की मींगी, चावल, मिश्री, बादाम की मींगी और आटा जौ लेकर कूट कर छाने, और अंडे की स्फेदी में घोल कर मला करें, (यदि अंडे की सफेदी से परहेज ( घृणा ) हो, तो मक्खन ही सही) ॥

शेख लिखता है—कि इन में से वह औषधियां जिन से चिन्ह दूर होते हैं यह हैं:—सूखी जड़ बांस की, आटा, बाकला, बेद की लकड़ी, अंजरूत लकड़ी छिली हुई, छिलके खुश्क तुख्म खर्पुजा के, चावल धोए हुए, और जौ का पानी और

स्फेदी मुर्गी के अंडा की, सड़ाने के द्वारा फूली हुई मिट्टी, मुर्दार संग, निशास्ता, मीठे और कड़वे बादाम, तैल सोसन, रौगन ( तैल ) पिस्ता, चर्बी गधे की, रौगन गुल और जो वस्तु प्रभाव में गधे की चर्बी के निकट हों ( अर्थात् मिलती हों ) वह पानी जो ऊंट के खुर को भूनने और जलाने के समय ऊंट के खुर से निकलता है, बहुत लाभदायक हैं, इस से अधिक बल वाले समुद्रझाग और हमारा मिरच स्याह ( वह छोटे २ गोल किंकर जो काली मिरच में मिले हुए हैं, क्योंकि मिरच स्याह का प्रभाव इन में आ जाता है ), ज़रिश्क, कुन्दर, साबुन, बूरा अरमनी, पुरानी अस्थियां दग्ध हुई हुई, जो कि चूना हो जावें, तुख्म मूली, सूखी मूली का आटा, और ज़रावन्द आदि दें, यथोचित युक्ति करें, खिलाने की वस्तु उत्तम कि जिन से वर्ण में उत्कृष्टता उत्पन्न हो यह है:—

अनार, शराब, खुशबू, कुक्कट, चकोर, तीतर और बटेर के मांस का रस ( जो खाते हो ) ॥

## योग:—

जली हुई हड्डी ३० माशा, मेंगन भेड़ की पुरानी, ईंट नई, साधारण निशास्ता, चावल धोये हुए, चने प्रत्येक ३० माशा, बकायन फल, तरमस ( बाकला मिश्री ), ज़रावन्द तवील १० माशा, जड़ बांस सूखी हुई ६० माशा पीसकर रखें। खरबूजी वा जंगली खीरा वा बाकला वा जौ के पानी में पीस कर दागों पर जोर से लगादें, और प्रातःकाल बनफ़शा पानी में डाल कर गर्म करके धोवें ॥

## अकरीतन नामी हकीम का यह नुस्खा है:-

निशास्ता, ईंट नई, पुरानी हड्डी, बांस की जड़, बाकला, तुख्म खरपुजा, साठी के चावल धोए हुए, तुख्म बकायन, कुठ, सब को बारीक करके उबटन बनालें, और निशानों पर उनकी मालिश किया करें। यह तो आप समझते ही हैं, कि शीतला के दूर होने के पश्चात जितना शीघ्र इन नुस्खों का प्रयोग किया जावे, उतना ही निश्चयात्मिक लाभ होगा॥

**अन्य नुसखा:**—चर्बी गधे की, जड़ बांस की पीसकर शहद में मिलाकर मलना लाभदायक है॥

**अन्य नुसखा:**—पोदीना, नमक शोर पीस कर शहद मिलाकर मलना लाभदायक है॥

**अन्य नुसखा:**—शेख ने इस नुस्खे को लाभदायक और परीक्षित लिखा है, जड़ बनफशा, कुठ, बारासिंगा जला हुआ, उशक (कान्द्र) कूट पीस कर उबटन की नांई प्रयोग करें, छाईयां को भी लाभदायक है *॥

**अन्य नुसखा:**—ऊंट की वा किसी अन्य पशु की मेंगन जो पुरानी हो कर श्वेत हो गई हो पुरानी गरी हुई हड्डी प्रत्येक १० भाग, जड़ बांस की सूखी हुई, कोरे मिट्टी के पात्र का टुकड़ा १० भाग, निशास्ता १० भाग, बाकला ५ भाग, रौगन तुख्म खरपुजा, चावल छिलका उतारे हुए प्रत्येक १० भाग, बेसन १० भाग, तुखम बकाइन १५ भाग, दूध के पानी में

---

*नोट—जो जहां परिमाण (वजन) न लिख हों, वहां सम भाग लें

गोंद मिलाकर सिद्ध करें । और यदि उनमें कुठ और मुर (बोल) और जराबन्द तवील प्रत्येक १ भाग मिलावें, बहुत उत्तम उबटन है ॥

## उबटन जो कि शीतला के निशान और खुजली को दूर करे ।

मुर्दारसंग, पुराने बांस की जड़, चने, आटा चावल का, पुरानी हड्डी, मींगी खरबूजा, मींगी बकाइन, कुठ कूट छान कर लुआब मेथी वा लुआब अलसी के साथ रात को मलें, और प्रातःकाल भूसी गर्म पानी से धोवें ॥

## मिश्रित ।

आंखों में शीतला के दाने निकलें, तो लसूड़ी की छाल पीस कर आंखों पर इसका गाढ़ा लेप करें ।

सातवें दिन के पश्चात शीतला में यदि पीड़ा वा घाव होवे, तो उस पर एरने की राख, वा सूखे गोबर का चूर्ण छिड़के, और गधे की लीद की धूनी देवे । यदि सातवें दिन के पश्चात गो मूत्र दानों पर लगावें, तो खुजली नहीं होगी, और शीघ्र खुश्क हो जावेंगे ॥

कलौंजी के पत्तों का काढ़ा बनाकर उस में हलदी डाल कर पीने से अति घोर शीतला को आराम आता है ॥

भावमिश्र लिखते हैं—कि जिस स्थान पर शीतला का रोगी हो उस कमरे के चारों ओर नीम के पत्ते बांधे, इस से एक तो यह लाभ है,कि वायु शुद्ध रहेगी,और दूसरे उस में का विष बाहिर कम जायगा । अपिच लिखते हैं, कि यदि जलन हो तो गोबर की राख उत्तम है, क्योंकि इस से सब फिंसियां

सूख जाती हैं, और पकती भी नहीं हैं । एक स्थान पर लिखा है कि बड़ी शीतला जब पक कर बहने लगे, तो एरने उपलों की राख लगावें, और नीम के डाल से मक्खियों को हटादे, और ज्वर में शीतल जल देवे उष्ण न देवें,बच्चों के हाथ रूई में लपेट कर ऊपर वस्त्र ढीला करके बांध देना चाहिये, ताकि यदि बच्चा शरीर में खुलजावे, तो हानि न पहुंचे ॥

"अमृत धारा" शीतला की प्रत्येक अवस्था में लाभदायक है । ज्वर के आरम्भ में चाहे ज्वर शीतला का हो वा न हो । इस के देने से लाभ होता है,जब दाने निकल रहे हों, तो इसको सौंफ के पानी में मिलाकर देना चाहिये, जब भर जावें तो इस के लगाने से खुजली नहीं होती, और शीघ्र खुष्क होते हैं, पहिले थोड़ी २ जगह पर क्रमशः लगाना चाहिये, और गोमूत्र छिड़-कने के समय इस में २ बूंद मिलावें, तो उत्तम है ॥

श्वेत चन्दन, अडूसा, नागरमोथा, गिलोय, दाख इनका दूध में काढ़ा करके देवें, जो शीतला के ज्वर को पहिली अवस्था में लाभदायक है । बड़, गूलर, पीपल, दाख और आम इन वृक्षों का चूर्ण बहती हुई शीतला पर छिड़कना बहुत लाभदायक है, इनके धोने के लिये निम्न लिखित वस्तुओं का काढ़ा अपूर्व हैः—पत्ते नीम, बैंत की छाल,सेब, बन कपास, कन्दूरी, कोयल जितनी मिलें। राल हींग और लहसन, इन की धूनी देवे, तो शीतला के घाव में कृमि नहीं पड़ते, और यदि पड़ गए हों, तो आराम आजाता है ॥

यदि दानों में खुजली हो, तो भोजपत्र वा झाऊ के पत्ते की धूनी उत्तम है, और मर्हम राल और मर्हम काफूर भी अच्छा है

यदि ज्वर शीतला के समय घोर पीड़ा हो तो पीड़ा के स्थान पर सेक करें, ग्लास लगालें, वा फनस्टीन परिमाण ३ ग्रेन दिन में ३ वार देवें, परन्तु राई आदि का प्लस्टर कभी न लगावें, अन्यथा उस स्थान पर शीतला निकलते समय अत्यंत कष्ट होगा, दानों में पीव पड़ने के पश्चात् की खुजली को दूर करने के लिये डाक्टर तैल जैतून वा वैसलीन लगाने को कहते हैं, परन्तु दाने तैल लगाने से खुश्क न पड़ें, तो इस रोगन के साथ थोड़ी सी अमृतधारा मिलालेनी चाहिये, और निम्न लिखित नुस्खे भी लेप करते हैं:—कारबालिक एसिड १ ड्राम, २ औंस ग्लैसरीन में मिलाते हैं वा काफूर २ भाग, मेंथाल ३ भाग, वैसलीन १ भाग, परस्पर मिलाकर मर्हम बनावें, यह मर्हम निश्चय से खुजली को विचित्र है, जब खरिंड भी गिर जावे, तो भी इस मर्हम को लगाते हैं ॥

सल्फर आइंटमैंट का लेप भी लाभदायक लिखा है, जब सब खरिंड और रेशा भली भान्ति झड़ जावें, तो रोगी को निरन्तर एक २ दिन छोड़कर कारबालिक सोप से ३ स्नान कराकर और नवीन शुद्ध बस्तर पहिनाकर बाहिर जानें, और दूसरों को मिलने की आज्ञा दें, रोग के आरंभ से ६ सप्ताह तक रोगी को पृथक् रखना चाहिये,इसके पश्चात् रोगी को नए वस्त्र पहिनावें, और पाहिले पहिने हुए वस्त्रों को रोगजन्तु नाशक औषधि के द्वारा शुद्ध करें वा जलादें ॥

शीतला के कारण आंख में फोला हो जावे, तो शीतला की खरिंड गुलाब में घिसकर लगाना इस को नाश करता है ॥

नोट—मुनक्का ११ दाने, स्वर्ण वर्क १, केशर १ रत्ती, अर्क गाओजबान में घोल करके शीतोष्ण जल पिलाना शीतला के दानों को बहुत शीघ्र निकालता है ॥

नोट—खूबकलां हाथ की हथेली और पाओं के तलवों में मलें, और उस को पानी में उबाल कर उसका बाष्प देवें, और वस्त्र ओढ़ादें ताकि स्वेद निकले, और मुनक्का, खूबकलां को औटा कर मिश्री मिलाकर पिलावें, तो इस से ज्वर को भी आराम होता है और दाने भी सुगमता से निकलते हैं ॥

# शीतला से बचे रहने के उपाय

सब संक्रामक रोगों से सावधान रहने के सविस्तर उपाय तो यहां लिखे नहीं जासकते, हम संक्षेपतः उन दिनों में शीतला से सुरक्षित रहने के उपायों का वर्णन यहां करेंगे. जिन दिनों में शीतला फैले, दश वर्ष से न्यून आयु के बच्चों को विशेषतः रोगाक्रान्त रोगियों में न भेजना चाहिये. डाक्टर लिखते हैं कि सब को टीका करवा देना चाहिये,यदि एकबार पूर्व छोटी आयु में हो चुका हो तथापि इसका कोइ विचार नहीं है, हां यदि पिछली टीका कराए कुच्छ समय नहीं हुआ है तो आवश्यकता नहीं है, जिन बच्चों को शीतला निकल चुकी है उनको पुनः नहीं निकलती है, परन्तु स्मरण रहे कि हंसनी खेलनी माता जो शरीर में विना बड़े ज्वर के कोई २ दाना शीतला के आकार का निकलता है, वा यदि खसरा निकला

हुआ है, तो शीतला फिर भी निकल सकती है। कहते हैं जिन बालकों को एकबार टीका लग चुकाहो, उनको प्रथम तो शीतला निकलती नहीं, जो निकले भी तो अत्यन्त हलकी सी होती है, हां दो वा तीन बार जिन को टीका लगचुका है, उनको सर्वथा नहीं निकलती है। रोग फैलने के दिनों में यह विचार नहीं करना चाहिये, कि यतः रोग फैला हुआ है, अतः संभव है कि विष कुछ प्रवेश करचुका हो, और विष के प्रकाश की अवधी १ दिन से १५ दिन तक है,अभी तक प्रकट न हुआ हो, और इस पर टीका लगवाना हानि करे। अनुसन्धान यह है, कि यदि वास्तविक रोग ( जिस का विष प्रवेश करचुका है ) प्रकट होने से पूर्व टीका के छाले के गिर्द लाल मंडल ( घेरा ) उत्पन्न हो जावे, तो फिर प्रथम तो शीतला निकलती ही हनीं, और यदि निकले भी, तो बहुत माडीफ़ाइड अर्थात् मृदु सी होती है, अतः रोग फैलते ही इन बच्चों का तो अवश्य टीका लगवा देना चाहिये, जिन को अभी तक टीका न लगा हो। यह स्पष्ट है कि छोटे २ बच्चों को यदि शीतला निकल आवे, तो उनका बचना, कठिन होगा, अतः इनको भी टीका करवाना आवश्यक है। दो मास तक बालक दुर्बल होता है, और सातवें मास दान्त निकलने आरम्भ होजाते हैं। अतः दूसरे मास और ७ मास के भीतर, टीका लगवाना आवश्यक है। यदि बच्चा २ मास से न्यून आयु का हो या २ मास से अधिक आयु वाला इस दशा में हो, कि दान्त निकल रहे हों, तो उस समय टीका न लगवाना।

परन्तु सावधानी बहुत रखनी चाहिये, और यदि होसके तो बच्चे को दूसरे स्थान पर भेजदें ॥

यदि किसी के घर में शीतला हो तो जैसा कि वर्णन होचुका, उस बच्चे को पृथक् कमरे में रखना चाहिये। और किसी अन्य बालक को इस में प्रवेश नहीं करने देना चाहिये, और शेष बालकों में से जिनको टीका न लगा हो लगवाना चाहिए और रोगी के कमरे के बाहिर दुर्गन्ध नाशक औषधियां लटकानी चाहियें। और रोगी के परिचारक नियत होने चाहियें, क्योंकि ६ सप्ताह पर्यन्त शीतला का विष रहता है, इसलिये नीरोग होजाने के पश्चात भी दो तीन सप्ताह तक दूसरे बच्चों से पृथक् रक्खें तो उत्तम है। दूसरों की भलाई के वास्ते न परिचारक और न रोगी को बाहर जाकर किसी से भी न लगना चाहिये, जब तक कि स्वास्थ्य स्नान न किया जाए। रोगी को कमरे में प्रविष्ट करने से पूर्व सब वस्तुएं वहां से दूर करनी चाहिये, और जो वस्तुएं वहां रहें। निरोग हुए पीछे उनको दारचिकना वा फीनाइल के जल से वा नीम के उबले हुए उष्ण जल से धोकर धूप में कई दिन सुखाना चाहिये। जो रेशमी कपड़े दूर २ रहे हों, उनको कई दिन धूप में सुखा लेना पर्य्याप्त है। और जो साधारण असबाब हैं, वह सब जला देना उत्तम है। जो काष्ठ की वस्तु और मकान की चोकाठें आदि हों, उनको भी शुद्ध करना चाहिये, और उसके भीतर कुछ दिन तक हवन करना चाहिये, अर्थात विषनाशक सुगन्धित वस्तु घृत सहित अग्नि में जलानी चाहियें, और वह वस्तु इस प्रकार की होनी चाहिये :—

कर्पूर, चन्दन, धूप, धूप काष्ठ, पित्तपापड़ा, इर्मल, गिलोय, नागकेशर, जायफल, निम्बपत्र, बालछड़, नागर मोथा, मुश्कवाला, बुदाबुदी आदि ॥

"मुफर्रह उलकुलूब" में लिखा है :—

"जब किसी ऋतु में शीतला आरम्भ हो, तो दश वर्ष से न्यून आयु वाले लड़के को जोंक वा सींगी शुश्क से रक्त स्राव करें। विरेचन देवें और आहार में सावधानी रक्खें, और अधिक दूध, मिठाई, मद्य और मांस और बैंगन आदि और खजूर खरपुजा, मधु, अंजीर आदि जो कि उष्ण, रक्त वर्द्धक और रुधिर प्रकुपित करने वाली वस्तुएं हैं न देवें। यदि बालक बहुत छोटा है, यही सावधानी धाय के लिये करें ॥

"आहार ऐसा दें, जोकि प्रकृति को कोमल करे, तीव्र घाम में फिरने, दौड़ने. अग्नि के निकट बैठने से वर्जित रक्खें, और उष्ण वस्तुओं से बचना आवश्यक है, और इस ऋतु में शीतल और अम्ल पदार्थ उत्तम हैं, और मांस कभी २ वह भी शीतल और अम्ल पदार्थों से संस्कृत किया हुआ खाना चाहिये, शर्बत उनाब, शर्बत गाजर, सिकंजबीन, वंशलोचन चूर्ण, और कर्पूर की टिकिया और ऐसी ही अन्य वस्तुएं भी लाभदायक हैं, शीतल जल से स्नान और शरीर पर थोड़ा अश्विनी दुग्ध मलना लाभदायक और अनुभूत है" ॥

"इन उपायों को यदि काम में लाया जाय तो प्रथम तो शीतला ही न निकले, और यदि निकले भी तो अति मृदु हो" ॥

# भावप्रकाश में लिखा है

"जो मनुष्य नीम के बीज, हल्दी, बहेड़ा की मींगी पानी में घोट कर पीता है उस को शीतला नहीं निकलती है, इम्बली के बीज और हल्दी घोट कर पीना भी यही गुण रखता है", अतः रोग के दिनों में इन को पिलाना चाहिये ॥

फिर लिखा है, कि "जब शीतला प्रकट होने वाली हो तो केले वा श्वेत चन्दन का रस, वा अड़ूसा का रस वा मुलहठी का रस वा चंबेली क पत्तों के रस में मधु मिलाकर पीवे तो शीतला मृदु निकले और दूर हो" ॥

**विचित्र लाभः**—रुद्राक्ष जिस की हिंदू माला पहनते हैं, घिस कर पिलाना शीतला से सुरक्षित रहने का अत्युत्तम उपाय है, मात्रा १ चावल पर्य्याप्त है ॥

**तथाचः**—जिस समय बालक उत्पन्न हो तो नाल के रुधिर को बालक के भीतर न जाने देवे, प्रत्युत बाहर को सोंते, क्योंकि हकीम बूअली सेना का कथन है कि यह दूषित रुधिर ही पीछे जोश मारता है, अनविध मोती १२ संख्या को नाभि की ओर डालकर ऊपर से बांधे और काटे और १ दाना मोती का प्रति दिन १२ दिन तक खिलावे तो लिखा है, कि सारी आयु शीतला रोग से सुरक्षित रहे, यदि नाल में न रख सकें तो भी २ सप्ताह तक अवश्य मोती खिलावें, और जहर महुराखताई घिसकर उत्पन्न होने के दिन तालु पर लगाना लाभदायक है ॥

**तथाच**—यदि गर्भ चिन्ह प्रकट हुए पश्चात गर्भिणी को २१ दिन तक रसौंत का जल पिलावें तो बालक प्रायः शीतला रोग से सुरक्षित रहता है, १ माशा रसौंत पानी में घोलकर नथार लें, पर्य्याप्त है ॥

**तथाच**—यदि शीतला के दिनों में १ अनविध मोती गुड़ में लपेट कर बालक को खिलाएं, २ सप्ताह तक तो शीतला से सुरक्षित रहे, और यदि निकले तो क्षुद्र सी ॥

**तथाच**—यदि गर्दभी का प्रसव के प्रथम दिन का दूध बच्चे को पिलावें तो बच्चा शीतला से सुरक्षित रहता है, यदि घोड़ी का दूध लेकर उस में वस्त्र भिगो कर रक्खें और जब आवश्यकता हो तो थोड़ा सा वस्त्र पानी में भिगोकर पिलावें यह भी लाभदायक है, रोग के दिनों में कुछ दिन ऐसा करना चाहिये ॥

यह भी लिखा है,कि शीतला की ऋतु में वा ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में गर्दन की पिछली ओर एक वर्ष के बच्चे को एक, दो वर्ष के बालक को २, तीन वर्ष के बालक को ३ एनम प्रकार दो दिन निरन्तर जोकें लगवादें तो शीतला रोग से सुरक्षित रहें ॥

शीतला के प्रकट होने से पूर्व मुश्कवाला को अर्क तरंजबीन में घिसकर खिलाना लाभदायक है, शर्बत कयोड़ा जिस का योग पीछे वर्णित हुआ शीतला से सुरक्षित रखने का भी काम देता है, यदि रोग के दिनों में प्रयोग करते रहें तो यह दूषित मलों को दस्त द्वारा बाहर निकाल देता है और उत्तम प्राति बन्धक उपाय है ॥

# शीतला का टीका ॥

सम्पूर्ण शिक्षित जगत में इस समय शीतला का टीका प्रचलित है, विचार किया जाता है कि टीका लगाने से दो तीन दाने निकलकर भली भान्ति आराम आता है और पुनः शीतला नहीं निकलती है, भारत वर्ष में इस का प्रचार हुए थोड़ा समय हुआ क्योंकि गवर्नमैंट ने इस को आवश्यक कर दिया है. टीका न लगवाना राजनियमानुसार अपराध है. यह आप लोग सुनकर विस्मित होंगे. कि इंगलैंड में यह इस प्रकार आवश्यक नहीं है जैसा कि भारत वर्ष में. बिलायत में बहुत से और योग्य और प्रसिद्ध नामी डाक्टर टीका के विरुद्ध हैं और वह वर्णन करते हैं कि किसी रोग को दूर करने के वास्ते आरोग्यता को प्राप्त करना चाहिये न कि रोग को, वह इस को एक कल्पना वर्णन करते हैं, परन्तु हमारे हां क्या कोई कहे और पबलिक के सन्मुख रक्खे, क्योंकि टीका तो इस को लगवाना ही पड़ेगा और यदि वह अपने आप को टीका नहीं लगवाता तो उस पर केस चलाया जाता है, एक २ ग्राम में जब वैक्सीनेटर जाता है, नम्बरदार और जैलदार डंडे के बल से लोगों को बताते हैं कि जिस को टीका किया जाता है उस को शीतला नहीं निकलती, और बलात्कार से सब लोगों को एकत्र करके टीका करवा लेते हैं, कई घराने हैं कि जिन्हों ने कभी किसी बच्चे को टीका नहीं कराया है, जिस का कारण यह होता है कि वह बच्चे को उस समय बाहर भेज देते हैं, इन नम्बरदारों, जैलदारों, वैक्सीनेटरों, म्यूनिसिपल कमेटी के सभासदों और पदधिकारियों और हैल्थआफीसरों, आदि किसी से

पूछ लो किसी की स्वानुभूत यह बात नहीं है, कि अवश्यमेव टीका शीतला की चिकित्सा है, अन्धाधुन्ध अनुकरण है, जो एक बार प्रचलित हो चुका उस का अनुकरण कर्त्तव्य माना जाता है, हम यह नहीं कहते कि टीका सर्वथा व्यर्थ है, वा बुरा है, और हम कह कैसे सकते हैं, जब कि हम को परीक्षा का अवसर ही नहीं मिलता है,परंच हम कहते हैं कि यह आवश्यक न हो तो हम लोग स्वयं भी अपनी बुद्धि कदाचित काम में लावें, जो कुछ हमारे वास्ते उचित हो करें, भारतीय लोगों के सन्मुख अद्याऽवधि कभी भी टीका के दोष जताए नहीं गए हैं, विलायत में इतनी पुस्तकें इस विषय के विरुद्ध निकलती और बनाई जाती हैं कि यदि मैं उनका वर्णन करूं तो विस्तार अधिक होजायगा। मैं केवल संक्षेपतः उन लोगों के विचार प्रकट करूंगा, जो साधारण डाक्टरों के नहीं प्रत्युत शिखरवर्त्ती डाक्टरों के हैं। पाठक देखकर विस्मित होंगे कि कितना बुरा टीका माना गया है। हम भी तो मनुष्य हैं, क्यों न हमें भी स्वतन्त्रता दीजावे कि हम इसके सम्बन्ध में अपने लिये स्वयं सोचें। लोगों का और समाचार पत्र वालों का कर्त्तव्य है कि गर्वनमैंट से प्रार्थना करें कि शीतला के टीका को आवश्यक करने वाले राज नियम का संशोधन करे, और हम बड़े सन्मान पूर्वक प्रार्थना करते हैं कि कोई मनुष्य अपने बच्चों के वास्ते बुरा नहीं करना चाहता है। वह समयगया जबकि टीका को लोगों ने विविध बुरे विचारों से लिया था, और इसलिये घृणा करते थे। अब यह विचार सर्व साधारण में है कि टीका अच्छी

वस्तु हैं। सो गवर्नमैंट का कर्त्तव्य पूरा हो चुका अब अवसर देना चाहिये कि जैसा कोई चाहे करे, जबकि प्लेग का टीका आवश्यक नहीं है॥

सब से प्रथम हम टीका के सहायकों के विचारानुसार टीका का सम्पूर्ण वर्णन करते हैं, और तत्पश्चात् हम जो विरुद्ध विचार पेश किये जाते हैं, उनका सार पाठकों के जानने के लिये उद्धृत करेंगे। प्रत्येक का कर्त्तव्य होना चाहिये कि जहां तक इससे संभव है अपने इर्द गिर्द की घटनाओं से दोनों प्रकार के विचारों का ध्यान रखकर अनुसन्धान जारी रखे। जो सज्जन मुझे लिखते रहेंगे मैं उनका अत्यन्त कृतज्ञ हूंगा॥

अंगरेजी में इनौक्यूलेशन (Inoculation) और वैक्सीनेशन (Vaccination) दो शब्द हैं। इनौक्यूलेशन के अर्थ हैं कि किसी रोगी के शीतला के दानों में से मादा लेकर नीरोग मनुष्य के शरीर के भीतर प्रविष्ट करना, सुनते हैं कि यह रीति प्राचीन काल में प्रचलित थी। और भारत वर्ष में एक स्त्री जिसका नाम शीतला था उस ने उसको प्रचलित किया था। और वह सब बच्चों पर मानों माता के समान दयालु थी। इस वास्ते वह शीतला माता प्रसिद्ध हुई, और पश्चात् देवी समझी जाकर उसकी पूजा होने लगी। परन्तु इस बात का खंडन इस प्रकार होता कि यदि शीतला माता आधुनिक "इनौक्यूलेशन" होता है तो टीका आरम्भ होने पर टीका का इस प्रकार विरोध न होता और न ही हम को इसका प्रमाण किसी बात में मिला है। प्रत्युत एक स्थान पर गाय के स्तनों से मादा लेकर टीका लगाने का वर्णन है॥

शीतला का मादा जब मनुष्य शरीर के किसी विशेष भाग में (यथा पिंडली में, कलाई में) प्रविष्ट किया जाय तो दूसरे दिन उस स्थान की रंगत में अन्तर होता है, चौथे पांचवें दिन खराश और कुछ शोथ होती है, और एक साफ़ दाना प्रकट होता है, और क्रमशः बढ़ता जाता है, सातवें दिन लाल घेरा सब ओर प्रकट होता है। नवें दिन आरंभिक ज्वर आरंभ होता है, जिसके ४ दिन पश्चात् सारे शरीर पर शीतला के थोड़े से दाने निकल आते हैं, और गुदे हुए स्थान पर के दाने पीपदार होकर शुष्क होने लगते हैं। जो शरीर पर दाने निकलते हैं। वह निर्बल और संख्या में न्यून होते हैं, जिनका कोई भय नहीं होता है। यह राज नियमानुसार इस वास्ते वर्जित होचुका है, कि इस प्रकार जो शीतला स्वस्थ मनुष्य को निकलती है वह संसर्गिक होती है, और रोग के फैलने का हेतु है। यदि ऐसे स्थान पर शीतला आरंभ हो जैसे कोई पर्वत, वा टापू आदि पर तो इस समय इसको करादेना दोष नहीं है॥

आजकल प्रायः वैक्सीनेशन प्रचलित है। जिसके द्वारा विचार है कि दो तीन दाने निकलर शीतला का प्रभाव नाश होजाता है। वा शरीर के अन्दर इस प्रकार का विष वा शक्ति उत्पन्न होजाती है कि शीतला की व्याप्ति को वह फिर स्वीकार नहीं करती। यदि करती है तो अति न्यून। इन डाक्टरों का कथन है कि शीतला के रोग से वह मनुष्य जिन को टीका नहीं लगा, १० प्रति सैकड़ा मरते हैं। परन्तु जिनको लगाया गया है वह ७ प्रति सैकड़ा मरते हैं। जिससे

प्रगट होता है कि टीका लगाना, लाभदायक और आवश्यक है। यह सारा अनुसन्धान डाक्टर जेनर साहिब का है कि जो इसके आविष्कर्त्ता ख्याल किये गये हैं॥

टीका का वर्णन हम एक डाक्टरी पुस्तक से आवश्यक संशोधनों के पश्चात् उद्धृत करते हैं:—

## वैक्सनिेशन [Vaccination]

गाय के मादा से टीका लगाने को वैक्सनिेशन कहते हैं। जिन स्थानों पर गाय बैल बहुत एकत्र रहते हैं। उन स्थानों में दुग्धवती गायों के स्तनों और आचन पर एक प्रकार की शीतला निकलती है, जिसको वैक्सीना (Vaccina) कहते हैं। कभी २ सारे शरीर में फुंसियां निकल आती हैं, जो एक भयानक और कुत्सित चिन्ह समझा जाता है। यह फुंसियां आकार में कुछ २ नीली, किनारों पर थोड़ी ऊंची और मध्य में दबी हुई होती हैं। इनके निकलने से दूध गाय का घट जाता है। और इन फुंसियों के ही पीब से यह कार्य्य किया जाता है। सन् १७९८ ई० में डाक्टर जेनर साहिब ने इस विधि को प्रकट किया, और उनको यह विचार इस वास्ते उत्पन्न हुआ कि एक गवालिन ने कहा था कि "गाय के स्तनों से मुझको दाने निकल चुके हैं अतः मुझे शीतला नहीं निकली"। आरंभ में उन्हों ने गाय की शीतला का पीब मनुष्य की बाहु में प्रविष्ट किया। थोड़े ही दिनों में जहां टीका लगाया था वहां गाय की शीतला के सदृश दाना प्रकट हुआ। फिर उस दाने से पीब लेकर दूसरे

मनुष्य के लगाया जिस से फिर उसी प्रकार का दाना प्रकट हुआ। इस पीव से उक्त डाक्टर ने सहस्रों मनुष्यों पर इसका प्रयोग किया, और कृतकार्य्य हुए। और जिन मनुष्यों पर इसका प्रयोग हुआ वह लोग शीतला के आक्रमण से सुरक्षित रहे। कहते हैं कि इस आविष्कार के बदले में सरकार अंग्रेजी से डाक्टर साहिब को १ लाख रुपया पारितोषक मिला। जब से यह विधि प्रचलित हुई उस समय से शीतला नहीं निकलती वा न्यून और माडीफाईड अर्थात् हलके प्रकार की निकलती है। इन कृत्रिम दानों को वेरीऔलाईड या वेरी सलाईड के नाम से विख्यात करते हैं। जब उक्त पीव शरीर में प्रविष्ट की जाती है। तो आरम्भिक ज्वर होता है, जो ३, ४ दिन तक रहता है, फिर इस स्थान पर फिंसी निकलती है। इस कर्म्म से शीतला निकल आवे तो संख्या, काल और अवस्था में न्यूनता और दाने छोटे २ होते हैं। दुर्गंधि सर्वथा नहीं होती। और पीप पड़ने का अवसर भी नहीं आता। प्रायः फिंसियां पीव की अवसर में ही शुष्क होजाती हैं। और जो पीव पड़जावे तो छटे सातवें दिन मुरझा जाती हैं। और चपटा, कठोर, नीला, चमकदार छिलके के सदृश खरिंड बंधता है, जिसके उखड़ जाने के पश्चात चिन्ह भी नहीं रहता॥

## टीका लगाने की विधियां॥

टीका लगाने की बहुत सी विधियां हैं, परन्तु सब का तात्पर्य यही है, कि किसी प्रकार गाय की शीतला का मादा त्वचा के आन्तरीय भाग तक पहुंचे॥

प्रथम विधि—बाम हस्त से रोगी की बांह को नीचे की

ओर से पकड़ें ताकि ऊपर वा साम्हने की ओर की त्वचा तन जावे। तत्पश्चात् नश्तर की नोक पर गाय की शीतला का पीब जिसको लिम्फ भी कहते हैं, लेकर डेल्टाइड (Deltoid) (डौले) की मांस पेशी के अन्त में नश्तर की नोक तिरछी करके शनैः २ ऊपर से नीचे की ओर केवल उतना ही प्रविष्ट करें कि जिस में नाम मात्र थोड़ा ही रुधिर निकल आवे। एक क्षण नश्तर की नोक शरीर में रहने दें, ताकि शीतला का पीब भले प्रकार प्रविष्ट होजावे। फिर नश्तर को निकालें और अंगुली से उस स्थान को मलदें। थोड़ा सा रुधिर निकलने से टीकार्क द्रव्य पीब निकल नहीं जाती और नहीं चिकित्सा कार्य में कुछ बाधा पड़ती है। परन्तु जब द्रव्य निकल जावे वा शंका हो ३ स्थान पर हाथ में आधे इंच के अंतर पर इसी प्रकार से लगाते हैं। इस विधि से दाना सुन्दर और गोल निकलता है, और खुरंट अच्छा होता है, परन्तु इस कर्म्म में कठिनता और रोगी को कष्ट होता है और आजकल केवल यह विधि प्रचलित है, कि नश्तर से तनिक सा छिद्र किया, फिर तनिक लिम्फ लेकर उसमें प्रविष्ट करादिया और तीन स्थान पर ऐसा ही कर दिया, जो प्रत्येक मनुष्य सुगमता से कर सकता है किसी टीका लगाने वाले की आवश्यकता ही नहीं। और आजकल तो बहुत ही सहज है॥

दूसरी विधि—सूई से टीका लगाने की है। इसमें बांह को उपरोक्त विधि से पकड़ें और फिर वैक्सिन सूई से इस स्थान पर लम्बी लकीरों में, या प्रति रोधक लकीरों में खुर्च दें। तत्पश्चात् सूई के दस्ता पर लिम्फ लेकर उस स्थान पर मलदें। ध्यान रहे

कि इतना अधिक न छीलें कि रुधिर निकलकर उन्हीं छिन्द्रों में जम जावे। क्योंकि इस प्रकार दाना भली भान्ति नहीं निकलता। केवल चारों ओर किनारे ऊंचे होजाते हैं। और दाना निर्मल, कुत्सित, कुरुप, और शीघ्र टूट जाने वाला होता है ॥

**तीसरी विधिः**—सूई से शरीर में गोदें। और लिम्फ घुमावें। वंगदेश में इसी प्रकार इनाक्यूलेशन करते हैं। परन्तु इस विधि में रोगी को बहुत कष्ट होता है ॥

**चौथी विधिः**—चवन्नी के बराबर स्थान में लिम्फ लगादें, तत्पश्चात् एक पतली छुरी से तिरछा चीरादें और द्वितीय बार फिर लिम्फ लगादें। और इसी प्रकार एक और स्थान पर यही कार्य करें ॥

**पांचवीं विधिः**—सैक्रीफीकटर Sacrfecator वा पच्छने द्वारा चीरादें और गाय की शीतला का जल उन पर मलें।

**छटी विधिः**—प्रथम लार ऐमोनिया से छाला उठावें, तत्पश्चात् त्वचा के रुधिरमय भाग पर लिम्फ लगादें।

नोट—लिम्फ बनाने के आज कल पृथक् कारखाने हो गये हैं, लोगों के सामने अब कट्टी, वच्छियों से नहीं लगाते।

## ठीक टीका लगने के लक्षण।

जब टीका पूर्णतयः लगाया जावे, तो दूसरे तीसरे दिन उस स्थान पर थोड़ा कठोर उभार जिस के चारों ओर कुछ सुर्खी होती है, प्रतीत होता है, और क्रमशः बढ़ता है, पांचवें छटे दिन उभार गोल वा अंडाकार श्वेत नीलपन लिये हुए किनारों पर ऊंचा और मध्य से दबा हुआ काला हो जाता है, सातवें

दिन के अन्त वा आठवें दिन के आरम्भ में एक मंडल ( घेरा ) सब ओर प्रकट होता है, और आठवें दिन भली भांति पूर्ण हो जाता है, फिंसी गोल चमकदार मोती के सदृश किनारे बहुत उभरे और तने हुए, भीतर का पीप साफ, कुछ चिपकने वाला और दाना खाना दार शीतला के सदृश होता है, और एक लाल घेरा उत्पन्न होता है, जो २ दिन बराबर बढ़ता रहता है, और १ इञ्च से ३ इञ्च गोलाई में फैलता है, त्वचा इस स्थान की कठोर और सूज जाती है, कभी २ छोटे २ छाले ( अर्थात् पीब सी ) कठिन स्थान पर निकल आते हैं, और दशवें ग्यारहवें दिन दाने की रतूबत गोल होने लगती है, अर्थात् पीप बनती है, और केन्द्र से रूक्षता और मुर्झाना आरंभ होता है, और शुष्क होने पर भूरी और काली सी फिंसी हो जाती है, चौदहवें पंद्रहवें दिन खुरंड बहुत भूरे और लाल रंग का बंधता है, जो २१ से २५ दिन में उखड़ जाता है, और एक चिन्ह सर्वदा के लिये रहता है, जब टीका कर्म्म से दाना अच्छा उत्पन्न होता है, तब खुरंड के पश्चात् चिन्ह बहुत अच्छी प्रकार दृश्यमान होता है, अच्छे चिन्ह की पहिचान जिस से टीका कर्म्म की सफलता समझी जावे यह है, कि वह चिन्ह गोल और श्वेत, मध्य से दबा हुवा हो, ध्यान से देखें और मध्य से चारों ओर रेखाऐं फैली हुई प्रतीत हों, यदि सब ऐसी बातें प्रकट न हों तो पुनः टीका लगाना चाहिये ॥

---

## कारण जिन से वैक्सीनेशन कर्म्म ठीक नहीं होता

लिम्फ का दूषित और अस्वस्थ होना, टीके के स्थान पर खराश वा दाह होना, ऐसे कारण हैं जिन से टीका का चिन्ह बुरा, और टीका कर्म्म ठीक नहीं होता है, और वैक्सीनेशन का प्रयोजन सिद्ध नहीं होता है, कई वार बिना किसी प्रत्यक्ष हेतु के टीका का चिन्ह अच्छा नहीं होता, जिस से कर्म्म में भूल प्रतीत होती है, इस अवस्था में भी पुनः टीका लगवाना आवश्यक है ॥

## टीका लगाने के साधारण लक्षण ।

वैक्सीनेशन के विशेष स्थान पर जो चिन्ह प्रकट होते हैं, उनका वर्णन हुआ, परन्तु इस कर्म्म के कारण कुछ चिन्ह सारे शरीर पर भी प्रकट होते हैं, गोदने के स्थान पर खुजली तनाओ और पीड़ा होती है, परन्तु जब फिंसी पकने लगे तो हाथ के पठे कठोर और हिलाने से पीड़ा करते हैं, कभी २ शोथ, दाह और सुर्खबादा पीड़ित स्थान पर हो जाता है, कभी २ छाला में घाव वा मृत मांस खंड हो कर खराब हो जाता है, बगल की गिलटियां सूज जाती हैं, आरम्भिक ज्वर नहीं होता, परन्तु अचिरस्थाई ज्वर में उष्णता कभी १०४ दर्जे तक हो जाती है, ऐसी अवस्था में बच्चा अशान्त और रोता है, और कभी २ दस्त लग जाते हैं, जब बच्चा दुर्बल हो और दान्त निकलते हों तो भयानक चिन्ह प्रकट होते हैं, और

कई बच्चों को रोजिओला Raseola ( गुलाबी वर्ण के दाने ) और लिकन Lichen ( छपाकी का भेद ) के निर्मल दाने दृश्यमान हो जाते हैं, जो एक सप्ताह से अधिक समय तक नहीं ठहरते ॥

## लिम्फ के प्राप्त करने की विधि ।

यद्यपि टीका लगाने के लिये लिम्फ कई प्रकार से प्राप्त करते हैं, परन्तु प्रायः बच्चे की बांह पर जब गौ की शीतला के दाने संपूर्णतया निकल आवें तो उस दाने की पीब से टीका लगाते हैं,इस में कुछ सन्देह नहीं है, कि गाय के मादा से प्रथम टीका लगाकर फिर उस टीका से पीब लेकर दूसरे में प्रविष्ट करना, और दूसरे से तीसरे में और फिर इस क्रम से लगाना अच्छी विधि है, और इस प्रकार मादा के पहुंचाने और गो के विशेष शीतला के मादा में कुछ अन्तर नहीं होता, तथापि गाय के स्तन की शीतला से ताजा लिम्फ लेकर टीका लगना उत्तम है, और आजकल सरकार का इसी ओर बड़ा ध्यान है ॥

टीका का ताजा मादा " आईवरी पाइंट (Iuory Pai n अर्थात हाथी दांत के छोटे दस्ता वा खरिंड वा बारीक कांच की नली से लगाते हैं ॥

(क) जब किसी बालक के टीका लगाना चाहें, तो ताजा लिम्फ किसी बच्चे से जिस के टीका उठा हुआ हो लेकर प्रविष्ट करें, परन्तु यह बात हर स्थान पर और हर वार संभव नहीं, इस वास्ते बारीक कांच की नली में मादा भर लेते हैं वा आईवरी पाइंट पर लगाकर रखते हैं, और स्कैब scab)

अर्थात् खारिंड से भी टीका लगाते हैं, सातवें दिन जब लाल घेरा वा दाने के चारों ओर प्रकट हो तो आठवें दिन टीका के लिये लिम्फ इस प्रकार से लें कि दाना की नोक में कुछ छिद्र धीरे से करें, ताकि रुधिर न निकल आवे, इसी पर बस करें दबावें नहीं, एक वसीकल से इतना जल निकलता है जो चार से छः बच्चों तक के लिये पर्य्याप्त होता है, यह जल स्वस्थ लड़के की उस फिंसी से जो खूब उठी हो लेते हैं, दूध पीने वाले बच्चे और कृष्ण वर्ण के बच्चों का लिम्फ जिन की त्वचा मोटी और उत्तम साफ है, गोरे और बड़े लड़कों की अपेक्षा उत्तम समझा जाता है, जब कई बार टीका लगे हों तो एक छोड़े कई दानों से लिम्फ लेते हैं, और इस लिम्फ लेने से न कुछ हानि उस बच्चे को और न उस के टीका को होती है ॥

( ख ) वैक्सीन पेन्ट (Vaccine Paint) हाथी दान्त का दो अढ़ाई इञ्च लम्बी और तिहाई इञ्च चौड़ा एक टुकड़ा होता है, जिस के दोनों सिरे गोल और पतले होते हैं, जब इस के प्रत्येक सिरे पर लिम्फ लगाते हैं तब इस टुकड़े की "चार्जड पाइंट" संज्ञा रखते हैं, जब पाइंट पर लिम्फ लगावें और वह शुष्क हो जावे तो फिर द्वितीय बार मादा लगावें, ताकि लिम्फ की तह चढ़ जावे, जब प्रयोग में इन को लाना चाहें तो पाइंट के एक सिरे को बाष्प वा तनिक जल से आर्द्र कर जिस स्थान पर टीका लगाना है घिसें, इस रीति से दो दिन लिम्फ रह सकता है, और दो दिन के पश्चात् सफलता की पूरी आशा नहीं रहती ॥

(ग) क्रैस्ट (Crest) अर्थात् खुरंड जो स्वयं गिरने को हों बलात्कार से न खैंचे, फिर एक छोटी पीतल की खरल में थोड़े से जल के साथ ऐसा पीसें कि दूध की समान हो जावे. फिर ताजा लिम्फ की नाईं प्रयोग में लावें, इतनी सावधानी रक्खें कि यह सौल्यूशन बहुत पतला और बहुत गाढ़ा न हो जावे, क्योंकि पतला हो जाने से प्रभाव सम्यक्तया न होगा, और गाढ़ सौल्यूशन से उष्ण काल में अत्युग्र प्रभाव और छिल जाना होता है, खरंड में कई सप्ताह तक प्रभाव विद्यमान रहता है, और एक उत्तम खुरंड से दो तीन मनुष्यों का टीका लग सकता है, जो वैसीकल (Vesicle) पहले खराब हो जावे और गोल न हो, अथवा दाने से पीप निकल गई हो, तो ऐसे दाना से खुरंड लेना अच्छा नहीं समझा जाता है ॥

(घ) "कैपिलरी (Capillary) ट्यूब" यह एक कांच की नली है, जो लम्बाई में ३ इञ्च, व्यास में १/२८ इञ्च होती है। इस नली में टीका का मादा भर कर रखते हैं, और इसके भरने की यह रीति है, कि नश्तर वा सूई से वैसिकल में तीन चार स्थान पर छिद्र करके नली के एक सिरे को लिम्फ के निकलने के स्थान पर तिर्छा करके लगावें, ताकि लिम्फ स्वयम नली में आजावे। जब १ इंच नली में लिम्फ भर जावे। तो उसे सीधा करें वा इस प्रकार से झटकादें, कि मादा मध्य भाग में आजावे, फिर उस सिरे को जिस ओर से लिम्फ किया है, दीप की ज्वाला से बन्द करें, क्योंकि दीप की उष्णता से नली का सिरा पिघल कर बन्द होजाता है, फिर नली के दूसरे सिरे को १/२ इञ्च के लगभग एकवार बत्ती की ज्वाला में लेजावें, ताकि जो कुछ

वायु हो वह निकल जावे, । तत्पश्चात् जिस प्रकार पहिले सिरे को बन्द किया था, उसी प्रकार दूसरे सिरे को बन्द करदें। नली के भरने और सिरों के बन्द करने से पूर्व ध्यान रक्खें कि लिम्फ़ जो भरा जावे वह निर्मल हो, रुधिर, पीप, और अपीथीलियल सैल्ज़ की मिलावट कुछ भी न हो, और लिम्फ़ मध्य भाग नली में रहे, सिरे पर न रह जाय, क्योंकि उष्णता से लिम्फ़ जम जावेगा, और निकल नहीं सकेगा, और सिरों को पांच ही मिनट के भीतर बन्द करलें, इस रीति से लिम्फ़ चिरकाल तक नहीं बिगड़ता है। एक दाना से २ वा ३ नालियां भर जाती हैं, और एक नली एक मनुष्य को टीका लगाने के वास्ते पर्याप्त होती है। जब प्रयोग में लाना चाहें, तो दोनों सिरे तोड़ दें, और एक सिरा गोदी हुई जगह पर लगाकर मुख से फूंक दें, वा वैक्सिन सूई के दस्ता की नोक पर फूंकें और जहां लगाना हो मल दें॥

इस प्रकार प्रथम गौ के स्थन से टीका करके और टीका के दानों से फिर आगे टीका करते हैं, वैक्सीनेटर दानों का लिम्फ़ ले रखते हैं, और दूसरी गौ से नहीं लेते । उभार कर दूसरों को करते जाते हैं। परन्तु गौ वा बछड़े की हिंदु लोग प्रतिष्ठा करते हैं, इस वास्ते भैंस के द्वारा टीका लगाया जाता था, परन्तु अब लिम्फ़ तैयार होने लगा है, और महकमा बन गया है, जहां से लिम्फ़ प्रत्येक मनुष्य ताज़ा बताज़ा मंगा सकता है, और उस से टीका कर सकता है। वैक्सीनेटरों के पास यही आती है, और वह कुछ दिन इस से कार्य लेते हैं, जिसके पीछे वह खराब होजाती है॥

# टीका लगाने के नियम॥

६ सप्ताह की आयु से ७ महीने के बालक को जोकि स्वस्थ हो, टीका लगाना हितकर है। उक्त बच्चा त्वचा सम्बन्धी रोग, वा ज्वर, वा आमाशय, वा अंत्रियों के विकार में ग्रस्त न हो, परन्तु जब शीतला रोग सर्व साधारण में फैले तो किसी आयु, का विचार न रक्खें। डेढ़ मास से न्यून आयु वाले बालक वरन उत्पन्न होते ही टीका लगादें। जब बालक दुर्बल हो। और दान्त निकलते हों, तो एक दो वर्ष यदि कोई शंका न हो तो ठहर जावें। यदि टीका में अकृतकार्य्यता हो तो द्वितीय वा तृतीयवार लगावें, कृतकार्य्यता की अवस्था में भी युवा अवस्था में टीका लगाने की आवश्यकता पड़ती है, परन्तु सात २ वर्ष के पश्चात वा प्रति वर्ष टीका लगाना आवश्यक नहीं, एकवार बाल्यावस्था में, एकवार १०-१२ वर्ष की आयु में, और एक युवानी के पश्चात पर्य्याप्त समझा जाता है। कतिपय मनुष्यों में द्वितीयवार इस कर्म्म से कुछ प्रभाव नहीं होता है। और कई मनुष्यों में दाना भली भान्ति उठ आता है, जिससे प्रतीत होता है, कि पहिली वार के कर्म्म में कृतकार्य्यता भली प्रकार नहीं हुई। प्रायः द्वितीय वार टीका करने से वैसिकल शीघ्र उत्पन्न होता है, और पांचवें छटे दिन भरकर आठवें दिन खरिंड बंधकर शीघ्र गिर जाता है। शारीरिक और स्थानीय चिन्ह मृदु प्रकट होते हैं। इस से लोग शंका करते हैं, कि कुछ शारीरिक व्याधियां उत्पन्न होजाती हैं। यथा आतशक, कण्ठमाला, चर्मज रोग, सुर्खबादा, आदि, सो

इन हानियों की निवृत्ति के लिये यह यत्न करें कि क्रिया के पूर्व और पश्चात् औज़ारों को धोकर शुद्ध कर लिया करें। और लिम्फ़ की अवस्था और जिस मनुष्य से लिम्फ़ लें उसकी अवस्था को ध्यान में रक्खें। ऋतु के विचार से अक्टूबर, नवम्बर, और दिसम्बर मास में टीका करवाना हितकर है, वा जब रोग फैलने लगे, और बच्चे की माता की स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना आवश्यक है॥

## टीका लगाने के पश्चात् की चिकित्सा

टीका लगाने के पश्चात् थोड़ी देर तक बाहु को खुला रक्खें, जिससे कि वह स्थान शुष्क होजावे, और तत्पश्चात् ढीली आस्तीन वाला वस्त्र पहिना दें, जिस से कि वह पीड़ित स्थान वस्त्र की रगड़ से सुरक्षित रहे, और धूलि आदि का प्रभाव न हो। ऐसा भी करते हैं, कि कुड़ते की आस्तीनों को बांध दें, और डाक्टरी रूई जो डाक्टरों की दुकान पर बिकती है, लेकर घाव पर रखकर कोमल सा बांधें, मक्खी न बैठे, बच्चे को खुजलाने से वर्जित रक्खें और धूप में खेलने न दें। यदि टीका के स्थान पर दाह हो जावे तो शीतल जल में वस्त्र भिगोकर लगावें, लैड लोशन, घृत, वा मक्खन का प्रयोग करें। पीब निकले तो चावल का आटा छिड़क दें। ज्वर होजाय तो बच्चा को वायु में न निकालें, और एक मृदुविरेचन अरण्ड तैल आदि का दें। सुर्खबादा स्लाफिंग अल्सर ( Sloughiug Ulcer ) आदि रोग हों तो उचित चिकित्सा करें॥

———

# शीतला के टीका का विरोध

भारतवर्ष में शायद शीतला सम्बन्धी अनुसन्धान कभी हुआ ही नहीं है। और अद्यावधि कभी विरुद्ध सम्मतियां पेश नहीं की गई हैं। हों कैसे जबकि टीका यहां अवश्यक है, और यह राज्य-नियमानुसार अपराध है, कि कोई अपने बच्चे को टीका नहीं लगवाता है। आश्चर्य है कि जब विलायत में शीतला का टीका आवश्यक नहीं है, तो भारतीय राज्य नियम उसको क्यों आवश्यक नियत करता है। विलायत में एक प्रबल जनसमुदाय शीतला के टीका के विरुद्ध विद्यमान है, बड़े २ विख्यात डाक्टर पुस्तकें लिखते और बांटते हैं। उनका कथन है, कि शीतला के टीका से शीतला से सुरक्षित रहना भ्रान्ति मात्र हैं। इससे कोई लाभ नहीं प्रत्युत हानि है। रोग स्वास्थ्य से दूर होता है, न कि रोग के दूर करने के वास्ते अन्य रोग उत्पन्न करना चाहिए। विलायत में असंख्य पुस्तकें लिखी गई हैं। सविस्तर मैं वर्णन नहीं कर सकता। मैं संक्षेपतः वर्णन लिखूंगा मेरे इन कारणों और विचारों को आपके सन्मुख रखने का यह तात्पर्य नहीं है, कि मैं इनको ठीक समझता हूं, और मैं स्वयं टीका के विरुद्ध हूं। हम तो न मंडन पुष्टि कर सकते हैं, न खंडन, जब कि हमें तजरुबे का अवसर नहीं है॥

यदि विलायत की नाई टीका यहां भी इच्छानुसार हो, तो हम परीक्षा के पश्चात कुछ कहने को उद्यत हों, जब कि हुक्म से चाहे समझे वा न समझे टीका प्रत्येक को लगवाना पड़ता है, तो क्या कहा जावे। निश्चय कराया जा चुका है कि टीका लाभदायक है।

नंबरदार, चौधरी, जैलदार, तहसीलदार डंडे के बल से वैक्सी-नेटरों के सामने लोगों को ले आते हैं, उनको बलात्कार से निश्चय कराया जाता है कि शीतला का टीका लगाने से तुम्हारे बच्चे को कभी शीतला न निकलेगी। और आश्चर्य है कि शीतला का टीका राज्यनियमानुसार आवश्यक होने पर भी भारतवर्ष के लगभग प्रत्येक भाग में प्रति वर्ष किसी न किसी समय शीतला अवश्य आक्रमण कर जाती है। लोग कहते हैं, कि इतने बड़े २ डाक्टर जिनका वर्णन मैं आगे करूंगा शीतला के टीका को बुरा जानते हैं, वह क्या पबलिक को हानि पहुंचाने के लिये ऐसा कहते हैं ? ऐसा कदापि नहीं। सच्चे हृदय से वह इसको मनुष्य के लिये हानि कारक समझते हैं। माता पिता अपने बच्चों के वास्ते हर प्रकार से भलाई करना चाहते हैं, और अब जब कि सर्वत्र शीतला के टीका के विषय में विचार फैल चुका है, कि यह लाभदायक है, तो इसके न लगवाने वाले को राज्यनियम का अपराधी न समझना चाहिए, लोग स्वयं लगवाएंगे। जो हानिकारक समझते हैं वह अपने विचार से अपने बच्चों के वास्ते यही उत्तम समझेंगे कि वह न लगवावें। न लगवाने वालों की संख्या बहुत ही थोड़ी होगी, और तत्त्ववेत्ता आंखें तुरंत मालूम करेंगी, कि शीतला का टीका लाभदायक है वा हानि कारक ? यदि लाभदायक होगा तो स्वयं वह मनुष्य भी लगावेंगे। और विना किसी राज्यनियम के टीका सर्वत्र प्रचलित रहेगा, जैसा कि अब है। सो हम गवर्नमेंट से बड़े आदर पूर्वक और बड़े बलपूर्वक प्रार्थना करते हैं, कि वह कृपया टीका सम्बन्धी राज्यनियम को शिथल करदे, और यदि

कोई मनुष्य अपने बच्चों के वास्ते टीका हानि कारक समझता है तो उसपर अभियोग न चलाया जाय ॥

अमेरिका और इंगलैंड के बहुत से डाक्टर वर्णन करते हैं, कि हम शीतला के टीका के अत्यन्त विरोधी है, और इस वास्ते कि:—

(१) इससे शीतला नहीं रुकती है और कभी २ रोग उत्पन्न होते हैं ॥

(२) इससे मनुष्य की उत्तम शक्ति जो शोथ के प्रकार के रोगों को रोकती है, कम होजाती है ॥

(३) यदि शीतला की विधिपूर्वक चिकित्सा की जाय तो यह सर्वथा साध्य रोग है ॥

(४) कोई युक्ति नहीं है कि क्यों शीतला को टीका दूर करता है ॥

(५) शीतला का टीका रुधिर को विषयुक्त और अशुद्ध करता है। यह मानों रुधिरप्रवाह में शुष्क पीप का प्रविष्ट करना है, पीप जो कि बुरे घाव से निकलती है, वह जो पुष्ट है, वह सहन करलेते हैं, और प्रकट में स्वस्थ होजाते हैं। अर्थात् टीका से उन को कोई वर्णनीय हानि नहीं प्रतीत होती है, परन्तु निमोनिया, मोती झरा, सुर्ख ज्वर, सुर्खबादा आदि से पीड़ित होते हैं। जब रुधिर अशुद्ध होचुका है, तो वह बहुत से दानेदार रोगों को अब रोक नहीं सकता है ॥

(६) जबतक कि दाना विद्यमान है, टीका शीतला को रोक सकता है। और इसके विरुद्ध इससे शक्तियां अवश्य ही दुर्बल

होजाती हैं, और गले और फेफड़े का शोथ आदि रोगों का भय अधिक होजाता है ॥

(७) शीतला केवल उनको निकलती है जो वस्त्र बहुत पहनते हैं। और स्नान असावधानी से करते हैं। खाते बहुत हैं, और व्यायाम कम करते हैं, यह रुधिर में दूषित मादा के एकत्र होने के कारण होती है, जो अन्तिम फूट निकलता है। अतः जो लोग स्वास्थ्य के नियमों को पालन करते हों उनको शीतला नहीं निकल सकती ॥

## डाक्टर फ्रैड्रिच की सम्मति ॥

डाक्टर फ्राड्रिच रियासत ओहियो (Ohio) के नगर क्लिवलैंड (Claveland) के हैल्थ बोर्ड अर्थात् स्वास्थ्य समिति का प्रधान था। यहां शीतला का बहुत प्रकोप रहा, और किसी प्रकार से फिर शीतला वहां से दूर की गई, यह डाक्टरी रिपोर्ट से भली प्रकार प्रतीत होता है, जो कि उन्हों ने अप्रैल सन् १९०२ में की। हम इस रिपोर्ट को नीचे उद्धृत करते हैं:—

"मुझे इस बात के प्रकट करने में प्रसन्नता है, कि एक २ घर को विधिपूर्वक शुद्ध करने से क्लिवलैंड को शीतला ने सर्वथा छोड़ दिया। २३ अगस्त सन् १९०१ से अप्रैल सन् १९०२ तक एक केस भी शीतला का नगर के अन्दर नहीं हुआ है। बाहिर से सात शीतला-ग्रस्त मनुष्य अवश्य इस नगर में आए थे। यहां सन् १८९८ से शीतला बहुत बुरी

तरह से फैल रही थी। हमें निश्चय था कि शीतला का टीका, और एकान्त वास अर्थात् करंटीन ( Quuranteen ) इसको दूर करने के वास्ते प्रबल हथियार हैं,परन्तु हमारे सब प्रयत्नों के होते हुए यह प्रति वर्ष द्विगुणी होती गई। सन् १९०० में ९९३ केस हुए और १ जूलाई सन् १९०१ से २० जूलाई सन् १९०१ पर्य्यन्त १२३३ केस होचुके थे। इस तिथि को मैं हैल्थ आफिस का आफिसर बनाया गया। जब कि १७ केस उस समय मौजूद थे। वास्तव में मैं सन् १८९९ से इस नगर में नौकर था, और मैं अत्यन्त यत्न पूर्वक शीतला के रोगियों को देखता और कारणादि ज्ञात करने का यत्न करता रहा, इस अवसर में मैंने मालूम किया, कि एक घर में जहां शीतला हुई हमने फार्मल डी हाईड ( घरों की शुद्धि के लिए एक वायु उत्पन्न की जाती है और शुद्धि इस से पूर्णतया हो जाती है ) से उसको शुद्धि किया, और वहां कोई केस नहीं हुआ था। इसके विरुद्ध टीका ने हम को बुरे परिणाम भी दिखलाए थे।

"यथा—कभी टीका के दानों के स्थान में दूषित ज्वर ( तप अफूनती ) हो जाता था, और कभी सर्वथा इसका प्रभाव न होता था। कभी २ कलाई के जोड़ तक बाहू सूज जाता था। इस में मांस के टुकड़े डालर ( रुपया से द्विगुण एक सिक्का अमेरिका का ) के परिमाण के और कभी २ इस से द्विगुण परिमाण के हो जाते, जिन के गिरने पर अति कुरूप घाव होता, जिससे पीप निकलती, और कभी २ ऐसे घाव को दूर करने के वास्ते तीन मास लगजाते और

कभी २ टीका के पश्चात् शरीर का अकड़ना आदि हो जाता ॥

"इन सचाइयों को मैंने मेयर जानसन के सन्मुख रखकर योजना पेश की कि शीतला के टीका को तुरन्त हटा देना चाहिये। और इस के बदले सारे नगर को फार्मल डी हाइड गैस के द्वारा जहां २ शीतला हो चुकी है, शुद्ध कर देना चाहिए, और नगर को साधारणतः भी अच्छी प्रकार शुद्ध करवादेना चाहिए। मेयर (Mayor) ने मेरी सम्माति मे सहमत होकर आज्ञा दी और मुझको हर प्रकार की सहायता दी ॥

"मैंने शुद्धि करने वालों के दो भाग कर दिये, और मैडीकल विद्यार्थियों को इस में रख लिया। प्रत्येक भाग में २० मनुष्य होते, और प्रत्येक मनुष्य के पास फार्मल डीहाईड गैस उत्पन्न करने का यन्त्र था। और इसके अतिरिक्त नियम पूर्वक स्वास्थ्य रक्षा का ध्यान रखने के वास्ते मनुष्य नियत थे। इस प्रकार वह नगर के प्रत्येक भाग को शुद्ध करने लगे। जहां २ कि शीतला हुई थी और उनके साथ के घरों को भी शुद्ध किया जाता था। चाहे उस समय वहां शीतला विद्यमान थी वा न थी। घर का प्रत्येक कोण और छिद्र तक शुद्ध करने का यत्न किया जाता। शीत काल के वस्त्रों का विशेषकर ध्यान रक्खा जाता, क्योंकि वह बन्द के बन्द जर्म्ज़ (रोग कीटाणु) से पूर्ण रक्खे होते हैं। तीन मास इस शुद्धि में लगे। इसका परिणाम बहुत उत्तम हुआ। २१ जुलाई से केवल ७ केस हुए, और अन्तिम केस २३ अगस्त को हुआ" ॥

क्या हमारी गवर्नमेंट भी इस प्रकार की परीक्षा करने की हमको आज्ञा देने के लिए उद्यत है ? हमने कई वार निवेदन किया, कि यदि एक नगर के प्रत्येक घर को अग्नि और सुगन्धित वस्तुओं के द्वारा शुद्ध किया जावे तो महामरी तुरन्त वहां से नष्ट हो जावे। परन्तु कौन सुनता है, नक्कार खाना में तूती की ! चूहों के मारने पर अधिक बल दिया जाता है और दूसरे की सुनने को डाक्टर उद्यत नहीं हैं। शीतला के टीका के बदले इस प्रकार की शुद्धि की परीक्षा करनी चाहिए। यह एक छोटे से नगर में होना अत्यन्तावश्यक है ॥

## डाक्टर जे. डबल्यू. हाज एम. डी. लिखते हैं

"शीतला के टीका का अनुमोदन करने वाले बिना सोचे यह विश्वास करते हैं, कि इससे शीतला का रोग रुक जाता है। परन्तु जहां तक हम केसों की संख्या आदि से अवगत हैं, ऐसा प्रतीत नहीं होता है। निःसन्देह वह थ्यूरी जो पेश करती है, कि कोई रोग एक दूसरे रोग के उत्पन्न करने से दूर हो सकता है, बहुत सी युक्तियां अपने विरुद्ध रक्खा करती हैं। जैनर ( टीका का आविष्कर्त्ता ) के समय से लेकर आज तक बराबर शीतला उन लोगों को होती रही, जो टीका से अपने आपको सुरक्षित समझते हैं, और जब सन् १७९८ में मिस्टर जैनर ने टीका लगाना आरम्भ किया, तो उस ने वर्णन किया कि एक वार सफलता पूर्वक टीका लगाने से आयु भर के वास्ते शीतला नहीं होती, यह

केवल ढकोसला था। अन्यथा प्रत्येक मनुष्य समझ सकता है, कि यह असंभव है। अनुमान कभी नियम नहीं होता। जैनर के समय में ही उसको ज्ञात हुआ कि यह उस की भूल थी, और अब डाक्टर लिखते हैं कि तीन बार टीका लगाना चाहिए" ॥

मौर्निंग ऐडवर्टाइजिंग लण्डन तिथि २४ नवम्बर सन् १८७० में निम्नलिखित रिपोर्ट थी:—

"प्रशिया की सेना में अभी तक शीतला महा भयानक परिणाम निकाल रही है। ३० सहस्र शीतला ग्रस्त रोगी हस्पताल में पड़े हैं" यह सब एक और कई दो बार टीका लगवा चुके थे। टीका लगवाने पर भी रोग ग्रस्त थे॥

---

## डाक्टर जी. एफ. कालब साहिब

जो बवेरिया की सरकारी कमेटी के जन संख्या के सभासद् थे। उन्हों ने कमेटी की ओर से यह विज्ञप्ति दी:—

"बवेरिया देश में जहां कि कई वर्ष से नये उत्पन्न हुए बच्चों के अतिरिक्त कोई भी टीका से बचा हुआ नहीं है सन् १८७१ में शीतला फैली ३०७४२ शीतला के केस हुए और उन में से २९४२९ को टीका लगचुका था। यह रजिस्टरों से पता लगाया गया है" ॥

---

## लण्डन का विख्यात डाक्टरी पत्र 'लिन्सट' १५ जुलाई सन् १८७१ के अंक में लिखता हैः—

"शीतला से प्लेग के समान असंख्य मृत्यु होने लग गई है। गत वर्ष में इंगलैंड और वेलज़ में १० सहस्र जानें इसकी भेट हो चुकी हैं। लण्डन में बड़े दिनों (क्रिसिमसडेज़) तक ५६४१ मृत्यु हो चुकी थीं, और लण्डन में शीतला के हस्पताल के ९३९२ रोगियों में से ६८५४ अर्थात् ७३ प्रति सैंकड़ा टीका लगवाए हुए हैं॥

"यदि मौतें १७½ प्रति सैकड़ा केसों की अनुमान की जावें और मौतें सारे देश में दश सहस्र समझी जावें, तो इस से परिणाम निकलता है, कि १२२००० (एक लाख बाईस सहस्र) उन मनुष्यों पर शीतला का आक्रमण हुआ, जिनको टीका लग चुका था। यह बहुत ही चौंका देने वाली गणना है। क्या हमको आश्चर्य न करना चाहिए जब कि टीका के विरोधी इन गणनाओं को इस रीति के असाफल्य का उदाहरण सन्मुख रक्खें। ऐसे विषयों पर स्पष्टतया लिखना आवश्यक है"॥

## नगर न्युयार्क की हैल्थ डीपार्टमैंट की वार्षिक रिपोर्ट।

सन् १८७०—७१ का निम्न लिखित लेख विचारने योग्य हैः—

"पृथ्वी के बहुत से भागों पर शीतला का बुरी भान्ति

जारी होना, और विशेष कर उन देशों में जहां कि शीतला के टीका का प्रचार चिरकाल से है। और उसका उन मनुष्यों पर आक्रमण करना जिन को सफलता से टीका लगाया जाचुका है, और प्रत्येक आयु के मनुष्य की द्वितीय वार टीका लगाने की आवश्यकता, इस रोग के इतिहास में नई सच्चाइयां हैं, और इस वास्ते अब उचित है, कि अब फिर इस रोग और शीतला के टीका के सम्बन्ध में पर्य्याप्त अन्वेषण किया जावे" ॥

## डाक्टर ए. ऐम. रोज ऐम. डी. ए. ऐम.

जो टरान्टो के स्कूल का विख्यात डाक्टर हुआ है, मौंट्रील की सन् १८९५ की शीतला के विषय में निम्न लिखित लिखता है:—

"जिस ने सूक्ष्मता से मांट्रल की शीतला की अवस्था को देखा है वह परिणाम निकाल सकता है, कि टीका शीतला के दूर करने में सर्वथा व्यर्थ है। हमारे शीतला के हस्पतालों में अनगिणत संख्या उन शीतला के रोगियों की थी, कि जिनको टीका लग चुका था, और बहुत से इन में से मरे, जिनके शरीर पर एक दो चिन्ह शीतला के प्रगट होते थे" ॥

## डाक्टर फ्रैंक पीफोस्टर ऐम. डी.

न्यूयार्क के "मैडिकल जरनल" नामी डाक्टरी पत्र २२ जूलाई सन १८९९ के अंक में लिखते हैं, "चार्लेस रयूटार एम० डी प्रोफैसर स्वास्थ्य रक्षा और मैटीरिया मैडिका ( निघण्टु ) ने एक पुस्तक इटली में टीका के नाम से लिखी है और उसने अत्यन्त विश्वासपात्र अफसरों की सम्मतियों

से सिद्ध किया है, कि शीतला का टीका इस देश में सर्वथा निष्फल रहा है, प्रोफैसर रयूटार अपने निबन्ध की भूमिका में लिखता है, इटली एक ऐसा देश है, जहां भूमण्डल के सर्व देशों से अधिक टीका लगाया जाता है, और हम इसे गणित से सिद्ध कर सकते हैं" ॥

वह फिर लिखता है :—

"हमारे नवयुवकों ( विशेष व्यक्तियों के अतिरिक्त ) को २० वर्ष की अवस्था में अवश्यमेव सेना में भरती होना पड़ता है। जहां कि नियमानुसार टीका लगा हुआ होना आवश्य है"॥

पुनःगवर्नमेंट इटली की गणना को अपने कथन की पुष्टि में पेश करके लिखता है :—

"सन् १८८५, ई० से पूर्व २० वर्ष पहले तक हमारी जाति की व्यक्तियों को ९८-५ प्राति सैंकड़ा टीका लगाया जाता था। मानों १२०० व्यक्तियों में से केवल १८ विना टीका के किसी कारण रह जाते थे। ऐसा होने पर भी शीतला के आक्रमण ऐसे घोररूप से होते रहे हैं कि टीका आरम्भ होने से पूर्व भी घोर न होते थे" ॥

पुनः यह वर्णन करके कि इटली में ३ करोड़ की जन संख्या है और उस में से ९८-२ प्राति सैंकड़ा टीका लगाए हुए सरकारी अफसरों द्वारा वर्णन किये गए हैं, डाक्टर लिखते हैं:—

"सन् १८८७ ई० में १६२४९ मृत्यु शीतला से हुई। सन् १८८८ ई० में १८११०, और सन् १८८९ ई० में १३४१३ मृत्यु हुई" ॥

इटली की सेना का वर्णन करते हुए जिस में गत वर्षों से टीका तीन बार प्रति वर्ष अत्यन्त सफलता से होता रहा है, डाक्टर रियुटार लिखता है:—

"हम ने देखा है. कि वह सैनिक जिन पर टीका के दाने भली प्रकार न उभरे थे इस वास्ते मानो वह सुरक्षित न थे,वह उन सैनिकों की अपेक्षा कम रोगी हुए, जिनको सन्तोष जनक टीका लगचुका था, और सुरक्षित समझे जाते थे, और मृत्यु संख्या भी इन्हीं में अधिक थी, जिनपर कि टीका के दाने भली प्रकार उभर चुके थे। यह राज्य कृत गणना प्रकट करती थी, कि असुरक्षित सैनिकों की अपेक्षा सुरक्षित सैनिक लगभग द्विगुण शीतला रोग-ग्रस्त हुए॥

क्या यह गणना पर्य्याप्त से अधिक सिद्ध नहीं करती कि इटली में टीका का परिणाम बहुत ही बुरा रहा है" ॥

## प्रोफ़ेसर अल्फ्रेड अस्तल वैलस एल्. एल. डी. एफ़. आर. एस

जोकि इंगलैण्ड के प्रसिद्ध वैज्ञानिक और रोगी गणना के परीक्षक होचुके हैं, और जिन्होंने डार्विन के साथ थ्यूरी आफ ऐव्यूल्यूशन का आविष्कार किया था, उन्होंने एक पुस्तक (wonderful Century) में एक अध्याय पूरा शीतला पर लिखा है, वह बताते हैं, कि अप्रैल सन् १८८९ई० में राज राजश्वेरी कीन विक्टोरिया ने एक कमिशन शीतला के टीका के प्रभाव को ज्ञात करने के लिये नियत की थी। इस कमिशन में सब से अधिक विद्वान् प्रसिद्ध डाक्टर और बहुत से अन्य

विद्वान् पुरुष सम्मिलित थे। इस कमिशन ने ७ वर्ष अपनी परीक्षा में व्यय किये और इसकी १३६ अधिवेशन हुये, उन्हों ने २०० साक्षियों को सुना और ६ नगरों के भीतर जहां कि शीतला फैली थी, उसने अनुसन्धान किया ॥

प्रोफैसर वैलेस साहिब ने इस कमिशन की रिपोर्ट को अपने सामने रख कर परीक्षा की है, और उनकी भूलों को जो उन्हों ने इसको सिद्ध करने में कीं, अच्छी प्रकार प्रगट किया है, और जो अधिक इच्छा रखतें हैं, वह इस पुस्तक को पढ़ें उदाहरण के लिये एक दो लेख उद्धृत करते हैं :—

प्रथम उदाहरण लैस्टर का है, कि जहां गत २० वर्ष से टीका का प्रचार न्यून होते २ आजकल सर्वथा ही नहीं रहा, और शीतला लगभग नहीं है। दूसरा उदाहरण जल और स्थल सेना का है, कि जिस में २५ वर्ष से जहां कि प्रत्येक रंगरूट को पुनः टीका लगाया जाता था, चाहे इस को टीका लग ही चुकी हो, शीतला कभी क्यों न निकल चुकी हो, पहिली सेना में २ लाख सेना ऐसी थी जिस को टीका नहीं लग चुका था, और टीका सहायकों के विचारानुसार शीतला का इन पर विशेष प्रभाव होना चाहिये था, दूसरी सेना में २ लाख २० सहस्र मनुष्यों को टीका लगा हुआ था और उन में शीतला इन लोगों के विचारानुसार नहीं होनी चाहिये थी, परन्तु परिणाम इसके विरुद्ध है, शीतला के टीका के अधिक प्रचार के साथ शीतला बढ़ती गई, और स्वास्थ्य रक्षा, शुद्धि और अरोग्यता के नियमों पर ध्यान देनें से न्यून हुई" ॥

इस प्रकार पृष्ठों के पृष्ठ लिखते हुए प्रोफैसर वैलेस वर्णन करते हैं:—

"इस से भी भली प्रकार सिद्ध होता है, कि सब कथन जिन के द्वारा इतने वर्षों तक पबलिक धोखे में रक्खी गई है, और पुनः टीका लगाई हुई सेना को शीतला से सुरक्षित बताना सर्वथा मिथ्या है, सेना कदापि सुरक्षित नहीं रही, कोई बचाव कदापि नहीं रहा है, प्रत्युत छूत लगे तो वह दूसरे लोगों की न्याईं बराबर कष्ट उठाते हैं वरन् उस से भी अधिक" ॥

सन् १८७९ ई० से सन् १८९८ तक १९ वर्ष के भीतर लैस्टर में जहां टीका नहीं लगाया जाता, इतनी थोड़ी मृत्यु हुई, कि रजिष्ट्रार जनरल की गणना से १ प्रति लाख जनसंख्या के वास्ते दर्ज है, यह है पूरा छुटकारा, यह है पूरा बचाव, और यह स्वास्थ्य रक्षा के नियमों पर आरूढ होने, शुद्धि से और टीका के सर्वथा न लगाने से उत्पन्न होता है। नहीं जल और नहीं स्थल सेना इस प्रकार के परिणाम दर्शा सकती है तब प्रोफैसर वैलेस लिखते हैं:—

"अब यदि कोई परिक्षा गणना की होसकती है, तो जल तथा स्थल सेना की गणना की लैस्टर की गणना से तुलना करके सचाई भली भान्ति प्रकट होती है, जनसंख्या सहस्रों थी, समय पर्य्याप्त था, गणना स्पष्ट त्रुटि रहित है, फिर क्यों बारंबार सेना का उदाहरण बता कर प्रयत्न किया जाता है, कि टीका के प्रभाव को सिद्ध किया जावे" ॥

इसके पश्चात् प्रोफैसर वैलेस साहिब ने राजकीय गणना

से सिद्ध किया है कि लैंस्टर में सारे देश से न्यून टीका लगाया जाता है, और उसने फिर बताया, कि इसकी जनसंख्या, सेना से दो तिहाई थी, परन्तु मृत्यु संख्या सेना में इसकी अपेक्षा बहुत अधिक रही है, अतः यह उदाहणर सिद्ध करता है, कि टीका व्यर्थ प्रत्युत सर्वथा निकम्मा सिद्ध हुआ है ॥

प्रोफैसर वैलेस ने लैंस्टर नगर की तुलना में दूसरे नगरों को भी लिखा है, और उनका संक्षेप हम यहां उद्धृत करते हैं ॥

सन् १८७१—७२ ई० में लैंस्टर और बरमिंघम में शीतला बड़े घोर रूप से फैली, दोनों नगरों को उस समय टीका लगाया गया, परन्तु शीतला प्रबल ही रही ॥

| नाम नगर | शीतला के केस प्रति १० सहस्र जनसंख्या | शीतला की मृत्यु प्रति १० सहस्र जन संख्या |
|---|---|---|
| लैंस्टर | ३२७ | ३९ |
| बरमिंघम | २१३ | ३५ |

उस समय से लैंस्टर नगर के लोगों ने टीका लगवाना बन्द कर दिया, जब कि सन् १८९४ ई० में १० सहस्र जनसंख्या के केवल ७ टीका लगवाए हुए थे, और बरमिंघम में प्रति १० सहस्र जन संख्या २४०, मानों लैंस्टर से ३० गुने से भी अधिक, राजकीय वर्णन है कि इस अवसर में लैंस्टर में शीतला १२ बार फैली, परन्तु फिर भी परिणाम निम्न लिखित है:—

लैंस्टर में प्रति १० सहस्र जन संख्या १९ केस १—१ मृत्यु और बरमिंघम में प्रति १० सहस्र जन संख्या ६३ केस और ५ मृत्यु ॥

स्पष्ट है, कि लीसेस्टर में केस ½ और मृत्यु ½ से भी न्यून हुई, बर्मिङ्घम नगर की अपेक्षा जो कि भली प्रकार टीका लगाया हुआ था । इस प्रकार दोनों कथन कि टीका से **प्रथम तो शीतला होती नहीं, और यदि होवे तो न्यून घातक होती है, और हलकी होती है, सर्वथा असत्य प्रमाणित हुए हैं ॥**

इसके पश्चात प्रोफेसर वैलेस ने लीसेस्टर की वारिंगटन नगर से तुलना की है, जो राजकीय गणना के अनुसार ९९.२ प्रति सैकड़ों टीका लगाए हुए था, मानों लगभग सारा नगर टीका लगाए हुए था, परन्तु फिर भी सन् १८९२-९३ ई० के शीतला रोग का परिणाम निम्न लिखित है:—

"अर्थात लीसेस्टर में प्रति १० सहस्र जनसंख्या पर शीतला के केस १९.३ और मृत्यु १.४, जब कि वारिंगटन में केस १२३.३ और मृत्यु ११.४ थीं, इन गणनाओं से प्रतीत होता है, कि वह नगर जो सारा टीका लगाए हुए था, उस में केस ६ गुना और मृत्यु ८ गुना से भी अधिक थीं । इस से भी भली प्रकार प्रमाणित होता है, कि टीका के अनुयाइयों का कथन कि टीका से प्रथम तो शीतला निकलती नहीं और जो निकले तो बहुत साधारण सी निकलती है, दोनों सर्वथा असत्य हैं । यह दोनों परिणाम स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी नियमों के पालन और रोगी से पृथक रहने से प्राप्त हो सकते हैं ॥

इस प्रकार प्रोफेसर वैलेस ने एक नगर के उदाहरण से

जहां के लोगों ने टीका को बुरा जाना, संसार के सन्मुख टीका की बुराई को प्रगट किया। सन् १८७२ में जब लीसेस्टर में घोर शीतला फैली और टीका इतना किया गया, कि सारा दिन वैक्सीनेटरों को विश्राम भी न लेना मिलता था, किन्तु लाभ कुछ न हुआ, तो लीसेस्टर नगर के लोगों ने इस के विरुद्ध आवाज उठाई, और उस वर्ष से टीका बहुत कम वहां लगने लगा, यहां तक कि सन् १८९०—९८ ई० आठ वर्षों के भीतर ५ प्रति सैंकड़ा से भी कम उत्पन्न हुए लड़कों को टीका हुआ, सो २४ वर्ष के भीतर बहुत कम मृत्यु हुई। १२ वर्ष के अन्दर कुल ११ मृत्यु शीतला से बताई गई हैं। लीसेस्टर के लोगों ने टीका को परे फैंक कर स्वास्थ्य के नियमों पर अधिक ध्यान दिया। यद्यपि जन संख्या २ लाख थी, और नगर भी खचाखच बसा था, तथापि इसका परिणाम अत्यन्त सन्तोष जनक हुआ है। लीसेस्टर नगर के हैल्थ आफिसर ने अपने व्याख्यान में नगर के लोगों को इस प्रकार संबोधित किया:—"तुम्हें बहुत लाभ हैं, विशेषतः शीतला के सम्बन्ध में जो कि उन उपायों से जो कि तुमने ग्रहण किये हैं, अपना प्रभाव नगर में नहीं कर सकती, और सब थ्यूरियों को जो वारंवार पेश की जाती हैं, असत्य प्रमाणित कर दिया है। तुलना करो अपने गनर की बर्मिङ्घम, वारंगटन, ब्रेडफोर्ड, वालसाल, ओलढम आदि से, और विचार करो कि किस प्रकार पिछले वर्ष शीतला के आक्रमणों से उन्होंने हानि उठाई, लीसेस्टर की तुलना में यह ऐसे परिणाम हैं, कि मैं तुम्हारा हैल्थ आफिसर उन पर अभिमान कर सकता हूं"॥

# डाक्टर जी० डबल्यू० हाज एम० डी० साहिब लिखते हैं :—

"पुरानी थ्यूरी—स्वास्थ्य रक्षा और शुद्धि के नियमों को एक व्यर्थ विचार ( किसी रोग की छूत स्वस्थ मनुष्यों के शरीर के भीतर प्रविष्ट करने से रोकी जासकती है ) से भला क्या सम्बन्ध है ? और मेरी तुच्छ सम्मति में साइन्स दानों का काम है कि कि इस से घृणा करें ॥

"इस अद्भुत विचार में विश्वास का परिणाम यह है, कि शुद्धि की ओर से लोगों का ध्यान कम है । मूल कारण की ओर से लोगों को असावधान करना, और शीतला के टीका का प्रचार करना बुरा है, और इसने सचाई को हानि पहुंचा दी है, और शुद्धि और स्वास्थ्य रक्षा के नियमों के अत्युत्तम विचार को बढ़ने से रोका है" ॥

इसके स्थान पर कि लोगों के फैमिली डाक्टर लोगों को शिक्षा दें, कि वह स्वाध्य विषयक नियमों पर आरूढ होकर रोग के कारण को ही दूर करदें, वह लोगों को एक शताब्दी से एक भ्रान्ति पर विश्वास करना सिखला रहे हैं कि इस से शीतला का रोग दूर हो जावेगा ॥

**"शीतला और अन्य संसर्गिक रोगों के रोगी से सुरक्षित रहने के वास्ते केवल शुद्धि ही एक उपाय है, ज्यूं २ लोग अपने घरों और**

कमरों को शुद्ध और उत्तम वायुमय रखना, अपनी गलियों और बाज़ारों को कूड़ा करकट से स्वच्छ रखना, अपने जल लेने के स्थान को स्वच्छ और शुद्ध रखना, अपने भोजन को रोगोत्पादक पदार्थों से वर्जित रखना, अपने शरीरों के अन्दर मलों को न बढ़ने देना, खुली वायु में व्यायाम करना सीखते हैं, वह मल संचय जनित रोगों के दासत्व से मुक्त होते जाते हैं ॥

"इस नियम से कोई बचाव नहीं, किस पर यह रोग आक्रमण करते हैं ? जोकि अशुद्ध और मैले हैं । किन स्थानों में यह रोग होते हैं ? जिन में कूड़ा करकट अधिक है, और भयानक हैं । यह रोग किन नगरों में अधिक होते हैं ? वह जिन में स्वच्छता की ओर पूरा ध्यान नहीं किया जाता । सन् १८८५ की शीतला प्रकोप जो मांडले में हुआ, उसका ध्यान करो कि जिस में ३४०० मनुष्य इस रोग से मरे, इस में कौन अधिक मरे ? छोटे दर्जे के बहुत दारिद्र मनुष्य, और बालक जोकि बहुत मरे थे, उनके भरण पोषण का ध्यान नहीं किया, जाता था, जो ऐसे घरों में रहते थे, जोकि रहने वालों से खचा

खच भरे हुए थे, और वायु का आना जाना यथा योग्य न था, और उन गलियों और कूचों में जहां कूड़ा एकत्र रहता है, और जहां स्वच्छता कुछ अर्थ ही नहीं रखती" ॥

जिस को कृतकार्य्य टीका समझा जाता है वह क्या है। केवल स्वस्थ शरीर के भीतर रुग्ण पशुओं के परमाणुओं से विषैली निकली हुई वस्तु को प्रविष्ट करना, जो कि वास्तविक रोग को उत्पन्न करता है। ऐसी क्रियाएं करना भी आधुनिक शल्य चिकित्सा के नियमों के सर्वथा विरुद्ध है। सर्जरी (शल्य चिकित्सा) कहती है, कि शरीर के भीतर से रोग के कारण निकली हुई वस्तुओं को दूर किया जावे, और पुनः कभी प्रविष्ट न किया जावे, वर्त्तमान शल्य चिकित्सक का प्रधान कर्त्तव्य यह होता है, कि घावों की अत्यन्त स्वच्छता से चिकित्सा की जावे, यहां तक कि हाथ भी इस प्रकार के स्वच्छ हों कि स्वच्छ करने के पश्चात् वही किसी अन्य मनुष्य के शरीर से भी न लगे हों। निपुण शल्य चिकित्सक का काम है, कि वह हर प्रकार से यत्न करे कि शल्य क्रिया के समय रोग के कीटाणु वहां विद्यमान न हों और हर प्रकार यत्न करे कि घाव के अन्दर कोई भी सूक्ष्म जर्म्ज (कीटाणु) वा जर्म प्रविष्ट न होने पावें। क्रिया के आदि मध्य अन्त किसी समय भी वह असावधान न हो। शल्य चिकित्सक जर्म्ज़ से ऐसा ही भय रखता है जैसा कि मृत्यु से, फिर क्या शोक का विषय नहीं, कि एक पुराने, युक्ति विरुद्ध, भ्रान्ति मूलक विचारानुसार वह एक स्वस्थ शरीर के अन्दर पशुओं के विषमय जर्म्ज को प्रविष्ट कर देता

है, जो कि पशुओं के रुग्ण अवयवों का निकास है, जो कि स्वच्छता के नियम के सर्वथा विरुद्ध है ॥

"इस स्वास्थ्य विद्या और शल्य विद्या के समय में, इस अयुक्तिक बात पर ध्यान करो कि एक स्वस्थ्य बालक के शरीर के भीतर एक रोगी बछेड़े के घाव से प्राप्त किया हुआ विष प्रविष्ट किया जाता है, इस विचार से कि पैवन्द लगाकर जो रोग उत्पन्न किया गया है, यह एक दूसरे रोग की छूत से बचावेगा, क्या इससे अधिक भी कोई नियम विरुद्ध बात हो सकती है। असंख्य जर्म्ज़ का शरीर के अन्दर प्रविष्ट कर देना और फिर स्वच्छता का विचार। इसी सोसाइटी की स्त्रियां और पुरुष तनिक सोचें" ॥

डाक्टर टी० एस० वैस्टकोट एम० डी० अपनी पुस्तक "बालकों के रोग" (जो कि अमेरिका में टैक्स्ट बुक है) के पृष्ट १९२ पर लिखते हैः—

"टीका के आविष्कर्त्ता जैनर के समय से इस विषय पर कई थ्यूरियां पेश की गई हैं, और कई परीक्षाएं होती रहती हैं, कि टीका से जो रोग उत्पन्न होता है, वह क्या है, और अभी तक कोई एक सम्माति स्थिर नहीं हुई है" ॥

डाक्टर चौवन ने फ्रैंच अकैडिमी आफ़ मैडिसन के सामने अक्टूबर सन १८९१ में एक लैकचर पढ़ा था, जिस में अपने अन्वेषण और निरीक्षणों का वर्णन करते हुए उसने अन्तिम परिणाम निम्न लिखित वर्णन किये थेः—

"(१) टीका के विष से मनुष्य को शीतला नहीं होती है ॥

"(२) शीतला के दानों के विषसे गाय में शीतला के समान दाने नहीं होते"॥

"(३) टीका के दाने कम दर्जे की शीतला नहीं है"॥

बहुत से डाक्टरों का कथन है, कि टीका का रोग एक साधारण प्रकार की शीतला नहीं, प्रत्युत आतशक वत है, और लण्डन के सब से प्रसिद्ध डाक्टर क्रूटन और ई० ऐच० कार्फिक सैंक महोदय ने जो कि लण्डन किंगस कालिज (बादशाही कालिज) में जर्म्ज़ परीक्षा और रोग निदान के प्रोफैसर हैं, इसकी पुष्टि की है। डाक्टर ए० डबल्यु० हिट्टन महोदय का भी कथन है, कि गाय की आतशक के स्वभाव वाली थ्यूरी इस समय सब से उत्तम थ्यूरी पेश की गई है। और टीका के अनुगामी इस का विरोध नहीं कर सकते हैं।

## डाक्टर जम्स मूर आसिस्टेंट डाईरैक्टर नैशनल वैक्सी अस्टैबलिशशमैंट लंडन लिखते हैं॥

यदि गाय बोल सकती, तो बताती, कि जिसको हम VacCination गाय की शीतला कहते हैं, वह इसके साथ उत्पन्न नहीं होती है, वह हम को उत्तर दे सकती है, कि यह मनुष्य का मल है कि जिसने इस के पवित्र स्तनों को दूषित किया, क्योंकि कभी किसी गाय को जिस को केवल उसका ही बच्चा

चूसता हो, और मनुष्य ने दोहने के वास्ते हाथ न लगाये हों, उस को यह रोग अर्थात् गाय की शीतला कभी नहीं होती है ॥

"इनसाईक्लोपीडिया ब्रिटानिका" पहिली बृहद् पुस्तक है, जो संसार में कभी भी लिखी गई है, इस में डाक्टर चार्लिस क्रैटन का टीका पर निबन्ध है, क्योंकि वही इस विषय पर लिखने के वास्ते सब से योग्य समझा गया है। वह लिखता है:—

"गाय की शीतला जिस को कहा जाता है, इस का वास्तविक शीतला से कोई सम्बन्ध नहीं है, प्रत्युत इस से बड़ा रोग है। टीका के दाने सर्वथा आतशक के दानों के सदृश ही नहीं होते प्रत्युत वैसे ही होते हैं" ॥

डाक्टर जे० डबल्यू साहिब लिखते हैं:- "यदि यह बात सत्य है (कि वह मनुष्य जो रोग से दुर्बल हो गये हों वा अधिक परिश्रम से बल हीन हो गये हों, वह स्वस्थों की अपेक्षा शीघ्र छूत को लेते हैं) तो इस से पता लगता है, कि क्यों रोग के दिनों में शीतला प्रथम टीका लगे हुओं पर आक्रमण करती और क्यों सभ्य गजत में शीतला अभी तक विद्यमान है जब कि इस के साथ गन्दगी और रोग स्वच्छ रखने, स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी नियम पालने, और रोगी के पृथक रखने के उत्तम प्रबन्ध के कारण सभ्यता के आते ही दूर हो गए हैं ॥

# उक्त डाक्टर साहिब का कथन

"टीका और शीतला के इतिहास पर ध्यान से सोचने के पश्चात् ३ सहस्र से अधिक मनुष्यों को टीका लगाने के तजुरुबा के पश्चात् मेरा यह निश्चय हो गया है :—

(१) कि ऐडवर्ड जैनर एक लाख रुपया प्राप्त करके मानव सन्तान को रोग और मृत्यु और कष्ट में फंसा गया है॥

(२) कि टीका बहुत सी घातक और बुरे रोग यथा कुष्ट, असाध्य घाव (कैंसर) आतशक शोथ के रोग और गण्डमाला सम्बन्धी रोगों का फैलाने का कारण हुआ है॥

(३) कि टीका न केवल व्यर्थ वरन् हानि कारक है॥

(४) कि टीका शीतला की छूत से बचाने के स्थान में छूत लगने के भय को अधिक कर देता है। क्योंकि यह शक्ति को दबाता है, और स्वाभाविक रोकने वाली प्रकृति को कम करता है॥

(५) कि टीका उस समय प्रचालित किया गया था, जबकि शीतला कम हो रही थी, और शीतला का इनाक्यूलेशन (अर्थात् एक रोगी से दूसरे रोगी में लगाना) उसके कारण से बन्द हो गया, और इस वास्ते शीतला की बृद्धि का एक भारी कारण रुक गया, सो शीतला का कम होते जाना टीका के कारण नहीं है प्रत्युत, इनाक्यूलेशन के बन्द हो जाने का कारण है। वैक्सनिशन के आविश्कार के पहिले इनाक्यूलेशन का बहुत प्रचार था, और बड़े २ डाक्टर एक रोगी से दूसरे में मानों स्वयं ही रोग लगाते थे॥

( ६ ) कि कोई वर्णनीय प्रमाण नहीं है, जो कि सिद्ध करे कि टीका शीतला को रोकता वा इस के प्रकोप को भी कम करता है ॥

( ७ ) कि बहुत से स्वस्थ बच्चे टीका के प्रभाव से मर चुके हैं ॥

( ८ ) लक्षों टीका लगे हुए मनुष्य इस समय तक शीतला से मर चुके हैं ' जब कि इन के शरीर पर टीका के चिन्ह स्पष्ट तथा विद्यमान थे ॥

( ९ ) कि शीतला रोग सर्वदा प्रथम टीका लगे हुओं पर आक्रमण करती है ॥

( १० ) कि शीतला एक अपवित्रता का रोग है, और स्वास्थ्य रक्षा तथा स्वच्छता के नियमों की प्रत्यक्ष असावधानी के पश्चात् उत्पन्न होती है और शीतला का रोग जितनी बार घोर रूपमें फैली है इस का कारण स्वच्छता से उपेक्षा करना है ॥

( ११ ) कि गाय की शीतला और आतशक में बहुत कुछ सादृश्य है । टीका के दाना और आतशक के दाना में इतना सादृश्य है कि भूमंडल के बहुत से योग्य विवेचक गाय की शीतला को एक हलके प्रकार का आतशक समझते हैं, कभी २ टीका के दाने कुपित हो जाते हैं और आतशक के न्याई बहुत सी खराबियां उत्पन्न हो जाती हैं, पहिले २ डाक्टर होबट बोन्न बोस साहिब ने गाय की शीतला और आतशक का सम्बन्ध ज्ञात किया था ॥

( १२ ) और जो कहा जाता है, कि गाय की शीतला स्वयं उत्पन्न हो जाती है, यह नितान्त मिथ्या है । गौ की शीतला इस का स्वाभाविक रोग नहीं है, और यह कभी बैलों और सांडों में उत्पन्न नहीं होती है और न ही छोटी बछड़ियों को जिन को अभी तक दोहा ही नहीं गया । यह दूध देने वाली गायों का रोग है, जो कि इन को दोहने वालों के हाथ के स्पर्श से मिलता है, जो कि आतशक आदि के रोगी हों वा रह चुके हों ॥

( १३ ) कि जब इन सचाइयों को चिकित्सक और सर्व साधारण समझ लेंगे, तो टीका का आवश्यक दोष हम से तुरन्त दूर हो जावेगा ॥

( १४ ) कि लोग जिन के समीप स्वच्छता है और जल प्राप्ति के साधन शुद्ध हैं, आहार उत्तम पुष्टि कारक है, स्वास्थ्य अच्छा है और टीका से उनका रुधिर दूषित नहीं किया जा चुका, उनको खसरा से बढ़कर शीतला का भय नहीं हो सकता है ॥

( १५ ) कि लीलैस्टर इंगलैंड में दूसरे सब नगरों से इस रोग से मुक्त है, और यह वह नगर है जिस में टीका छोड़ दिया गया है, जिस से उस ने सिद्ध कर दिया है, कि संसर्गिक रोगों से स्वच्छता और स्वास्थ्य रक्षा के नियमों के अनुकूल जीवन व्यतीत करने से ही छुटकारा हो सकता है ॥

( १६ ) कि सद्वैद्य काम कर्त्तव्य रोग को उत्पन्न करना नहीं है, प्रत्युत स्वास्थ्य को स्थिर रखना और रोग को नाश करना ॥

"(१७) कि स्वास्थ्य प्राप्ति रोग प्रति बन्धक है और सब के लिये आवश्यक है ॥

"(१८) कोई मनुष्य शीतला की छूत के भय में नहीं कहा जासकता है, जब कि वह पूर्णतयः स्वस्थ है, क्योंकि ऐसी अवस्था रोग के प्रभाव को रोकती और दूर करती है, और इस कारण रोग से सुरक्षित रहने का पूरा साधन है ॥

"(१९) क्योंकि यह कभी आवश्यक नहीं हुआ है, कि स्वस्थ शरीर के भीतर एक रोग के विरुद्ध अन्य रोग को प्रविष्ट किया जावे। यह कर्म्म स्वास्थ्य रक्षा के नियमों के विरुद्ध है। सर्वरोगों की छूत से मुक्ति (छुटकारा) स्वास्थ्य को प्राप्त करने से ही हो सकता है, न कि रोग को उत्पन्न करने से ॥

(२०) कि टीका उन अभिमान युक्त प्रतिज्ञाओं को जो कि जैनर और उसके अनुयाइयों ने की हैं पूरा करने में सर्वथा निष्फल सिद्ध हुआ है। और उसकी निष्फलताओं का वर्णन करने लगें तो एक बड़ी विस्तृत पुस्तक बनजाती है ॥

**(२१) कि टीका इंगलैंड और स्विट्ज़रलैंड में आवश्यक नहीं है। और आवश्यक टीका दासत्व की भांति मानव सन्तान के अस्वत्वों के ऊपर एक प्रत्यक्ष अत्याचार है ॥**

इन हेतुओं से जो ऊपर वर्णन किये गये हैं, डाक्टर हेज साहिब ने अमेरिका में आवश्यक टीका होने का विरोध किया है। जब कि सम्पूर्ण देश आवश्यक टीका के फन्दे से

निकलना चाहते हैं, जब कि डाक्टर इसका आवश्यक होना जुल्म समझते हैं, तो क्या कारण है कि भारतवर्ष को भी टीका के आवश्यक होने से मुक्त न कर दिया जाए? महामरी (प्लेग) का टीका आवश्यक नहीं है, तो भी जिनको आवश्यकता है वह लगवा लेते हैं, अतः इसको भी जो लाभदायक जानते हैं लगवालेगें। जब हमारा राज देश "आवश्यक" शब्द नहीं २ फंदे से मुक्त है, तो क्या कारण है, कि उनका प्यारा भारत वर्ष भी उन्हीं के समान स्वतंत्र न हो!

## डाक्टर रोडरमैंट का अनुभव जो उन्होंने सर्च-लाइट पत्र में लिखा :—

यह विचित्र और उपहास जनक है, इसको पाठक जनों के मनोरंजनतार्थ उद्धृत किया जाता है :—

" २१ जनवरी सन १९०१ सोमवार के दिन साढ़े ग्यारह बजे प्रातःकाल के समय मैं मिस्टर...... के गृह में प्रविष्ट हुआ, जहां कि मिसस्टार्क शीतला से रोगी थी। ज्यूंही मैं गृह में प्रविष्ट हुआ मिस्टर ........ अपनी कुर्सी से उठा और कहा कि हमें आज्ञा नहीं है कि कोई मनुष्य भी यहां प्रवेश करे, मैं ने कहा कि कुछ परवाह नहीं है मैं कोई मनुष्य नहीं हूं, कदाचित तुम ने भूल तो नहीं की, मैं शीतला के रोगी को देखने आया हूं ॥

उसने कमरे के एक कोण की ओर एक युवा स्त्री की ओर संकेत करके कहा, वह वहां है, उसकी स्त्री खिड़की में बैठी कुछ सी रही थी, और दोवर्ष का बालक कमरे में

दौड़ रहा था, मैं ने कहा कि क्या तुम को भय नहीं कि शीतला का प्रभाव तुम पर हो जावेगा ? स्त्री ने उत्तर दिया, नहीं हम को कोई भय नहीं है । मैं ने कहा, परन्तु डाक्टर कहते हैं कि यह संसर्गिक रोग है, उन्हों ने क्या आलस्य और असावधानी नहीं की है कि इस रोगी को अन्य घर वालों से पृथक् नहीं किया है । यह बड़ी भारी शीतला है, तथापि मैं जानता हूं कि तुम को दूसरे से रोग नहीं लगसकता है । इन सिद्धान्तों की परीक्षा के निमित्त मैंने कुछ शीतला के दानों की पीब अपने मुख, हाथों, दाढ़ी, और वस्त्रों पर मल ली, और उनको यह भी बताया कि मैं अब घर में खाना खाने जाता हूं । घर जाकर भी मैंने किसी को नहीं बताया, और खाना खाकर भी विना किसी को बतलाने के दफ़तर में चला गया, प्रथम मनुष्य जो दफ़तर में आया, मेरा पुराना मित्र रैवरैंड टी था, जोकि नार्थ मलवाकी में पादरी था, हमने खूब हाथ मिलाए, मैंने जान बूझकर हाथ मिलाए, मैं जान बूझकर भूल गया था, कि मैं शीतला के विष से भरा हुआ हूं । मैंने उसको एक पुस्तक भेंट की । अब मैंने पबलिक को धोका देने वाली पदार्थ विद्या और टीका के अनुयायिओं के कथनानुसार उस पादरी और पुस्तक को शीतला के जर्म्ज़ ( कीटाणुओं ) से पूर्ण कर दिया था । और उसने फिर सम्भव है कि बहुत से मनुष्यों को रोग पहुंचाया होगा, उन सब मनुष्यों को जिनको वह रेल में और सभाओं में मिला होगा । परन्तु पुस्तक के जर्म्ज़ अभी तक पादरी साहिब के आत्मिक मन्दिर में ही आनन्द ले रहे हैं । उस दिन तृतीय पहर को मैंने कई मनुष्यों के मुख को हाथ

लगाया, और उनकी आंखों की परीक्षा की, परीक्षा करते हुए और ऐनकें लगाते हुए ४ से लेकर ६ बजे तक और ८ से लेकर १० बजे तक। इसी सायंकाल को मैं कलब में गया, जहां कि कई मनुष्यों से मिला, और मेम्बरों से ताश खेलता रहा ॥

सायंकाल को वार्त्तालाप करते हुए प्रातःकाल के देखे हुए शीतला के रोगी का वर्णन आया, एक महाशय ने वादानुवाद करने के पश्चात् कहा कि क्या तुम शीतला के रोगी को देख-कर अपने घर में जासकते हो ? जिस पर मैंने उत्तर दिया कि निस्सन्देह उस प्रकार जिस प्रकार कि साधारण रोगियों को देखकर। तब मिस्टर डिकन्स एक बैंक के कोषाध्यक्ष ने कहा कि डाक्टर ! इस प्रकार गप्प लगाने का क्या लाभ है, एक शीतला के रोगी को देखकर अपने कुटुम्ब में लौटकर सोने की अपेक्षा तुम इसको अधिक उत्तम समझोगे कि तुम को अलग लेकर गोली से मार दिया जाय, पाठकगण ! हृदय, की अवस्था का विचार कर सकते हैं, इनमें से कोई भी तनिक भी विचार नहीं करता था, कि मैं अब भी शीतला की पीपसे दबा हुआ हूं। और ताश के पत्ते जोकि हम खेल रहे थे, उस विष से पूर्ण हैं। अभी तक भी मैंने अपने वहां जाने का वर्णन नहीं किया था। और यह भी विचार था कि फिर कलब को नहीं जाऊंगा, क्योंकि यदि मेरा कर्म जाना जावेगा (मैं इन मित्रों के स्वभावों को जानता था)तो न मालूम क्या बर्ताव करेंगे, और मैं यह भी जानता था कि इनके विचार नितान्त भ्रान्ति मूलक हैं। मैंने इस प्रकार का कार्य्य दर्जनों बार पिछले १५ वर्ष में किया है, और इसके परिणामों को बड़ी सावधानी से

ध्यान में रक्खा है। परन्तु कभी कोई हानि किसी को नहीं पहुंची है॥

अन्तिम उसी सायंकाल को कलब से मैं फिर घर को आया, और अपने परिवार के साथ सोया, और प्रातःकाल उठकर विना हाथ मुह धोने के वही वस्त्र पहिनकर रेल में सवार होकर ग्रीन बे को चलागया, और वहां से प्रातःकाल का भोजन करके मैं मिस्टर ऐम० ए० के गुदाम में गया, जिसने मुझे उसदिन के वास्ते ऐनकें फिट करने के वास्ते कहा हुआ था॥

उसदिन मार्ग में कई मनुष्यों के साथ लगने के अतिरिक्त मैं ने १२७ मनुष्यों के मुखों को छुआ। अगले दिन बुधवार ४९½ घंटों के पश्चात् अपना मुख और हाथ धोए। जब मैं कार्यालय में पहुंचा तो बहुत से समाचार पत्रों के रिपोर्टर पूछने के लिये बैठे हुए थे, कि क्या यह सच था कि मैंने एक शीतला के रोगी को देखकर उस की (शीतला के दानों में की) पीब को अपने ऊपर मल लिया था? मैं चाहता था कि लोगों को ज्ञात हो इस लिये नहीं मैंने इनकार की और न ही हां की. वास्तविक बात यह थी, कि रोगी के एक पड़ोसी ने मुझको घर से बाहर आता देखकर अपने पड़ोसी से पूछा, कि क्या तुमने डाक्टर को बदल लिया है? जो डाक्टर रोडर मंड आप के आया था? अन्तिम मुझे जो कुछ हुआ था सच २ बताना पड़ा, समाचार पत्रों ने सच के साथ झूठ मिलाकर पबलिक को संदिग्ध किया, और यह भी लिखा कि इस प्रकार का कार्य्य करने के पश्चात् डाक्टर ने हम को स्वयं इस बात को अभिमान पूर्वक

बतलाया था। परन्तु मैं कदापि नहीं चाहता था, कि पबलिक को यह बात ज्ञात हो जब तक कि वे ऐसी सचाइयों को सुनने के योग्य न हो जाएं। बुध का सारा दिन मैं स्वेच्छा पूर्वक फिरता रहा, चौथे दिन बृहस्पतिवार को मुझे पृथक् किया गया, और पुलिस गारद का मेरे गृह पर पहरा लग गया। हैल्थ आफिसर, डाक्टर और नगर के पदाधिकारीयों और समाचार पत्रों ने पबलिक को इतना उत्तेजित कर दिया था, कि एक पुलिस अफसर ने मुझको बतलाया, कि अच्छा हुआ कि गारद का पहरा है अन्यथा तुम्हारे प्राणों का भय था॥

शनैश्चर के दिन पहरा के होते हुए भी मैं वापाका से ४० मील तक गाड़ी में चला गया, और वहां से रेल में बैठकर, शिकागो और वहां से टेरी हट्टी को चला गया, और घर को लौटते हुए मैं मलवाकी पर रोका गया, और ४ दिन तक कारन्टीन में रक्खा गया, यह है सम्पूर्ण बृत्तान्त का चिट्ठा जिस से इतना कुलाहल मचा। प्रकट में धार्मिक किन्तु दगाबाजों और पबलिक को धोका देने वालों डाक्टरों ने हर प्रकार से यत्न किया, कि मेरे कर्म से एक भी शीतला के केस का इनको पता लग जावे परन्तु निष्फल। यद्यपि मैं ५० सहस्र लोगों के साथ लगा था, और अपने पीप से भरे हुए हाथों से ११७ मनुष्यों के मुखों को छुआ था, तथापि कुछ भी मेरे विरुद्ध इन को न मिला। थोड़े दिनों में इसी प्रकार की और घटनाओं का वर्णन करूंगा, जोकि गत बर्सों में मेरे साथ हुई और जो इस से भी मनोरंजक हैं॥

'क्यों सहस्रों घातक और धोका देने वाले डाक्टरों में से एक भी उस पारितोषिक को प्राप्त न कर सका, जो इन शब्दों में निरन्तर मुद्रित होता रहा:—

"एक सहस्र डालर उस मनुष्य को दिए जायेंगे, जो यह सिद्ध करे, कि शीतला छूत का रोग है, इन १० सहस्रों के अतिरिक्त १० डालर प्रति दिन उन दिनों के वास्ते दिये जावेंगे, जो इस को सिद्ध करने के वास्ते उसके व्यय होंगे' ॥

"डाक्टर जानते हैं कि भ्रान्ति से लोगों को अधिक वश में रक्खा जा सकता है,सो मैं फिर पूछता हूं कि क्या डाक्टरों की अपेक्षा सर्वसाधारण भी अधिक इसके उत्तर दाता नहीं हैं ? आधे से अधिक पबलिक जानती है, कि शीतला छूत का रोग नहीं है, परन्तु फिर भी वैसा कहने का साहस नहीं करती है । वादानुवाद और युक्तियें वर्त्तमान अवस्था को नहीं बदल सकती हैं, वह इस प्रश्न का कभी निर्णय नहीं करते, क्योंकि राज्य नियम (कानून) और शक्तिमान् लोग, और धन इनकी ओर है । अतः शक्तिमान् पबलिक की उत्कंठा के साथ २ प्राकृत विद्या का सीखना आवश्यक है । जब तक कि तुम पुरानी मिथ्या कल्पनाओं में फंसे हो यह घातक तुम्हारे शरीरों को नष्ट करते रहेंगे क्योंकि इन में धन है । क्या कोई बुद्धिमान् पुरुष विश्वास कर सकता है, कि परमेश्वर ने ऐसे नियम बनाए हैं, कि यदि एक मनुष्य भी एक समय

उन का पालन नहीं करता तो एक घातक रोग सारे देश और जाति के ऊपर फैलाया जावेगा ॥

'सर्व शक्तिमान् परमात्मा पर ऐसा भ्रम करना पाप है' ॥

यह डाक्टर साहिब की अपनी सम्मति है, हम इस से पूर्णतया सहमत नहीं हैं ॥

**डाक्टर ऐम० आर० लोरसन साहिब ने शीतला, गाय की शीतला और उपदंश रोग ( आतशक ) की परस्पर तुलना, की है जिस से प्रकट होता है, कि गाय की शीतला का शीतला की अपेक्षा आतशक के साथ अधिक सादृश्य है ॥**

शीतला को अंग्रेजी में "स्माल पाक्स" और गाय की शीतला को 'कौ पाक्स' और उपदंश को 'सिफलिस' वा 'ग्रेट पाक्स' कहते हैं। डाक्टर साहिब का कथन है कि 'कौ पाक्स' 'स्माल पाक्स' के साथ नहीं प्रत्युत 'ग्रेट पाक्स' के साथ मिलती जुलती है:—

| संख्या | शीतला | गय की शीतला या टीका की शीतला | आतशक |
|---|---|---|---|
| १ | दाने प्रायः त्वचा के ऊपर होते हैं॥ | दाने गहरे त्वचा की पहली तह वा झिल्ली में होते हैं ॥ | दाने गहरे त्वचा की पहली तह वा झिल्ली में होते हैं ॥ |
| २ | दूसरे साधारण शारीरिक चिन्ह दाने निकलने से पूर्व होते हैं, और दाने निकलने पर न्यून हो जाते हैं ॥ | सर्वदा शारीरिक और साधारण चिन्ह दाने निकलने के पश्चात होते हैं ॥ | सर्वदा शारीरिक और साधारण चिन्ह दाने निक-लने के पश्चात होते हैं ॥ |
| ३ | दाना प्रथम इस८ आकार का त्वचा के नीचे होता है, फिर कठोर दाना के आकार में प्रकट होता है ॥ इस के पश्चात छाला होता है और छटे दिन | प्रथम एक कठोर दाने की आकृति, तत्पश्चात छाला आ-ठवें दिन पीपदार १/१० से १/२ इंच व्यास में, गोल, मध्य से दबा हुआ, किनारा कठोर, मध्य में बाल निकला हुआ, नीचे | दाना सर्वदा एक प्रकार, का, फिर कठोर दाना, फिर शीघ्र ही पीपदार बिना छाला बनने के, १/१० से १/२ इंच व्यास, किनारे ऊंचे, मध्य में गहरा, फनल के |

| संख्या | शीतला | गौ की शीतला वा टीका की शीतला | उपदंश |
|---|---|---|---|
| | इस में पीप पड़ती है। यह लगभग १ से ३/१६ इंच लंबा होता है, दाने कई आकार के होते हैं, बेढब ऊंचे प्रायः उनके मध्य कठोरता यदि हो तो बहुत थोड़ी और बड़े घाव होने के कारण इसमें दाह नहीं होती है ॥ | को कोठड़ी दार झिल्ली और बडा. घाव बढ़ने के लिये उत्पन्न होता है ॥ | आकार का, कभी ऊंचे झुके हुए किनारे के साथ मध्य में बाल न निकला हुआ नीचे गोल झिली और बडा घाव बनने के वास्ते ॥ |
| ४ | पीप कई खानों में होता है। एक ऊपर और एक नीचे, गहरा खाना पृथक् झिल्ली के | मवाद एक ही खाना में होता है, जालीदार शीघ्र न उड़ने वाला मवाद और छूत केवल पीड़ित स्थान | म्वाद एक ही खाना में होता है जालीदार शीघ्र न उड़ने वाला मवाद और छूत केवल |

| संख्या | शीतला | गाय की शीतला वा टीका की शीतला | आतशक |
|---|---|---|---|
| | किनारों से मिलता हुआ, छूत का माद्दा यदि कोई हो तो वह वायु में उतर आता है ॥ | के अच्छी प्रकार छूने से लगती है ॥ | पीड़ित स्थान के अच्छी प्रकार छूने से लगती है ॥ |
| ८ | यदि उचित इलाज किया जाए तो शीतला के दानों का कोई चिन्ह नहीं रहता है ॥ | चिन्ह आवश्यक और गहरा होता है ॥ | चिन्ह तो गहरा गाय की शीतला के सदृश होता है, परन्तु आकार में भेद होता है ॥ |
| ९ | शीतला के दानों का लिम्फेटिक सिस्टम पर प्रभाव नहीं होता है ॥ | लिम्फेटिक चैनल के भीतर विष पहुंचाता है, लैंगलटनग्लैंड्ज़ तक पहुंचकर, शोथ, दुर्गन्धि और फोड़ा उत्पन्न करता है । | वही जो गौ की शीतला में होता है । |

| संख्या | शीतला | गाय की शीतला वा टीका की शीतला | आतशक |
|---|---|---|---|
| ७ | वायु द्वारा लगने वाली | वायु द्वारा न लगने वाली | वायु द्वारा न लगने वाली |
| ८ | इनाक्युलेशन (अर्थात् एक दूसरे में पहुंचाने) के योग्य ॥ | इनाक्युलेशन अर्थात् एक दूसरे में पहँचाने के योग्य ॥ | इनआक्यूलेशन के योग्य ॥ |
| ९ | यह महामरी है जो मलिन स्थानों में अधिक होता है॥ | यह केवल विना समय और स्थान के विचार के जिसको लगाई जाए उसको होती है ॥ | यह केवल विना समय और स्थान के विचार के लगाने से लगती है॥ |

स्वास्थ्य प्राप्ति के पश्चात् शीतला ग्रस्त रोगी रोग से मुक्त हो जाता है, चाहे शीतला के चिन्ह विद्यमान भी हों, शीतला कभी टीका वा आतशक से नहीं मिलती प्रत्युत टीका के पश्चात् ऐसी घटनाएं होती हैं,जो कि सर्वथा उनके सदृश्य होती हैं, जो आतशक में द्वितीय अवस्था में प्रकट होती हैं। निम्न लिखित नकशा प्रकट करता है, गाय की शीतला वा टीका के पश्चात् के लक्षण सर्वथा आतशक के लक्षणों के सदृश होते हैं। टीका वा गाय की शीतला जिसको कहा जाता है, उस में इन परिणामों का उत्पन्न होना परिक्षा से सिद्ध हो चुका है॥

## टीका या गाय की शीतला

शीघ्र बढ़ने वाले और मांस को खाने वाले फोड़े, सिर पर छोटे २ दाने, आंख का अत्यन्त शोथ। (Ophthalmia,) इस के कारण से यदि बच्चे के दान्त निकलते हों तो उन में बाधा होती है, और विशेष प्रकार के दान्त जिन को आतशकी दाने कहते हैं, फिर निकलते हैं।

हर प्रकार की जलनदार चमड़ा की फिंसियां बाजरा के दानों के सदृश फिंसियां और छाजन Harpes, हड्डी का शीघ्र टूटना और कठिनता से आराम आना, कभी २ हड्डी का खाए जाना, कभी २ उन्माद गंडमाला Scorfula; कंठ, जिह्वा ओष्ठ पर की झिल्ली पर विशेष चिन्ह जो कि पश्चात घाव हो जाते हैं। इन से आतशक की शंका होती है॥

खांसी, कभी राजयक्ष्मा बढ़ना रुक जाता है॥

## आतशक॥

शीघ्र बढ़ने वाले और मांस खाने वाले फोड़े, सिरपर छोटे २ दाने, आंख का शोथ Noobs इसके कारण यदि बच्चे के दान्त निकलते हों तो उनको रुकावट हो जाती है और विशेष प्रकार के कोमल दान्त जिनको आतशकी दान्त कहते हैं निकलते हैं।

जलनदार फिंसियां, चमड़ा पर Herpes, बाजरा के दाने के सदृश फिंसियां, छाजन Eczemo Caries of Bone हड्डी का खाए जाना, उन्माद Insanity गंडमाला Scorfula कंठ, जिह्वा ओष्ठ पर की झिल्ली पर के विशेष चिन्ह आतशक के हैं जो कि पश्चात घाव हो जाते हैं।

खांसी, कभी राजयक्ष्मा बढ़ना रुकजाता है॥

उपरोक्त लेख से भी यही पता लगता है, कि टीका के दाने और उसके पश्चात के परिणाम आतशक से सम्बन्ध रखते हैं। सो गाय की शीतला जिसको कहा जाता है, वह वस्तुतः दोहने के द्वारा इसको पहुंचा हुआ आतशक है, जो भले चंगे मनुष्यों को लगाकर उनको रोगी किया जाता है ॥

यह हैं संक्षिप्त युक्तियें और हेतु कि जिन से सर्व सभ्य देशों में टीका से विरोध हो रहा है, क्या हम इस योग्य नहीं कि हमको परीक्षा का अवसर दिया जावे, जो टीका के मानने वाले हैं वे गणना को पबलिक के सन्मुख पेश किया करें, यदि टीका अच्छा है तो लोग लगावेंगे, अन्यथा यदि परीक्षाओं के पश्चात वह रोग ही सिद्ध हो, और उसके दूर करने से शीतला की कोई वृद्धि न हो प्रत्युत ह्रास हो, तो उसको दूर किया जाय। इन सबबातों के वास्ते आवश्यक है, कि टीका के आवश्यक होने को हटाया जाय। परन्तु विलायत में टीका आवश्यक होता तो लीलैस्टर नगर का उदाहरण स्थित न हो सकता, अब अन्त में हम

## म्यूनिसिपल कमेटियों की सेवा में

प्रार्थना करते हैं, वह यह है कि भारतवर्ष में टीका के आवश्यक होने पर भी प्रति वर्ष शीतला अपना चक्कर लगाती है। और लगभग कोई भी नगर इससे रहित नहीं होता। इस में कुछ सन्देह नहीं, कि शीतला एक दुर्गन्धि और मलिनता का रोग है, और इस में खमीर पहुंचाने के वास्ते पर्य्याप्त है, कि जैसे आटे में तनिक सा जाग लगाने से उस का खमीर कर सकते हैं, और

इस खमीर को फिर जहां २ लगावें खमीर उत्पन्न किया जा सकता है ॥

और इस पर क्या बस है, मलिनता और दुर्गन्धि से मनुष्यों का रुधिर विकृत हो जाता है। मलिनता और दुर्गन्धि आयु को कम करती हैं। हर प्रकार के रोग के वास्ते शरीर को प्रस्तुत करती है। मलिनता और दुर्गन्धि स्वास्थ्य और आरोग्यता की शत्रु हैं, यही कारण है कि गवर्नमेंट ने हर नगर के साथ म्युनिसिपल कमेटी को शुद्धि का कार्य्य भी सौंप दिया है। परन्तु जहां तक पंजाब के नगरों और भारतवर्ष के अन्य नगरों का प्रायः हमें अनुभव है, हम कह सकते हैं कि कमेटियों का शुद्धि का प्रबन्ध अत्यन्त बुरा है। लाहौर को ही लीजिए; उस भाग के अतिरिक्त कि जहां बाहर अंग्रेज़ रहते हैं, नगर के समीप भी चले आओ तो दूर से दुर्गन्धि आरम्भ हो जाती है, हर गली और हर बाजार में पग २ पर कूड़ा कर्कट और मल के ढेर लगे हुए हैं, मोरियां सर्वथा साफ़ नहीं हैं, न जाने प्रबन्ध कर्त्ता कहां हैं जो इनको यह सारी त्रुटियां दिखाई नहीं देतीं। इतनी गन्दी मोरियां जिस नगर में विद्यमान हों, वहां यदि विविध प्रकार की दुर्गन्धि के रोग फैलते रहें, तो यह आश्चर्य नहीं है। मलादि बाहिर ले जाने के वास्ते पहिले गड्डों ( छकड़ों ) का प्रबन्ध होता था, फिर इतनी उन्नति हुई, कि रेल नगर के चारों ओर घूमती हुई प्रत्येक स्थान से मलादि लेकर बाहिर ले जाती थी। परन्तु उन्नति क्या अवन्नति हुई। दुर्गन्धि आगे से भी बहुत अधिक हो गई। और सच पूछो तो नगर के चारों ओर दुर्गन्धि की सामग्री हो गई थी, अब फिर वही गड्डे जारी हैं,

जो मल लेकर सब बाजारों से गुजरते हैं, गड्ढे चले जाने पर जो भंगी कोठे से उतार कर लाते हैं तो वह अत्यन्त बुरा कार्य्य करते हैं ॥

भंगियों का प्रायः यह नियम हो रहा है, कि वह जितनी गन्दगी इन से सम्भव हो, मोरी के पानी में मिलाते हैं, ताकि उन को द्वितीय बार न उठानी पड़े। मोरी के आगे एक बन्ध लगाया जाता है, ताकि इसके पीछे पानी एकत्र हो जावे, और इस में गन्दगी घोलते हैं, और घोलने के पश्चात उस बन्द को खोल दिया जाता है। यह गन्दगी क्या सारे नगर के स्वास्थ्य को खराब करने के वास्ते पर्य्याप्त नहीं है ? हमारे देश में महामरी रोग बढ रहे हैं, और साथ ही हमारे नगरों की स्वच्छता की यह अवस्था ! क्या पुस्तकें लिखने और शुद्धि तथा स्वास्थ्य रक्षा के विभाग नियत करने से शुद्धि होसकती है ! कदापि नहीं। निरीक्षण के प्रबन्ध की आवश्यकता है। चौक मत्ती में जहां हम पहिले रहते थे, भंगियों को ऐसा करते देखते थे। एक बार कमेटी को लिखा भी था, और यद्यपि कहा गया, कि अवश्य न किया जाएगा, परन्तु वही अवस्था है, जबतक ऐसा करने वाले भंगियों को पर्य्याप्त दंड न दिया जावेगा, दूसरों को शिक्षा नहीं होगी, परन्तु यह तब ही हो सकता है, कि जिन के यह काम अधिकार में है, जो यह पद प्राप्त करने के समय सहस्रों रुपए व्यय करते हैं, वह प्रमाद की निद्रा से जागें, और अपने कर्त्तव्य की ओर ध्यान दें। हमारे पास बाहिर से मिलने वाले वा चिकित्सा कराने वाले भद्र पुरुष जो पधारते हैं, वह लाहौर की सफाई देखकर विस्मित होते हैं। एक बार भांति

दिन कई गलियों में नहर चल जाती है, अर्थात् जो पानी पीछे आता है, उस में कूड़ा कर्कट इतना घोला जाता है, कि वह मार्ग में आकर रुक जाता है, फिर उस समय कोई मोरी से रुकावट हटाने वाला नहीं होता, जिसका परिणाम यह होता है, कि गन्दगी मिला मोरी का पानी इस गली की शुद्धि करता है। मैं कहता हूं कि क्या यह लोग जो अपने कर्त्तव्य को पूरा न करके पबलिक के स्वास्थ्य, अरोग्य, बुद्धि, मस्तिष्क, शक्ति को नष्ट करके इनकी आयु न्यून करने, नाना प्रकार के रोग फैलाने का कारण हैं, परमेश्वर के दरबार में यूंही छूट जावेंगे? कदापि नहीं। ऐसे ही उपालम्भ और नगरों से आते रहते हैं॥

हम केवल निवेदन कर सकते हैं, और करते ही जावेंगे, सुनना न सुनना उनका काम है। मित्रो! कभी तो नगर की गन्दी गलियों में देखो कि कितने ढेर गन्दगी के हर समय लगे रहते हैं, और नहीं तो यह ढेर तो मारे दूर होजाया करें। हमने देखा है, कि कभी २ कूड़ा कर्कट दस २ दिन एक ही स्थान पर पड़ा रहता है। नगर की एक गली भी स्वच्छ बिना ढेरों और दुर्गन्धि युक्त गन्दगी के हमको कोई मनुष्य दिखला देवे तो हम उसके बहुत कृतज्ञ होंगे। क्योंकि हमारे दुःखी हृदय को कुछ तो शांति होगी॥

यह तो है लाहौर का वृत्तान्त। इसके अतिरिक्त जिस नगर में जाओ नगर के भीतर सफाई नाम मात्र भी न होगी देहली यद्यपि राज्य नगर है, और वहां प्रायः अंग्रेज़ों का गमनागमन है, बाज़ारों में वहां तो कुच्छ स्वच्छता है, परन्तु गलियों के भीतर इतनी दुर्गन्धि है, कि त्राहिमाम् ! पहिले मोरियां भूमि के बीच में थीं

जिनको एक नहर बहा लेजाती थी, और अब वह मोरियां ऊपर कर दीगई हैं। लोगों का कथन है कि उस समय से देहली में प्लेग प्रारम्भ हुई है॥

देहली की नालियों जैसी दुर्गन्धि तो कदाचित किसी नगर में नहीं देखी। किसी गली में चले जाओ चलना कठिन है। नाक को दबावे तो थोड़े काल के लिए, जब सारी गली में प्रत्येक स्थान पर दुर्गन्धि हो तो नाक भी क्या दबाया जावे॥

## हे भारतवर्ष के निवासियो !

स्वास्थ्य और आरोग्यता से प्रीति करो, अर्थात् स्वच्छता से प्रेम करो, और यदि तुम्हारी कमेटी शुद्धि नहीं करती है, तो उस के गले का हार हो जाओ तब तुमको सुना जायगा॥

॥ इति ॥

## पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य रचित

### प्रत्येक पुरुष के पढ़ने योग्य वैद्यक पुस्तकें

**सोजाक का वर्णन**—तत्सम्बन्धी व्याख्या उस का कारण निदान और चिकित्सा बहुत उत्तम रीति से अंकित है मूल्य ।॥)

**शीघ्रपतन**—समस्त दुनियां में ९८ प्रति सैंकड़ा से भी अधिक इस रोग में ग्रस्त हैं, कारण यह है कि बुरे व्यसन सम्पूर्ण जगत् पर अधिकार किये हुए हैं, इस पुस्तक में उन की पूर्ण व्याख्या की गई है, और पश्चात् सविस्तर चिकित्सा और सर्व प्रकार के योग भी दिए गए हैं, ताकि प्रत्येक धनी व निर्धन लाभ उठा सकें मूल्य ।-)॥

**डाक्टर लूईकोहनी के चार स्नान**—की पूरी विधि बड़ी योग्यता से संक्षिप्त करके लिखने के पश्चात् उन से प्लेग की चिकित्सा कैसे करनी चाहिये, इसका भी वर्णन किया गया है, मूल्य ≁)॥

**ब्राह्मी**—आज कल ब्राह्मी के तन्द्रा नाशक, मस्तिष्क पौष्टिक, स्मरण शक्ति वर्द्धक प्रमेह नाशक आदि होने को सभी जानने लग गए हैं, और ब्राह्मी बहुत सेवन की जा रही है । इस में ब्राह्मी का पूरा वर्णन करके सेवन करने के असंख्य उपाय लिखे गए हैं, मूल्य -)

**प्रसूत काल**—यह पुस्तक प्रत्येक घर में मौजूद होनी चाहिये और प्रत्येक घर में पढ़कर या सुना कर इस के सम्पूर्ण लेख हृदयस्थ करा देने चाहिये । प्रत्येक दाया को इस से अवगत होना आवश्यक है । इसमें २३ लाभ दायक चित्र हैं । मूल्य ॥=)

**रिसाला ताऊन**—ताऊन के विषय में वैद्यों, हकीमों व डाक्टरों ने आज तक जितना अनुसन्धान किया है, सब इस में अंकित है, स्वास्थ्य रक्षा के प्रत्येक नियम और प्रत्येक औषधि का सविस्तर वर्णन है, इसको पढ़कर किसी अन्य पुस्तक के देखने की आवश्यकता नहीं रहती (छपरही है)

**कोष्ठबद्धता**—मल बद्धता (कबज) के कारण, लक्षण और चिकित्सा बहुत उत्तम रीति से लिखी है, देशी, अंग्रेजी, सब प्रकार की बद्धता नाशक और पाचन कारी औषधियां अंकित हैं । (छप रही है)

# देशोपकारक औषधालय की

## किञ्चित आवश्यक औषधियों के नाम संक्षिप्त गुण और मूल्य ॥

### अमृतधारा ॥

इसकी प्रशंशा पृथक् 'अमृत' नामक पुस्तक में अङ्कित है। और यह इतना प्रसिद्ध है, कि सब जानते हैं, कि अमृतधारा न केवल लग भग सर्व मानुषी रोगों की जो साधारणतः घरों में बूढ़ों, बच्चों, जवानों, पुरुषों और स्त्रियों को होते रहते हैं अचूक इलाज है, प्रत्युत पशु पक्षी आदि के रोगों को भी दूर करती है। विचित्र प्रभाव ईश्वर ने भर रक्खा है। रोग नाम की शत्रु है। जहां रोग हो वहां हीं जा पहुंचती है। हर ऋतु में, हर देश में, इसको अपने पास रखकर रोगों के भय से निर्भय रह सकते हैं॥

सब प्रकार का शिर दर्द, कबज, खांसी, पार्श्वशूल (न्योमोनिया), नजला जुकाम, विशूचिका, मन्दाग्नि, अरुचि, अफारा, गुड़गुड़ाहट, मरोड़ परिणामशूल, (दर्द कौलञ), अतिसार, आमातिसार, वमन, मृगी, दन्तपीड़ा व दाढपीड़ा दांतों से रक्त जाना, व पानी लगना, कर्णपीड़ा, कर्णघाव, कर्णखाज, कर्णशोथ, कर्णकृमि, नासिकार्श, नाक में फुन्सियां, नासिका में दुर्गन्ध, छींक नेत्रपीड़ा, फोड़ा, फुन्सी, सब प्रकार के घाव, कान का पकना, रान का लासना, दाद, चम्बल, गला बैठना, मुखशोथ, भिड़ का डंक, खौल का डङ्क, बिच्छू का डङ्क, सर्प का डङ्क, बावले कुत्ते का विष, गले में दर्द, सर्व प्रकार के ज्वर, मूत्रकृच्छ्र, उपदंश गिलटियां, वद्ध, संधिवात, सर्व प्रकार का शोथ, आन्तारिक व बाह्यिक पीड़ायें, चोट से दर्द, बवासीर, मस्तिष्क की निर्बलता, प्लेग, रक्तवमन, राजयक्ष्मा,

प्रसूत, हृद्रोग, कामला, वायगोला, आर्तव सम्बन्धी सर्व रोग, कण्ठमाला (हर्जारां), स्त्रियों का शिर दर्द, गुदभ्रंश, बालरोग, डब्बा रोग, बच्चा का दूध न पीना,, सन्निपात, शिर घूमना, सन्न्यास, कम्प रोग, लकवा, अर्द्धाङ्गवात, शिर की खाज, नेत्ररोग, फोला, बह्मनी, नाखूना, कुकरे, पड़वाल, घ्राणनाश, नकसीर, जिह्वाशोथ, मुख में फुन्सियां, मुख का पकना, ओष्ठशोथ, ओष्ठफुन्सी, दन्तकृमि, मसूढ़ा शोथ, गले पड़ना, स्वरभंग रक्त थूकना, पीब थूकना, छाती का शोथ, फुफ्फुस शोथ, स्तन शोथ, स्तन पीड़ा, आमाशयवात, मतली, यकृत पीड़ा, यकृत बात, जलोदर, कठोदर, पाण्डुरोग, आमातिसार, प्लीहोदर, वृद्धोदर, वायगोला, उदरकृमि भगन्दर, वृक्कद्वैपीड़ा, वृक्कद्वै शोथ, मूत्राशय पीड़ा, मूत्राघात मूत्राशय, की शोथ, अण्डवृद्धि, प्रदररोग, गर्भाशय की शोथ, गर्भाशय की पीड़ा, योगि से पानी निकलना कटिपीड़ा, रिंघनवाय, घुटने का दर्द, एड़ी, पिंडुली, का फूलना, नितम्ब पीड़ा, पित्ती, सर्व प्रकार के रोग, नासूर, सर्व प्रकार की खाज, छपाकी, गुली अर्थात् ओष्ठ का सूजना, बहु स्वेद, अग्नि से जलना, इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि दूर होते हैं ॥

आन्तरिक व वाह्यक दोनों प्रकार से सेवन की जाती है ॥ मात्रा २-३ बूंद है ॥

**मूल्य २॥) फी शीशी दवाई ४ ड्राम। नमूना की छोटी शीशी ॥), २ औंस की शीशी मानो असल से चार गुणा ९), बूंद गिराने वाली शीशी जिससे जितने बूंद चाहो गिरा लो ४ ड्राम २॥।) मिलने का पताः—कारखाना 'अमृतधारा' लाहौर ॥**

आबेहयात—"अमृतधारा" की नक़ल है। प्रायः विज्ञापनबाजों ने नक़लें आरम्भ करदी है, और लोग अल्प मूल्य देख कर मंगवाते हैं। इस लिए यह नक़ल बनाकर रक्खी है, जो इन नक़ालों से फिर भी अच्छी होगी। असल व नक़ल का फ़र्क दिखा देगी ॥

मूल्य फी शीशी ॥।)   नमूना की छोटी शीशी ।)

# पुरुषों के विशेष रोगों की औषधियां

**अकसीर नं १ महत् बाजीकरण औषधि**—बहुतसी वीर्य्य वर्द्धक, उत्तेजक औषधियों का संग्रह है। नपुंसकता की सम्पूर्ण अवस्थाओं में हितकर है, यह पुरुषों के गुप्त रोगों के वास्ते जनरल औषधि है। नपुंसकता के अतिरिक्त वातज रोग, कफज रोग, खांसी, नज़ला, जुकाम, कटि पीडा, सन्धिवात को हितकर है। शुक्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्न दोष को बहुत लाभदायक है। प्रभाव किञ्चित उष्ण है। मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २), नमूना ८ गोली ॥), मात्रा १ गोली सायम् प्रातः ॥

**अकसीर नं. १०**—बलवर्द्धक है, प्रत्येक जाड़े में एक मास खा छोड़ने से कभी बल कम न होगा। नामर्द भी मर्द होजाते हैं। बूढ़ों को युवा बनाती है। मात्रा १ गोली सायम् प्रातः। मूल्य जिसमें कस्तूरी पड़ी हुई है। ६४ गोली ४), ३२ गोली २), नमूना ८ गोली ॥), जिसमें कस्तूरी नहीं पड़ी परन्तु धातुपुष्ट शेष सब औषधियां वही हैं ६४ गोली २), ३२ गोली १), नमूना ८ गोली ॥)

**अकसीर नं ११**—हृदय, मस्तिष्क, यकृत, आमाशय, मूत्राशय, को पुष्टिदायक है। आनन्दवर्द्धक है। शीघ्रपतन, शुक्रमेह स्वप्न दोष को हितकर है। याकूती का भी काम देती है। ताऊन के दिनों में खाने से मानसिक बल स्थिर रहता है। और बड़ा गुण करती है। उत्तेजक है, अमीरों के खाने योग्य, प्रत्येक प्रकृति के अनुकूल, इसका प्रधानांश स्वर्ण है, मूल्य ६४ गोली १०), १६ गोली २॥), नमूना ४ गोली ॥=)

**अकसीर नं. १५ मकरध्वज**—वैद्यक औषधियों का यह राजा माना जाता है। इसका प्रधान अंश चन्द्रोदय है। जिसका बनाना नितान्त कठिन है। इसके खाने से ही असली जवानी आती है। वीर्य्य को सन्तानोत्पत्ति के योग्य बना देता है। वीर्य्यसम्बन्धी सर्व रोग पूर्णतयः दूर होजाते हैं। राजे

महाराजे सदैव इसको अपने पास रखते हैं, और प्रायः खाते हैं, जिसको खरीदने की सामर्थ्य है, उसको अन्य औषधि की आवश्यकता ही क्या है । मूल्य ५०) फी तोला, है । फी माशा ४।), मात्रा ४ रत्ती है । प्रतिवर्ष १ तोला खा छोड़ें तो पूर्ण आयु बढावे और बली रखे ॥

**अकसीर नं० १६ बृहद्बंगेश्वर रस**—इसमें स्वर्ण भस्म, चांदी भस्म, मोतीभस्म, कस्तूरी, बंग भस्म, कृष्णाभ्रक भस्म, भीम सेनी कपूर, आदि सम्मिलित हैं । आनन्ददायक, पौष्टिक, और उत्तेजक है । शुक्रमेह तुरन्त दूर होता है । स्वप्नदोष, शीघ्रपतन को गुणकारी है । वीर्य्य गाढ़ा होता और उत्पन्न होता है । २० बीस प्रकार का प्रमेह और बारम्बार मूत्र आना, दूर होता है । जठराग्नि दीपन होती है । अग्नि, बर्ण, बल, वीर्य्य और तेज बढ़ता है । पुराने ज्वरों पर भी देते हैं । हृदय, मस्तिष्क, यकृत को बलदायक है । मूल्य ३२ गोली ४) नमूना ८ गोली १)

**अकसीर नं. २० मनमथ रस**—बूढ़ों को युवा, और युवा को मल्ल बनाने के वास्ते यह योग शिव जी महाराज का निर्म्माण कृत है । उत्तमता यह है, कि तांबा नहीं है । चिरस्थाई लाभ धीरे २ करता है । सदैव खाने में कोई हानि नहीं है । शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्रमेह को दूर करता है, और उत्तेजक है। बम्बई के एक ७० वर्ष के वृद्ध २२ बच्चों के पिता ने मुझे लिखा था, कि युवावस्था के प्रारम्भ से प्रत्येक जाड़े में २ सप्ताह इसको सेवन करता है, और वह अब तक भी पूरी शक्ति रखता है । सन्तानोत्पत्ति के योग्य है । खांसी नजला, जुकाम, श्वास, पांडु, कामला, अपाचन को हितकर है । रक्त उत्पन्न करता है, पौष्टिक, उत्तेजिक, व स्तम्भक है । मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २) नमूना ८ गोली ॥)

**अकसीर नं०२३ दूध घृत पाचक**—इसे १ चावल से १ रत्ती तक प्रकृति अनुकूल नित्य खाने से दूध घृत पचाने की शक्ति दिन प्रतिदिन बढ़ती है। सेरों तक नौबत पहुंचती है। १४ दिन के भीतर पूरा प्रभाव प्रतीत होता है।

४० दिन के भीतर सेरों दूध पचने लगता है । ७० दिन के सेवन से सम्पूर्ण कफज व वातज रोगों को दूर करता है। घी दूध पचाने की शक्ति सदा के लिये बढ़ा देता है। मूल्य ५) रुपये तोला, नमूना ३ माशा १।)

**अकसीर नं० २४, सुखकारक**—स्तम्भक है, शीघ्रपतन रोग वालों को जब तक रोग दूर न हो, कभी २ आवश्यकता पड़ती है । तीसरे पहर दूध के साथ खावें पश्चात् कोई खट्टा, लवणयुक्त वस्तु न खावें, चौगुणा स्तम्भन होता है। मूल्य ३२ गोली २), नमूना ४ गोली ।)

**अकसीर नं. २७ (अब निर्बल न होंगे)**—रति पश्चात् एक दो गोलियां खालीजिये, उदासी दूर, सुस्ती चकनाचूर, बल ज्यों का त्यों ॥ तीसरे पहर खावें तो स्तम्भन हो, नित्य दूध के साथ सायम् प्रात खावें, तो शुक्रमेह शीघ्रपतन को हितकर है। मूल्य ६० गोली १), नमूना ≈)

**अकसीर नं. २८ तैल मालकंगिनी**—कफज वातज रोग नाशक, नपुंसकता, मस्तिष्क की निर्बलता, अस्मृति, शीघ्रपतन, कटिपीड़ा, सर्वांगपीड़ आदि को दूर करता है ॥ करतल पर मलें तो दृष्टिशक्ति को बल देता है । स्तम्भन के वास्ते भी वर्तते हैं। हस्त मथुन निर्बलों को तिला का काम देता है । नसें और पट्ठे दृढ़ होते हैं । मूल्य १) शीशी ४ डराम, नमूना ≈)

**अकसीर नं. ३१, चन्द्रप्रभा वटी**—यह एक वैद्यक योग है, जो त्रिविध नामों से बड़े २ वैद्य बेच रहे हैं। यह मूत्र के साथ शुक्र (मनी आदि) जाने को रोकती है । २० प्रकार के प्रमेह, पथरी, अफारा, शूल, मदाग्नि, अण्डवृद्धि, पाण्डु, कामला, बवासीर, भगन्दर, नासूर, कटिपीड़ा, कास, श्वास, हिक्का, डकार, नजलादि को हितकर है । रज वीर्य्य को शुद्ध करके सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाती है । मात्रा २ गोली सायम् प्रातः । मूल्य ३२ गोली १), नमूना ८ गोली ।)

**अकसीर नं. ३३ आयुर्वेदिक टानिक**—रज वीर्य्य को शुद्ध करके सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाती है । जब कोइ विशेष कारण प्रतिबन्धक न

हो तो स्त्री पुरुष दोनों को गाये के दूध के साथ खिलाना आरम्भ करें। एक दो मास खावें, और प्रत्येक रजोधर्म्म के पश्चात् गर्भाधान करें तो ईश्वर कामना पूरी करे। यह गोलियां उत्तेजक, शुक्रमेह स्वप्नदोष, शीघ्रपात नाशक, शुद्धरक्तोत्पादक स्नायुबल वर्द्धक, सन्धिवात नाशक है, और कटि पीड़ा, गुल्फपीड़, पार्श्वशूल, रानपीड़ा, रींघनबाय, आदि सर्व वातज कफजरोग, प्रमेह, कामला, रक्तक्षीणता, शोथरोग, जलोदर, कठोदर, मूसे का विष, स्त्रियों के मासिक रज की कमी व अधिकता, अन्त्रवृद्धि को हितकर हैं। मधु व पानी के साथ स्थूलता को दूर करती हैं। अंग्रेजी टानिक औषधियों का इस का मुकाबला करो अव्वल दर्जे रहेगी। मात्रा १ गोली सायम् प्रातः प्रकृति अनुकूल न्यूनाधिक कर सकते हैं। मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २), नमुना ८ गोली ॥)

**अकसीर नं. ३४ (क)**—शुक्रमेह (धात जाना) के वास्ते यह अद्वितीय औषधि है, स्वप्नदोष को बहुत शीघ्र दूर करता है। शीघ्रपतन को भी हितकर है। वीर्य्य को गाढ़ा करने में अनुपमेय है। प्राकृत स्तम्भन को बढ़ाती है। मात्रा १ गोली सायम् प्रातः। मूल्य ३२ गोली २), नमुना ८ गोली ॥)

**अकसीर नं. ३४ (ख)**—उपर्युक्त औषधि के भीतर केशर, कस्तूरी, अम्बर, मोती, शिलाजीत, स्वर्ण, चांदी अभ्रकादि भस्में और संयुक्त की जाती हैं, तो यह उपर्युक्त लिखित गुणों के अतिरिक्त हृदय मस्तिष्क, मूत्राशय, यकृत, आमाशय को बल देती है ! उत्तेजना बहुत करती है। अमीरों के खाने योग्य है। मूल्य ३२ गोली ५), १६ गोली २॥) नमूना ८ गोली १)

**अकसीर नं. ३६ (क)**—सुस्त पट्ठों को पुष्ट करने में अद्वितीय है। जिनको केवल उत्तेजना की कमी हो, वह इसका सेवन करें। खाने और लगाने दोनों के काम आता है। उसे पट्ठे पुनर्जीवित होजाते हैं। एक तिनका से लगाकर मक्खन के साथ खाते हैं। जिनको केवल कभी उत्तेजना हो उनको दीजाती है। सुस्त इससे चुश्त होजाते हैं। प्रभाव उष्ण है। वातज कफज रोग, सन्धिवात, गुल्फ पीड़ा, रींघनवाय, श्वास, कफज, कास, स्नायु की निर्बलतादि को हितकर है। मूल्य ५) शीशी ४ डराम, आधी २॥), नमूना ॥)

**अकसीर नं. ३९**—शुक्र जनक है, शीघ्रपतन व वीर्य्यस्राव को दूर करती है। मस्तिष्क के लिये अति लाभदायक है। वीर्य्य को खूब बढाती है, और गाढा करती है। शारीरिक बल अधिक करती है। शीघ्रपतन के लिये विशेष रूप से हितकर है। शुक्रमेह को दूर करती है। लेसदार औषधि होने पर भी काविज़ नहीं है। इसके खाने से प्राकृत स्तम्भन बढता है। मूल्य फी पाव २), आधपाव १), छटांक ॥)

**अकसीर नं. ४० स्वप्नदोष नाशक**—यह औषधि विशेष कर स्वप्नदोष ग्रस्तों के वास्ते है। शुक्रमेह व शीघ्रपतन नाशक है। स्तम्भक भी है। स्वप्नदोषाधिक्य १ मास के भीतरही नष्ट होता है। मूल्य ३२ गोली १), नमूना ८ गोली ।)

**अकसीर नं. ४१ कामिनी वशीकरण**—जो लोग कहते हैं, कि स्तम्भन की कोई औषधि उनको गुण नहीं करती, इसका सेवन करें। ६ गुणा बन्धज होता है। यदि दैनिक यह गोलियां खाई जावें तो शीघ्रपतन दूर होकर सदैवा स्तम्भन उत्पन्न होता है। शुक्रमेह, स्वप्नदोष का मूलच्छेद होता है। पट्ठों को पुष्ट और दृढ करती है। कस्तूरी, सोना, चांदी, मोती, केशरादि इसके प्रधान अंश हैं। ३० गोली २५), ६ गोली ५), १ गोली १)

**अकसीर नं. १८, शिंगगरफ भस्म**—बाजीकरण में अनूपम मानी गई है। पट्ठों को असाधारण बल प्रदान करती है। नपुंसकता दूर करने की बलवान् औषधि है। बूढों की लाठी है। वातज व कफज रोग यथा अर्द्धाङ्ग वात, आर्दितवात, सन्धिबात, शून्यवात, कफजखांसी, मन्दाग्नि आदि को रामबाण है। शुद्धरक्तोत्पन्न करके चेहरे को लाल करता है। मूल्य १ तोला १०), ३ माशा २॥), नमूना १ माशा १), शीतऋतु में अवश्य सेवन करें। दर्जा खास १००) तोला है॥

**अकसीर नं. १९ वंगभस्म दर्जा अव्वल**—यह सवासौ पुट से पहिले शुद्ध की जाती है, फिर भस्म की जाती है। चांदी भस्म भी इसके सामने

कुछ नहीं। शुक्रमेह, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र सोज़ाक, करंह को हितकर है, उत्तजक है। 'मर्द को बंग और घोड़े को तंग' की उक्ति इसी पर ठीक आती है । मूल्य १ तोला १०), ६ माशा ५), नमूना १॥ माशा १।), मात्रा १ रत्ती ॥

**बङ्गभस्म सामान्य**—कलई को साधारण शुद्ध करके बनाया जाता है, गुण लगभग वही हैं जो ऊपर वर्णन किए गए हैं, परन्तु प्रभाव किञ्चित देर से होता है। मूल्य १ तोला २), ३ माशा ॥) मात्रा ३ रत्ती ॥

**अकसीर नं. २५, त्रिधातु भस्म**—यह कलई, सीसा व जस्त की मिश्रित अत्युत्तम पीत रंग की भस्म है। जो प्रदर सोम, शुक्रमेह, आदि को दूर करने, वीर्य्य को गाढा करके प्राकृत बन्धेज (स्तम्भन) उत्पन्न करने में विचित्र औषधि है। मूल्य केवल १ तोला ४), ६ माशा २), नमूना १॥ माशा ॥)

**अकसीर नं. २६, स्वर्ण भस्म अव्वल दर्जा**—पट्ठों को पुष्टि देती है, हृदय, मस्तिष्क, यकृत, वकट्ठ, मूत्राशय, जननेन्द्रिय सब को बल प्रदान करती है। वीर्य्यवर्द्धक और उत्तेजक है । घृत दूध पाचनकारी, अग्निरक्षक है। ३ माशा भी यदि एक बार खा लो, तो वर्षों की गई हुई शक्ति पुनः आजाय शुक्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता, नपुंसकता, स्मरणशक्ति, तथा हृदय की निर्बलता सब दूर हों। मूल्य १ तोला ८०), ३ माशा २०), १॥ माशा १०), ४ रत्ती ४)

**स्वर्णभस्म दर्जा दोयम**—गुण वही हैं, परन्तु किञ्चित् देर में प्रभाव होता है। मूल्य १ तोला ४०), ६ माशा २०), १॥ माशा ५), ४ रत्ती २

**मूंगाभस्म**—पित्त प्रकृति वाले, धातु विकार में ग्रस्तों को दीजाती है। सस्ती किन्तु बडी उत्तम औषधि है पुरानी शिर पीड़ा, मस्तिष्क की निर्बलता, नज़ला, प्रतिश्याय, रक्तवमन, रक्तपित्त को हितकारक है। वीर्य्यकोष, मूत्राशय की गरमी को दूर करती है । मूत्रदाह को भी हितकर है । मूल्य १ तोला, ॥) छै माशा ।)

**संखियाभस्म (दर्जा खास)**—यह भस्म विशेष रूप से बल और उत्तेजना के लिए तैयार की गई है। १४ दिन के भीतर पर्य्याप्त बल आता है।

और ४० दिन के भीतर तो रुकना कठिन होता है, इस के अतिरिक्त सम्पूर्ण वातज कफज रोगों को रामबाण है। बूढ़ों की सहायक है, उनको युवा बनाती है। मूल्य ३ माशा १२), १ माशा ४), नमूना २ रत्ती १), मात्रा खशखाश से १ चावल तक॥

**संखियाभस्म**—वातज, कफज, सन्धिवात, आर्दितवात, अर्द्धांगवात, कफज कास, श्वास, कटिपीडादि को हितकर है, उत्तेजक है। मूल्य १ तोला ५), ६ माशा २॥), १॥ माशा ॥=)

**चांदीभस्म**—धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, हृदय व मस्तिष्क आमाशय की निर्बलता, नपुंसकता, को हितकर है। प्रमेह, हृदय की धड़कन को भी हितकर है। मूल्य १ तोला ८), ३ माशा २), नमूना १॥ माशा १)

**फौलादभस्म शिङ्गरफी**—यह भस्म फौलाद की शिगरफ के द्वारा की जाती है। धातुरोग यथा शीघ्रपतन, वीर्य्यस्राव, शुक्रमेह को दूर करके उत्तेजना को बढाता है। शुद्ध रक्तोत्पन्न करती है। यकृत को बल देती है, रंग की श्वतता को दूर करती है। मूल्य १ तोला १॥), ३ माशा ।=)

**फौलादभस्म, (दर्जा) खास**—यह भस्म असली फौलाद की बड़े परिश्रम से २ वर्ष के भीतर तैयार होती है। सातही मात्रा में नामर्द को मर्द बनाने की शक्ति रखती है। बूढ़े और नपुन्सक भी इस के खाने से सन्तानोत्पत्ति के योग्य हुए हैं। ७ दिन खाकर रोकना कठिन होता है। सदैव तैयार नहीं रहती, क्योंकि एक बार बिक जाने से फिर देर में तैयार होती है। मूल्य ३ माशा १९२), रत्ती १६)

**फौलादभस्म, (दर्जा अव्वल)**—यह असली फौलाद की भस्म भी कई मासों में तैयार होती है। बड़ी बाजीकरण है। शुद्ध रक्तोत्पन्न करके चेहरे को थोडे ही दिनों में लाल करती है। पट्ठों को बल देती है, वीर्य्य सन्बन्धी रोगों को दूर करके नामर्द को मर्द बनाती है। मूल्य १ तोला ५), ६ माशा २॥), १॥ माशा ॥=)

**फौलाद भस्म**—धातु क्षीणता, नताकती, शीघ्रपतनादि को हितकर है, यकृत को बलदायक है, रंग को लाल करती है। मूल्य २॥) तोला, ३ माशा ॥≈)

**मण्डूर भस्म**—यकृत रोग, कामला, पाण्डु रोग, शोथ, जलोदर, मूत्राशय की निर्बलता का हितकर है, और शीघ्रपतन को भी जब कि रोकने वाली शक्ति की निर्बलता के कारण से हो बहुत गुणकारी है। मूल्य १ तोला १॥), ३ माशा ।≈)

**सीसाभस्म**—मूत्रकृच्छ के वास्ते हितकर है। कुर्रह को भी गुणकारी है। मूल्य १ तोला १॥), ३ माशा ।≈)

**अनविधि मोतीभस्म, ( मुरवारीद नासुफ़ता )**—हृद, यकृत, मस्तिष्क को बलदायक, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्रमेहादि निवारक हैं। मूल्य ३०) रु० तोला ३ माशा ७॥), ४ रत्ती १।)

**रस सिन्धूर**—वैद्यक की प्रसिद्ध औषध है। यह रसायन है, उत्तेजक है, इस की वैद्यक ग्रन्थों में बड़ी प्रशंसा लिखी है। विभुक्षित पारा से तैयार कृत का मूल्य २०) तोला है। और शुद्ध पारद से तैयार कृत का मूल्य १०) तोला, शिंगरफ़ से निकाला हुआ पारा से तैयार कृत ५) रु० तोला है॥

**चन्द्रोदय**—यह एक प्रकार का रस सिन्धूर सोना मिश्रित होता है। सर्व औषधियों का राजा है। न केवल धातु सम्बन्धी सर्व रोगों की सर्वोत्तम औषधि है। बरञ्च उचित अनुपान से प्रत्येक रोग में वर्ता जात है। कई घर इस से बस गए हैं। विभुक्षित पारा से तैयार कृत मूल्य १००) रु० तोला, शुद्ध पारद से तैयार कृत २०) रु० तोला है॥

**कौड़ीभस्म**—कान के बहने, मन्दाग्नि, प्लीहा, कफज रोगों को हितकर है। उत्तेजक है, मूल्य ॥) आना तोला॥

**कृष्णाभ्रकभस्म**—सर्व प्रकार के ज्वरों के लिये रामबाण है। लाल रंग का मूल्य ५) रु० तोला, ३ माशा १।)

**श्वेताभ्रकभस्म**--ज्वरों के लिये गुणकारी है। मूल्य १ तोला १),

**गोदन्तीहड़ताल भस्म**--सर्व ज्वरों को हितकर है। बालक से लेकर वृद्ध तक सेवन कर सकते हैं। मूल्य ॥) आना तोला ॥

**श्वेत सुरमा भस्म**--पैत्तिक रोगों में हितकर है। मूल्य ॥) तोला ॥

**संगजराहत भस्म**--कास, राजयक्ष्मा, रक्तवमन, तप, मूत्रकृच्छ्र, और पित्तज रोगों को हितकर है। मूल्य ॥) तोला ॥

**संगयश्बभस्म**--हृद रोग, मदात्यय: उन्माद, और धड़कन को दूर करती है मूल्य १॥) रु० तोला, ६ माशा ॥।)

**जस्तभस्म**--सुरमा की न्यांई लगाने से पानी जाना, धुन्ध, तिमिर, और खाने से सन्धिवात, शीघ्रपतन कासादि को हितकर है। मूल्य १) रु० तोला ॥

**मोतीसीपभस्म**--सोजाक के लिये अनुपम है पुंसत्व वर्द्धक है। कास श्वास को दूर करती है। मूल्य १॥) तोला, ६ माशा ॥।)

**बारहसिंहाभस्म**--सर्व प्रकार की पीडाओं, वातवेदना, पार्श्वशूल, गुल्फ पीडा, संधिवात, वातज शूल को हितकर है। मूल्य १॥) ६ माशा ॥।)

**संगयहूदभस्म**--वृक्क व मूत्राशय के रोगों को हितकर है। पथरी को दूर करती है। वृक्क पीडा को नाश करती है। मूत्रकृच्छ्र को भी हितकर है। मूल्य १॥) तोला ॥

**ज़हरमोहरा खताई भस्म**--विषों को दूर करती है। पैत्तिक रोगों में वर्ती जाती है। हृदय को बल देती है, और बहुत से रोगों को हितकर है। मूल्य आठ आना तोला ॥

**अक़ीक़ भस्म**--जीर्णज्वर, यकृत व हृदय की ऊष्णता, धड़कन, पट्ठों की दर्द, हृदय, मस्तिष्क, वृक्क, मूत्राशय की निर्बलता, मधुमेह और धातुक्षीणता को हितकर है। मूल्य २) रु० तोला, दर्जा अव्वल १०) रु० तोला,

## [अब पुरुषों के विशेष रोग सम्बन्धी तिला ( लिङ्ग तैल ) अंकित होते हैं। ]

**तिला नं० १**—कुछ सुगन्धी युक्त है। बूढ़ों को भी प्रबल बना देता है। उनको विशेष रूप से लाभकारी है। हस्तकारों को और जो शौकिया बल बढाना चाहें, यह तैल हितकर है। नसों और पट्ठों को बल देता है। मूल्य ४ डराम ५) रुपये। एक डराम १।)

**तिला नं० २**—यह वही है जो अकसीर नं० ३६ (ख) में पीछे अंकित होचुका है। जोडों पर मर्दन करने से पीडा बन्द करता है। हस्तकारों ( अर्थात् हस्त मैथुन से जिन की नसें कमजोर होगई हैं ) को बिना उपाड (फुंसी को पूरा लाभ देता है। मूल्य २ डराम १), नमूना ।)

**तिला नं० ३, तिलाय महत्**—हस्तकारों को विशेष रूप से हितकर है। साधारण अवस्थाओं में बहुत गुण करता है। मूल्य ४ डराम १) रुपया, नमूना ≈)

**तिला नं० ४, तिलाय मायूसीन**—यह बड़ा प्रचण्ड है। चर्म का एक परत उतार देता है। परन्तु हस्तकारों की नसों पट्ठों को बहुत शीघ्र ठीक करता है। ४ दिन सेवन से पर्य्याप्त बल आता है। किन्तु खाने की अच्छी औषधि भी साथ हो। क्योंकि तिलाओं के साथ पौष्टिक औषधि का सेवन होना आवश्यक है। निरास रोगियों को इस से लाभ हुआ है। शिथिलता, ध्वजभंग, नपुंसकता दूर करके पूरा बल प्रदान करता है। मूल्य २ डराम ३), नमूना ॥)

**तिला नं० ८, आनन्द वर्द्धक शाही**—इस की प्रशंसा क्या करें, जिस ने एक बार आज़माया इस पर मोहित हुआ। नितान्त आनन्ददायक नितान्त सुगन्धियुक्त, जहां हो महक जावे, एक चावल पर्य्याप्त है, पुरुष स्त्री के आनन्द की कोई सीमा नहीं। मूल्य १२) रु० तोला, ३ माशा ४), नमूना १ माशा १≈)

**तिला नं० ११, ( कामनी द्रावक )**—नं० ८ के गुण हैं, वह अमीरों को है तो यह गरीबों को। एक आध माशा नं० ८ की तरह लेप करके कार्य्य में प्रवृत हों बहुत ही शीघ्र स्त्री...होगी। मूल्य १) है

**सिंहवसा, ( चरबी शेर )**—पीड़ित अंगों पर और सुस्त स्थान पर मलते हैं। इस की मालिश......पर करने से नसें व पट्ठे सबल होते हैं। और मधु मिलाकर इस की मालिश १ घण्टा प्रथम करें, पौष्टिक व अनन्ददायक है। मूल्य १) तोला, ६ माशा ॥)

---

## अब स्त्रियों के रोगों की औषधियां वर्णन करते हैं ॥

---

**प्रदरान्तक लोह**—किसी प्रकार का प्रदर हो, लाल, पीत, श्वेत, इस से दूर होता है। कटिपीड़ा, सोम रोग आदि को हितकर है। मासिक धर्म्म की अधिकता, पीड़ा, बेकायदगी सब दूर करता है। मूल्य ३२ गोली २) रुपया, नमूना ।)

**आर्तव प्रवर्तक ( अर्क मुदर्र हैज़ )**—ऋतुस्राव का कम होना, या न आना, वेदना सहित आना, और तत्सम्बन्धी सर्व रोगों को दूर करके ऋतु को खोलता है। और बल प्रदान करता है। स्त्रियों के लिए टानिक औषधि है। मूल्य ८ औंस २), नमूना १ औंस ॥)

**श्वेत प्रदरौषधि**—स्त्रियों को जो श्वेतपानी जाता है, जिस को ल्यूकोरिया, श्वेतप्रदर, जिरयानुलरहम, सेलानेरतूबतज़नां, सोमरोगादि भी कहते हैं। चाहे किसी प्रकार का और किसी दर्जा का हो, इस से आराम आजाता है। मूल्य २४ मात्रा २), नमूना ८ मात्रा ॥।), साधारणावस्थाओं में ८ मात्रा ही पर्य्याप्त हैं ॥

**कुक्कटाण्डछिलका भस्म**—शुक्रमेह, श्वेतप्रदर दोनों को हितकर है। बाज़ी स्त्रियों को विशेष समय पर पानी बहुत आता है, उस के वास्ते

विशेष रूप से हितकारी है ॥ थोडे दिन स्त्री को खिलावें, तो अक्षत योनि के तुल्य करता है। मूल्य ३) रुपये तोल। ६ माशा १॥), नमूना १॥ माशा।=)

**गर्भ चिन्तामणि**—गर्भिणी के सर्व रोग, ज्वर, कास, अजीर्ण, शोथ, जी मचलाना, वमन, अतिसार, उदरशूल, शीतादि को लाभ करती है। गर्भिणी की कोई भी व्याधि हो इस से लाभ होता है। स्मरण रहे, कि गर्भ की वमन के वास्ते अमृतधारा भी अति हितकर है। मूल्य ३२ गोली २), नमूना ४ गोली।)

**मोतीपाक ( माजून मुरवारीद )**—जिन स्त्रियों को गर्भपात होजाता है, उन को जब गर्भ का पता लगे तो उसी समय इसे आरम्भ करके प्रथम तो पूरे दिनों तक अन्यथा उस मास के अन्त तक जिस में गर्भ गिरता है इस औषधि को खाना चाहिये। अकसीर है, न केवल गर्भ रक्षा करती है, अपितु बालक व प्रसूतः को कई रोगों से सुरक्षित रखती है। मूल्य १ पाव १०) रुपया, आधपाव ५), इस से कम मंगाने का लाभ नहीं है॥

**मीठा फल, ( चमत्कारिक निर्म्माण )**—यह एक विचित्र, संसार को अचम्भे में डालने वाली औषधि है। जब गर्भ होजावे तो २ मास के पश्चात् तीसरे मास जबकि अंग बनते हैं। इस की केवल ३ दिन २ गोली दूध से खिलाई जाती है। अचिंत्य प्रभाव से यह ऐसा करती है, कि पुत्र ही उत्पन्न होता है। चाहे गर्भ के भीतर पुत्र हो वा पुत्री। जिन के पुत्रियां ही उत्पन्न होती हैं, उन के वास्ते विशेष रूप से ईश्वरीय दान है। इस के साथ यह प्रतिज्ञा होती है, कि यदि कन्या उत्पन्न हो तो मूल्य वापस कर दिया जाएगा। यह प्रतिज्ञा इस लिए है, कि नई बात होने से कई लोग विश्वास नहीं करते, और १०) व्यय करने से झिझकते हैं। मूल्य १०)

**अठरा की औषधि, ( ब्रह्मपुत्र रस )**—कतिपय स्त्रियों के सन्तान होकर मर जाती है। जिस को अठरा वा सूखिया मसान कहते हैं।

गर्भाधान से लेकर पूरे दिनों तक और कुछ मास पश्चात् तक इन गोलियों को सायम् प्रातः खिलाया करें और ईश्वर की कृपा से बालक जीता रहता है। मूल्य ७०० गोली १०) रुपया।

**शिक्षित धातृ**—यह औषधि प्रसूत समय देने से स्त्री सुगमता से बालक जनती है। रक्त कम यथावश्यक जाता है। प्रसूत के पश्चात् होने वाले रोग दूर होते हैं। मूल्य १॥), नमूना ॥)

**सुखजनाई**—इस औषधि के केवल कटि पर बांधने से बालक सुगमता से उत्पन्न होता है। मूल्य १) रुपया, जो एक बार को पर्य्याप्त है॥

**गर्भकारकवटी, (हबूबहमल)**—जबकि पुरुष का वीर्य्य ठीक हो, यह गोलियां स्त्री को ऋतु स्नान पश्चात् खिलाई जावें, तो प्रथम ही मास अन्यथा अधिक से अधिक चौथे मास के भीतर ईश्वर की कृपा से गर्भ स्थित होजाता है। मूल्य २८ गोली जो ४ मास को पर्य्याप्त हैं ५) रुपया॥

---

## अब बालकों के रोगों की औषधियों का वर्णन करते हैं॥

---

**बालरोग चूर्ण**—बालकों के प्रायः रोग यथा अजीर्ण, अतिसार, ज्वर, खांसी आदि को हितकर है। प्रत्येक बालकों वाले गृह में रखना चाहिए मूल्य १ औन्स ॥), नमूना =),

**बालकों के डब्बा रोग की औषधि**—बालकों के डब्बा अर्थात् पसली रोग के वास्ते यह औषधि रसायन अर्थात् अतीव गुणकारी है। मूल्य १ तोला ५) रुपये, नमूना २ माशा १)

**शिशुरक्षक. ( अकसीर बचगान )**—यह बालकों के वास्ते टानिक औषधि है। मन्दाग्नि, कोष्ठबद्धता, हरे, पीले, दस्तों का आना, ज्वर, तृषा कृशता, बालक का सूखत जाना, और सदैव रुग्ण रहना, पित्ताधिकता सब दूर होते हैं। ६४ गोली १), नमूना ८ गोली =).

**फूलो फलो**—यह सूखिया मसान की औषधि है। इस को केवल कटि पर मला जाता है, और वहां से महीन २ कृमि निकलते हैं, वही रोग का कारण होते हैं। तीन दिन के भीतर सब कृमि निकल जाते हैं, और वह बालक जो दिन प्रति दिन सूख रहा था, हड्डियां ही हड्डियां दिखाई देती था, अब प्रफुल्लित होता है। मूल्य धनवानों से १००), साधारण से ५), निर्धनों से १) रुपया ॥

## अब विविधि रोगों की औषधियों का वर्णन करते हैं ॥

**उपदंश की औषधि**—उपदंश कठिन रोग है! यदि बेपरवाही का जाय तो पीढियों तक पीछा नहीं छोडता। उपदंश नर तथा मादीन के भेद से दो प्रकार का होता है। नर में गहरे घाव केवल लिंग पर होते हैं। मादीन का विष रक्त में प्रविष्ट होजाता और शरीर फूट पड़ता है। इसका पहला घाव साधारण होता है। इस के तीन दर्जे होते हैं। पहले दर्जे में घाव केवल लिंग पर होता है। दूसरे में शरीर पर काले दाग, ताम्र रंग की फुन्सियां, और छोटे २ घाव आदि निकलते हैं। तीसरे दर्जे में हड्डी तक प्रभाव चला जाता है। बड़े २ घाव कुष्ठवत होते हैं। उपदंश के वास्ते कई औषधियां तैयार रहती हैं। साधारण रूप से यह हैं, अपनी अवस्थानुसार मंगवाले, या हम वृतान्त आने पर स्वयम् निश्चत करके भेज देते हैः—

**उपदंश औषधि नं० २**—यह उपदंश के तीनों दर्जों नर व मदीन के वास्ते हितकर है। पैतृक उपदंश के वास्ते भी हितकर है। मूल्य ४) रुपया, अर्द्ध औषधि २) रुपया।

**उपदंशौषधि नं० ४**—नर उपदंश के वास्ते और नवीन मादीन के वास्ते अकसीर है। सर्वथा हानि रहित गोलियां हैं, साधारण काष्ठिक वस्तुओं से बनी है। दो गोली बासी पानी से खाई जाती है। मूल्य १२८ गोली ४), ६४ गोली २ रुपया ॥

**उपदंशौषधि नं० ५**—प्रायः १५ दिन में आराम आता है। दोनों प्रकार के उपदंश दर्जा अव्वल में अद्वितीयगुणकारी है। मूल्य २८ गोली ४) रुपया, १४ गोली २) रुपया ॥

**उपदंशौषधि नं ८**—यह औषधि भी सब प्रकार के उपदंश को विशेष कर प्रथम व तृतीय दर्जे को अकसीर है। मूल्य २८ गोली ४) रुपया, १४ गोली २) रुपया ॥

**उपदंशौषधि नं० १३**—उपदंश नर तथा मादीन को १४ दिन में आराम करती है। अव्वल दर्जे को अकसीर और दूसरे दर्जे में भी गुणकारी है। मूल्य ४) रु०, आधी २) रु० ॥

**उपदंशौषधि नं० १४**—इस से २० या अधिक से अधिक ४० दिन के भीतर आराम आता है। केवल एक बूटी है, दर्जा अव्वल में अद्वितीय है। मूल्य ४० गोली ४) रु०

**उपदंशौषधि नं० १५, ( धूम्रपान )**—यह टिकिया है, दिन में तीन बार चिलम में रखकर हुक्का की तरह पीने से उपदंश नर, मादीन प्रथमावस्था के घाव चाहे कैसे ही गहरे हो अच्छे होजाते हैं। कण्ठमाला को भी हितकर है। आन्तरिक घाव किसी प्रकार का हो इस के पीने से अच्छा होजाता है। तीक्ष्ण अवश्य है, परन्तु अद्भुत् औषधि है। कोमल स्वभाव वालों को सेवन नहीं करना चाहिये। ३ दिन में ही आराम आता है। मूल्य ९ टिकिया २)

**उपदंशौषधि नं० १६, ( उपदंश रेचन )**—जब कि रोग जीर्ण हो चुका हो, या ऐसा दुःसाध्य हो, कि आराम न आता हो, तो पहिले जुलाब लेना उचित होता है। यह औषधि ३ माशा या अधिक से अधिक ६ माशा खिलाई जाती है। इस से उचित रेचन होकर उपदंश का विष निकल जाता है। जिस का आसौज, कार्तिक, या चैत्र फाल्गुण में उपदंश के फूटने का भय हो, वह ऋतु के आरम्भ में यह रेचन ले लें। मूल्य ६ माशा १) रुपया।

**तथाच, ( उपदंशौषधि नं० १७ )**—( द्वितीय तृतीय दर्जा उपदंश के लिये), यह औषधि दुःसाध्य जीर्णोपदंश के घाव, द्वितीय, तृतीय दर्जे के घाव फोडा, फुन्सा, व्रणादि को हितकर है। तालुछिद्र को गुणकारा है। नासूर को दूर करती है। मूल्य ६४ गोली ४) रुपये, ३२ गोली २) रुपया ॥

**सारशारिष्ट**—बहुत सी वैद्यक औषधियों का संग्रह है। उपदंश द्वितीय, तृतीय दर्जे में हितकर है। फोडा फुन्सी, दाग, चम्बल, दाद, कृष्णदाग, ताम्र वर्ण धप्पड, खुजली आदि को दूर करके शरीर को कुन्दनवत करता है। उन सब रोगों में जिन में वलायती सारसपरीला वर्ता जाता है, यह अधिक गुणकारी प्रमाणित होगा। मधुमेह, प्रमेह को हितकर है। प्रमेह के पश्चात् जो कारबङ्कल भयंकर फोडे ( मेह पिडिका ) निकलते हैं, उन को भी हितकर है। बात, रक्त भगन्दर को गुणकारी है। उत्तेजक और सुखदायक है। मूल्य १ बोतल २) रुपये ॥

**सारशारिष्ट मिश्रित**—उपर्युक्त गुणों के अतिरिक्त उपदंश द्वितीय व तृतीय दर्जे में विशेष लाभदायक बनाने के लिये इस को मिश्रित किया जाता है। उपदंश का विष बैठ जाने से जब कोई न कोई रोग होता रहता है, फोडा, फुन्सी आदि निकलते रहते हैं, तो इस को सेवन करना चाहिये। कण्ठमाला, सन्धिवात, और उपदंश की पीडाओं को भी हितकर है। मूल्य फी शीशी ३ औन्स २) रुपया, नमूना ।≈)

**रक्तशोधक**—यह केवल उश्बा ( सारसपरीला ) का सत्व है। प्रभाव लग भग वहीं है, जो सारशारिष्ट मिश्रित के हैं। मूल्य २) रुपया, नमूना ।≈),

**हबूब हयात**—सर्व शरीर ही क्यों न गल गया हो, इस औषधि के सेवन से कांचन बन जाता है, कुष्ट तक को हितकर है। शरीर के घाव, आतशक के घाव इस से अच्छे होजाते हैं। जिन के शरीर बहुत खराब होगए हैं उन को दीजाता है। ४० दिन खानी चाहिये। मूल्य ४० गोली ४), रुपया नमूना ८ गोली ।॥)

**सोज़ाक की औषधि**—सोजाक में पहिले जलन व पीड़ा होती है। नितान्त कष्ट होता है। दूसरे दर्जे में पीव आनी आरम्भ होती है। कुर्रह होजाता है, जलन धीरे २ बन्द होजाती है और केवल पीब जाती है वा तार से निकलते हैं, इस से भी बढ जावे तो तीसरे दर्जे में अवरोध होजाता है। मूत्र की नाली संकीर्ण होजाती है। कभी २ मूत्र रुक जाता है। तीसरे दर्जे में पहुंचा हुआ सोजाक बड़ी मुशकिल से दूर होसकता है। और जीर्ण होजावे तो जाता ही नहीं। सोजाक के वास्ते भी बहुत सी औषधियां तैयार रहती हैं। अवस्थानुसार दी जाती हैं, साधारणतया निम्न लिखित हैं:—

**सोज़ाक औषधि नं० १**—प्रथम दर्जे में अकसीर का काम देती है। २४ घण्टे के भीतर जलन दूर होती है। कष्ट कम होता है, थोडे दिनों में पूर्ण लाभ होता है। यदि पीब भी हो और जलन भी साथ हो, तो इस को खाकर पहिले जलन दूर करनी चाहिए। मूल्य ४ डराम १) रुपया, नमूना ≈)

**सोज़ाक औषधि नं० २**—बडे ही तजुर्बों के पश्चात् हमारा स्वयम् निर्म्माण कृत योग अकसीर सोजाक व कुर्रह को है, जो कि प्रत्येक अवस्था मे गुणकारी है। दाह, जलन हो, पीब हो, दोनों मिले हुए हो, सब की अकसीर अचूक औषधि है। शुक्रमेहादि को हितकर है। मूल्य ६० गोली ४), नमूना १५ गोली ( ५ दिन के वास्ते ) १) रुपया ॥

**अकसीर दमाकुर्रह**—यह औषधि केवल कुर्रह अर्थात् पीब जाने पर दी जाती है। एक ही दिन के भीतर पीब बन्द होनी आरम्भ होती है। इस के अतिरिक्त उपदंश को हितकर है। इस वास्ते जब सोजाक व उपदंश एक साथ हों तब भी हितकर है। दमा, खांसी आदि रोगों को दूर करती हैं। मूल्य २) रुपया, नमूना।)

**नोट**—भस्मों में से सीपभस्म, संगजराहतभस्म, फिटकड़ीभस्म, मोतीभस्म और पारदादि हितकर हैं॥

**बवासीर की औषधि**—यू तो बवासीर ६ प्रकार की होती है। परन्तु बडे दो ही भेद हैं। रक्तार्श व वातार्श । कभी पैतृक भी होती है, जो कष्ट साध्य है। साधारणतया निम्न लिखित औषधियां हैः—

**अर्शौषधि नं० ३**—यह खूनी व बादी दोनों को हितकारी है। और साधारणतः इस से आराम आजाता है। मूल्य ४० गोली २) रु०, नमूना ।)

**अर्शौषधि नं० ७**—यह विशेष कर रक्तार्श को लाभदायक है। ७ दिन के भीतर रक्त बन्द होता है। और २–३ सप्ताह में पूरा आराम आता है। मूल्य ४० गोली २) रुपया, नमूना ।)

**अर्शौषधि नं० ५**—जब कि अर्श के कारण नितान्त कष्ट हो पीडा, दाह, जलनादि से मनुष्य व्याकुल हो, उस समय यह औषधि ऐसी शान्ति देती है, जैसे अग्नि पर पानी डालदें। मूल्य १), नमूना ।)

**अर्शौषधि नं० ८**—इस गोली को घिस कर मस्सों पर लगाने से खाज, जलन, शोथ सब बन्द होता है, और मस्से मुरदा होजाते हैं। मूल्य ३२ गोली २) रुपया, नमूना ।)

**अर्शौषधि नं० ९, ( अकसीर बवासीर व शीघ्रपतन )**—औषधि बलवर्द्धक, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्रमेहादि को लाभदायक है। विशेष कर रक्तार्श के लिए मूल्य ३० गोली ५), ६ गोली १) रुपया ॥

**अर्शौषधि नं० १०**—बवासीर खूनी बादी को विशेष कर जब कि कोष्टबद्धता साथ बहुत हो अद्वितीय है। मूल्य २), नमूना ।)

**अर्शकुठाररस**—जब अर्श के साथ इतनी कोष्टबद्धता हो कि मल कभी ठीक उतारता ही न हो, तो पहिले एक रेचन देनी बहुत हितकर होती है। यह एक अर्शविरेचन है। खूब दस्त होते हैं और अगले दिन से ही बवासीर को आराम मालूम होता है। मूल्य १६ गोली १) रुपया ॥

**प्लीहोदरौषधि**—म्लेरिया ज्वर अधिक देर रहने से तिल्ली बढ़ जाती है। और म्लेरिया चिर काल तक बना रहता है। फिर ज्वर हट जाने पर भी तिल्ली बनी रहती है। कभी उदर की अन्य खराबियों से तिल्ली बढ़ती है निम्न लिखित औषधियां प्रायः देते हैं :—

**दवाई प्लीहा नं० २**—यह औषधि उस समय दी जाती है, जब कि आमाशय निर्बल हो तिल्ली साधारणतः बड़ी हो, क्षुधा कम लगती हो, मात्रा ६ गोली नित्य। मूल्य २४ गोली २), नमूना ।)

**प्लीहोदरौषधि नं० ३**—पौष्टिक है, चेहरे के रंग को शीघ्र लाल करती है। बल को बढ़ाती है। अग्नि सन्दीपन है, म्लेरिया के पुराने कीटाणु दूर होते हैं। सब प्रकार की तिल्ली दूर होती है। मात्रा २ रत्ती, मूल्य ६ माशा ४) रुपया, १॥ माशा १) रुपया ॥

**प्लीहोदरौषधि नं० ४**—सब प्रकार के प्लीहा के वास्ते हितकर है। प्रायः २० दिन में आराम आता है। साधारणतः यही दी जाती है। नमूना ४० गोली २) रुपया, नमूना ।)

**प्लीहोदरौषधि नं० ५**—जबकि प्लीहा के साथ कोष्ठबद्धता हो, या तिल्ली बहुत ही पुरानी और बढ़ी हुई हो, तो यह औषधि गुणदायक है। उचित यह है, कि उपरोक्त किसी भी औषधि के खाते समय इस औषधि को जारी रक्खा जावे। रात्रि को सोते समय एक गोली खाने से प्रातः खुलकर शौच आवेगा और तिल्ली कम होती जावेगी। मूल्य ६० गोली १) रुपया, नमूना ।)

**अकसीर हाज़मा**—आमाशय सम्बन्धी सर्व रोगों की अचूक औषधि है। आहार पच कर पूरा बल प्रदान करता है। खाया पिया सब पच जाता है। क्षुधा बढ़ती है। आज कल के दिनों में जबकि पक्वाशय सम्बन्धी व्याधियां

बहुत बढ़ी हुई है लग भग सब अमीर मन्दाग्नि ग्रस्त दिखाई देते हैं । यह औषधि प्रसाद प्रमाणित होती है। मूल्य ६० गोली २) रुपया, ३० गोली १) रुपया, नमूना ।)

**पाचक चूर्ण**—उदर पीड़ा गुड़गुड़ाहट, वमन, विशूचिका, अतिसार आदि रोगों को हितकर है । पाचन शक्ति खूब बढ़ती है । अन्य पाचक चूर्ण इस के सन्मुख तुच्छ हैं । मूल्य २) रुपया, नमूना ।)

**पाचनवटी**—शूल, पेट की वादी, गुड़गुड़ाहट, अफारादि को हितकर है । क्षुधा वर्द्धक है, कोष्टबद्धता को दूर करता है । प्रत्येक घर में वर्तमान रहना चाहिये । मूल्य ६४ गोली १) रुपया, नमूना ८ गोली ≈)

**प्राणदाता, (विशूचिका की अकसीर औषधि)**—यूं तो अमृत धारा भी विशूचिका के वास्ते अमृत है, तथापि ऐसे भयंकर रोग के वास्ते किञ्चित् अन्य औषधियां भी हमेशा तैयार रखनी चाहिये । यह हमारी अनुभूत औषधि है । और ५ घण्टे के भीतर ही इस से प्रायः आराम आजाता है । वमन विरेचन बन्द होकर ज्वर होजाता है । मूल्य १५ गोली १), सदैव पास रक्खो, विशेष कर इस रोग के प्रकोप के दिनों में ॥

**रेचक वटी (गोली जुलाब)**—यह गोलियां जुलाब के लिए अनुपम हैं । एक दो गोली रात को सोते समय खाने से प्रातः समय खुलकर शौच हो जाता है । एक दस्त आता है । कोई कष्ट नहीं होता । शरीर सुखमय होजाता है । १०—१२ गोलियां खाने से ८ दस जुलाब खुलकर होजाते हैं, तीनों दोषों के वेग को दूर करती है । मूल्य १०० गोली १), नमूना ≈)

**गन्धार रस**—कठिन से कठिन और जीर्ण से जीर्ण अतिसार, मरोड़, संग्रहणी, आदि थोड़े दिनों में दूर । प्रायः एक ही मात्रा से अतिसार मरोड़ादि को आराम आता है । विशूचिका के वमन विरेचन को आराम होता है । अतिसार व मरोड़ के वास्ते ऐसी हितकर अन्य औषधि न होगी । मूल्य १ तोला १) रुपया, नमूना ≈)

**हयातअफ़ज़ा**—हृदय की निर्बलता और धड़कन के वास्ते अनुपम औषधि है। २८ दिन में आराम आता है। २८ दिन की मात्रा का मूल्य २) रुपया, नमूना ।≈)

**मण्डूरवटिका**—कामला, श्वेतवर्णता, पाण्डु रोग, यकृत की निर्बलता, के वास्ते रामवाण है, शुद्धरक्त उत्पन्न होकर रंग लाल होता है। वैद्यक की प्रसिद्ध औषधि है। मूल्य १६ गोली ।)

---

**सुरमा नं० १**—यह सुरमा दैनिक सेवन के वास्ते है। नेत्रों को प्रायः रोगों से सुरक्षित रखता है। दृष्टि शक्ति स्थिर रखता है। और शीतलता प्रदान करता है। मूल्य १ तोला ॥) नमूना केवल ﴿)

**सुरमा नं० २**— रोग यथा पानी जाना, नया फोला, जाला, कुकड़े, पुड़वाल, आदि को दूर करता है। मूल्य १ तोला ॥।) नमूना ﴿)॥

**सुरमा नं० ३**—यह सुरमा फोला के वास्ते विशेष रूप से हितकर है। धुन्ध, जाला, कुकरों आदि को बहुत शीघ्र दूर करता है। मूल्य ८) रुपये, तोला, ६ माशा ४), नमूना १)

**सुरमा नं० ४**—पुड़वालों के लिए विशेष रूप से हितकर है। पुड़वालों को उखाड़ २ कर लगाया जाता है जो फिर नहीं उगते। मूल्य ४) रुपये तोला, ६ माशा २), नमूना ३ माशा १)

**भीमसेनी कर्पूर**—वैद्यक का प्रसिद्ध योग है। नेत्र के सर्व रोगों को दूर करता है। ढलका, शोथ, पीड़ा, गरमी, दाह, खुजली, धुन्ध, जाला, पानी बहना, ललाई सब दूर होती है। अव्वल दर्जे का दृष्टि शक्ति वर्द्धक है। इस के अतिरिक्त और बहुत से काम आता है। उत्तेजक और लकुवर्द्धकादि औषधियों में पड़ता है। उचित तो यह है, कि जहां किसी योग में कर्पूर लिखा हो इस को डालें तभी वह योग पूरा लाभ देगा। मूल्य १५) रुपया तोला, ३ माशा ३॥।), १ माशा १।)

**नूराञ्जन**—यह सुरमा अत्यन्त दृष्टि शक्ति वर्द्धक है। विद्यार्थी, क्लर्कादि यदि इसका सेवन रक्खें तो कभी नेत्र निर्बल न होंगे, और न कभी ऐनक की आवश्यकता होगी। दृष्टि क्षीणता के वास्ते इसके समान कोई औषधि न होगी। २ सप्ताह के सेवन के पश्चात् ही ऐसा ज्ञात होता है, कि नई शक्ति आगई है। मूल्य २०) तोला, ३ माशा ५) रुपये, नमूना ६ रत्ती १।)

---

**कर्ण तैल**—कर्ण रोग यथा दर्द, पीब, घाव, कानों में साएं २ आदि शब्द आना, श्रवण शक्ति हीनता को हितकर है। मूल्य ।) २ डराम, नमूना ।)

**अनुपम नस्य**—यह निस्वार अद्वितीय है, जो सदैव पास रखने योग्य है। इस निस्वार के लेते ही शिखदना, आधा शीशी, दाढ़ दर्द, कर्ण पीड़ा, मुखशोथ, नेत्र पीड़ा, प्रतिश्यायादि दूर होते हैं, मृगी, सन्निपात तक को हितकर हैं। मूल्य १) तोला, नमूना ।) इस से छींकें कभी आती हैं, कभी नहीं आतीं ॥

**मञ्जन नं० १**—दन्त रोगों यथा रक्त स्राव, पानी निकलना, पानी लगना, दन्तपीड़ा, मुखदुर्गन्ध को हितकर है। दांतों को स्वच्छ करता है मूल्य ।), नमूना ≈)

**मञ्जन नं० २**—विशेष कर दांतों की सफाई के लिए बनाया गया है। इस के मलते रहने से दांत मोतियों के समान चमकने लगते हैं। जिन के टारटर ( मल ) जम गया हो वह उसे उतार कर मलते रहें तो फिर न जमेगा मूल्य ।) नमूना ≈)

**नकसीर की औषधि**—चाहे कितनी देर से नकसीर जाती हो, इस के कुछ दिन नाक में डालने से बन्द होजाती है। मूल्य ॥)

**बाल उड़ाने की अनुपम औषधि**—इस को पानी में घोल कर लगाने से एक मिण्ट के भीतर कठोर से कठोर और कोमल से कोमल स्थान के बाल जड़ से दूर होते हैं। जिस २ मंगवायां प्रशंसा की है। मूल्य फी डबिया ।≈) नमूना ≈)॥

**बाल दूर करने की औषधि, (अर्थात् बाल आयु पर्यन्त न उगें)**—बाल दूर करने की औषधि के मलने से फिर उमर भर बाल नहीं उगते। बालों को साफ करके इस को लगाया जाता है इस से आगामी बाल निकलने बन्द होते हैं। मूल्य १॥) फी० शीशी। नमूना नहीं।

**बालों का सुगन्धित तैल**—बालों को नरम व मुलायम करता है। बढ़ाता है, शिर को शीतल रखता है, बाल सुन्दर, स्याह, चमकीले और नरम रहते हैं। दैनिक लगाया करो, मूल्य २ औन्स १), नमूना ।)

**बाल उगाने की औषधि**—इस औषधि के लगाते रहने से जिस जगह चाहो बाल उत्पन्न कर सकते हो, जब बारीक बाल उत्पन्न होजावें तो मूछें बढ़ाने का तैल लगाते रहो बढ़ेंगे। मूल्य १) प्रति टिकिया।

**मूछें बढ़ाने का तैल**—यह तैल न केवल मूछों को वरंच प्रत्येक स्थान के बालों को बढ़ाता है, उन की स्याही स्थिर रखता है। आहा! रोबदार मूछों वाला चेहरा कैसा भला मालूम होता है। मूल्य फी शीशी ३ औन्स २), नमूना ।)

**उबटन**—इस उबटन को स्नान समय मलने से चेहरे के बुरे दाग, कील छाइयांदि दूर होकर चेहरा साफ होता है। झुरियां नहीं पडतीं, चेहरे का रंग दिन प्रति दिन निरखता जाता है, सूरत मनमोहिनी होजाती है। विलायत की लेडियां इस को लगाकर विस्मित होती हैं, कि एक भारतीय औषधि उन की हज़ारों ऐसी औषधियों की तुलना में उतम है! मूल्य केवल १), नमूना ≈)

**सौन्दर्य्य बर्द्धक**—यह स्नान के पश्चात् सेवन किया जाता है। एक प्रकार का तैल है, जो चेहरे को चमकाता है, और दाग कीलादि को दूर करता है। यदि स्नान से पहिले उबटन और स्नान पश्चात् सौन्दर्य्य बर्द्धक का सेवन हो तो बस कहना ही क्या है। मूल्य फी शीशी ॥।≈) नमूना ≈)

**सौन्दर्य्यमलाई**—जिस स्त्री को एक बार दे दो सदैव इस की इच्छा करेगी। नरम मलाई हाथ पर रख कर चेहरे पर मली जाती है। चेहरे को नरम, कोमल, और सुन्दर करती है। छांई आदि दूर होती है। क्षौर के पश्चात् या किसी जगह के रोम दूर करके इस को लगादो तो भी रेशम की तरह नरम होजाती है। मूल्य २) नमूना ॥)

**नोटः**—सौन्दर्य्य विषयक एक पृथक सूची तैयार होने वाली है। यहां पर केवल किञ्चित् का वर्णन किया जाता है ॥

**मुख रक्षक**—मुख के छालों के वास्ते हितकारी है। चाहे बालकों को हों वा बडों को, मूल्य ॥) नमूना ।)

**पान मसालह**—पान खाने वाले श्रीमानों को यात्रा में जहां पान नहीं मिलता नितान्त कष्ट होता है। इस के अतिरिक्त हम ने देखा है कि बाज़ारी पान विक्रेता प्रायः मलिन बर्तनों आदि में सामग्री रखते है, इस लिए यह मसाला बनाया गया है। एक पान पर चुटकी रख दीजिए पान तैयार है। वैसा ही रंग देगा, वैसा ही स्वाद देगा, इस के अतिरिक्त मुख दुर्गन्ध को दूर करेगा, स्तम्भन बढावेगा, दांतों को दृढ करेगा, कफादि को शुष्क करेगा, मूल्य १), रुपया नमूना ≈)

**ताम्बूल वटी**—वह लोग जो पान के बडे २ पत्र मुख में डालने के बिना पान का आनन्द लेना चाहते हैं, या यात्रा में जहां पान ले जाना भी कठिन है इन गोलियों को खावे, एक गोली मुख में रखने से पान का मज़ा भी आवेगा रंग भी होगा, शेष ऊपरि लिखित गुण है। मूल्य ६० गोली १) नमूना ≈)

**स्वर वर्द्धक**—वकीलों, बेरिस्टरों, लेकचरारों, उपदेशकों, पण्डितों, रागियों, स्कूलमास्टरों, आदिकों के वास्ते जिन को बोलने का काम है, यह गोलियां रखनी चाहिये। यथावश्यक गोली मुख में रखने से गला जल्दी नहीं

बैठता, बैठा हुआ जल्दी खुलता है। और कुछ दिन लगातार खाने से कण्ठ सुरीला होजाता है। मूल्य ३० गोली २), नमूना ।)

**दद्रुघ्न औषधि**—इस के कुछ दिन लगाने से दाद चाहे किसी जगह हो, आराम आजाता है चम्बल को भी हितकर है। बहुत नरम जगह पर जबकि खुजाया हुआ हो, थोडी देर लगती है। दूसरी जगहों पर नहीं लगती, दाग, धप्पड कुछ नहीं पडता, वस्त्र खराब नहीं होते। इस को लगाकर कोई काम बन्द नहीं करना पडता। मूल्य १) ४ डराम, नमूना १ डराम ।)

**रोगन मसीहा**—जीर्ण से जीर्ण नासूर को दूर करता है, भगन्दर को हितकर है। इस के लगाने से प्रथम सब पीब निकल कर भीतर से भरना आरम्भ होता है। अन्य सर्व प्रकार के घावों का भी बहुत गुणकारी है। इस के खाने से कुरह को लाभ होता है। आन्तरिक घावों को खाने से भरता है। मूल्य १ औन्स ३ रुपया, ४ डराम १॥), नमूना १ डराम ।≈)

**सूर्य्य घृत**—इस के शरीर पर मलने से सब प्रकार की खाज तर व खुष्क दूर होती है। फोडा फुन्सी जिन को कई प्रकार के निकलते रहते हैं उन को रसायन है। गलित शरीर भी सर्वथा स्वच्छ होजाते हैं। चर्मज रोगों को अत्यन्त लाभ दायक है। मूल्य २ औन्स १) रुपया, नमूना ४ डराम ।)

**टिकिया छीब**—इस को गोमूत्र में या अजा दूध में घिस कर लगाने से थिम्ब, छीव, श्वेत कुष्ठ दूर होजाता है। मूल्य ॥) टिकिया ॥

**प्लेग की औषधि**—७ गोली तक खाने से प्लेग रोग जाता रहता है। यदि साथ अमृतधारा भी हो तो ९० प्रति सैकडा आराम आता है। यदि प्रति मास कुछ खा छोडा करें तो प्लेग का भय जाता रहता है। मूल्य ४० गोली केवल ॥) है ॥

**खांसी की गोलियां**—इन गोलियों को मुख में रख कर चूसने से नई खांसी रुक्ष हो वा स्निग्ध थोडे दिनों में लाभ होता है। मूल्य ६० गोली १), नमूना ≈)

**जया गुटिका**—यह गोलियां कफज, कास, श्वास के वास्ते अति गुणकारी हैं। पुरानी खांसी इन से दो तीन सप्ताह में जाती है। ज्वर साथ हो तो भी दी जा सकती है। विषमज्वर को भी हितकर है। मलभेदक हैं। उदर पीडादि को भी हितकर है। मूल्य ३२ गोली २) नमूना ।)

**अकसीर बदन**—गले व छाती के सर्व रोग, कास, श्वास, गले पड़ना आदि को हितकर है। जीर्णज्वर रक्तवमन राजयक्ष्मा की खांसी में, रक्त जाने में, थोड़े दिनों में पूरा गुण करती है। इस लिये अन्य औषधियों के साथ दिक, सिल, में इस को अवश्य सेवन करना चाहिये। निर्बल बालकों को बलवान बनाती है। दुर्बल शरीर वालों को स्थूल। मूल्य १॥) शीशी॥

**ज्वरारि अभ्रक**—यह गोलियां विषमज्वर के वास्ते अनुपम व अद्वितीय हैं। पुराना ज्वर और विशेष कर वह ज्वर जो चढता उतरता हो, प्रायः पहिले दिन छोड़ देता है। त्रितीयक, चौथिया, दैनिक आने वाला हो, जिस दिन खावे उसी दिन नहीं आते। मूल्य १६ गोली १), ८ गोली ॥) आना

**ज्वरार्क**—म्लेरिया, जूडी, या मौसमी किसी प्रकार का हो तीन दिन के भीतर जाता रहता है। म्लेरिया कृमि को नष्ट करने में रामबाण है। दैनिक आने वाला, नित्य दो बार आने वाला तीया, चौथिया, तिल्ली सब को दूर करता है। मूल्य ॥) शीशी, जिस में युवा को ३ दिनकी मात्रा होती है॥

**त्रितीयक ज्वर तन्त्र**—इस औषधि को ज्वर चढने से १ घण्टा पहिले मध्यमा उंगली पर बांध देने से ज्वर नहीं चढता मूल्य ॥)

**नोट:**—और बीसियों औषधियां ज्वर सम्बन्धी तैयार होती रहती है। वैद्यक में इस के सम्बन्धी सैकडों रस हैं॥

**पीडा नाशक**—इस की एक ही पुड़िया के सेवन से चाहे किसी प्रकार की नसों व पट्ठों की पीडा हो जाती रहती है। शिर पीडा, कटिपीडा, गुल्फ, रान या किसी जगह की भी पीडा हो १५ मिनट में आराम। पुरानी

पीडा हो तो कुछ दिन सेवन करनी चाहिये। अन्यथा पहिली पुडिया से ही आराम होजाता है। जिन को दर्द शिर का रोग हो इस को अवश्य अपने पास रक्खा करें। एक पुडिया ५ मिनट में पीड़ा बन्द कर देगी। मुल्य १), नमुना ।)

**ब्रह्मी अरिष्ट**—स्मरणशक्ति के वास्ते इस से वढ कर कोई औषधि न होगी। मस्तिष्क की निर्बलता, शिरपीड़ा, पुरुषों के वीर्य्यसम्बन्धी रोग, स्त्रियों के रजसम्बन्धी रोग, शुक्रमेहादि को हितकर है। मलभेदक है। थोडे दिनों में मस्तिष्क दिव्य हो जाता है। वाणी मधुर हो जाती है। गान विद्या और काव्य इस से शीघ्र आती है। मुल्य २) रुपया शीशी ४ औन्स ॥

**वृद्धिबाधिका बटिका**—यह गोलियां सब प्रकार की अण्डवृद्धि को हितकर हैं, नल उतरने को एक दो दिन में आराम देती हैं। अण्डशोथ और अण्डपीड़ा को भी हितकर है, अंत्र वृद्धि ( आंत उतरने ) को हितकर है, किन्तु आराम दो चार मास में आता है। यह गोलियां श्लीपद को भी हितकर हैं। मूल्य ६० गोली २॥), १५ गोली ॥=)

**अफीम निवारक**—इन गोलियों के खाने से अफीम छूट जाती है। सैकड़ों मनुष्य छोड चुके हैं। मूल्य ६० गोली १॥) जो रत्ती तक अफीम खाते हैं उन के वास्ते ६० गोली पर्य्याप्त हैं। अधिक खाने वाले २-३ डबिया यथा आवश्यक मंगालें ॥

**मोटा होने की औषधि**—कतिपय लोग कोई विषेश रोग न होने पर भी और अच्छा आहार खाने पर भी मोटे नहीं होते, वह इस को सेवन किया करें। मूल्य आध सेर ४), नमूना आध पाव १) रुपया ॥

**वातकुलान्तकरस**—यह गोलियां मृगी के वास्ते रामबाण हैं। प्रायः १ मास के भीतर आराम हो जाता है। इन गोलियों के साथ २ नाक में डालने के वास्ते अमृतधारा रखनी चाहिये। मूल्य ३० गोली ५), १२ गोली २) बालकों को $\frac{1}{4}$ से अर्द्ध गोली तक देना चाहिये ॥

**दवाई गंठिया ( संधिवात )**—जोड़ों की पीड़ा, शोथ, सन्धिवात अर्द्धांगवात, आर्दवातादि को हितकर है। मूल्य ६० गोला २) नमूना ॥)

**अमृत की गोलियां**—कफज कास, श्वास, पेटदर्द, शीतज्वर, नेत्रपीड़ा, नेत्ररोग, नाखूना, सब प्रकार का विष, हड्डी का ज्वर, बात, सन्निपात, दन्तरोग, कोष्टबद्धता, बवासीर, बन्ध्यापन, सर्पदंश, बिच्छूदंश, ढलका, उदरकृमि. मूत्रबद्ध, आमाशय की निर्बलता, संग्रहणी, मूत्रकृच्छ्र सन्धिवात, उपदंश, शुक्रमेह, मधुमेह, मुखगन्ध, दर्द शिर, कामला, जलोदर, धातुक्षीणता मृगी, श्वेत कुष्ठ, नासूर, गञ्जशिर, अतिसार, मरोड़, कर्णपीड़ा, दन्तपीड़ा, अन्धराता, आर्तवघद्ध, भिड़ादि का दंश, शरीर की शिथिलता, गुदभ्रंश, शीतदोष, नाभिपीड़ा, तमक श्वास, अश्मरी, छब, प्रतिश्याय, मूत्रातिसार, बालकों का डब्बा रोग, तृषा की अधिकता इत्यादि रोग दूर होते हैं। और पांच-सात गोलियां इकट्ठी देने से बढ़िया रेचन का काम भी देता है। मूल्य ६० गोला १) रुपया नमूना ≈)

# हकीम !

## दुनियां में अनूपम मेडीसन बक्स ( औषधियों का डब्बा )

अनुपम इस वास्ते कि केवल ३ औषधियां हैं। जेब में रक्खा जासकता है और केवल ३ औषधियों से सर्व रोग दूर होने का ठेका मिलता है, इस वास्ते इस का नाम हकीम रक्खा गया है। अमृतधारा एक अनुपम औषधि है, इस के साथ इस में एक शीशी गन्धार रस और एक शीशी अमृत की गोलियां हैं। प्रशंसा इन की पीछे लिखी गई है। अमृतधारा ही पर्य्याप्त है। फिर जहां आवश्यकता पड़े इन को साथ मिला देने या पृथक सेवन करने से गज़ब ही तो होगा। मूल्य तीनों का ४॥) है, परन्तु इस को सर्व साधारण में प्रचलित करने के वास्ते केवल ४) रुपये मूल्य रक्खा है। बक्स मानो मुफ्त है ॥

# पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य रचित

## प्रत्येक पुरुष के पढ़ने योग्य वैद्यक पुस्तकें
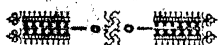
**सोजाक का वर्णन**—तत्त्वबंधी व्याख्या उस का कारण निदान और चिकित्सा बहुत उत्तम रीती से अंकित है मूल्य ।॥)

**शीघ्रपतन**—समस्त दुनियां में ९९ प्रति सेकड़ा से भी अधिक इस रोग में ग्रस्त हैं, कारण यह है कि बुरे व्यसन सम्पूर्ण जगत् पर अधिकार किये हुए हैं, इस पुस्तक में उन के पूर्ण व्याख्या की गई है, और पश्चात् सविस्तर चिकित्सा और सर्व प्रकार के योग भी दिए गए हैं, ताकि प्रत्येक धनी व निर्धन लाभ उठा सकें मूल्य ।-)॥

**डाक्टर लूईकोहनी के चार स्नान**—की पूरी विधि बड़ी योग्यता से संक्षिप्त करके लिखने के पश्चात् उन से प्लेग की चिकित्सा कैसे करनी चाहिये, इसका भी वर्णन किया गया है, मूल्य ≈॥

**ब्राह्मी**—आज कल ब्राह्मी के तन्द्रा नाशक, मस्तिष्क पौष्टिक, स्मरण शक्ति वर्द्धक प्रमेह नाशक आदि होने को सभी जानने लग गए हैं, और ब्राह्मी बहुत सेवन की जारही है । इस में ब्राह्मी का पूरा वर्णन करके सेवन करने के असंख्य उपाय लिखे गए हैं, मूल्य -)॥

**प्रसूत काल**—यह पुस्तक घर में मौजूद होनी चाहिये और प्रत्येक घर में पढ़कर या सुनाकर इस के सम्पूर्ण लेख हृदयस्थ करा देने चाहिये। प्रत्येक दाया को इस से अवगत होना आवश्यक है। इस में २३ लाभ दायक चित्र हैं। मूल्य ॥≈)

# विज्ञापन ॥

हमने विलायत से एक टिकिया बनाने की मशीन मंगवाई है। इसी कारण हमारे हां गोलियों के स्थान में टिकियां बनने लग गई हैं। सो यदि सूची में गोली लिखी देखें और पहुंचें टिकियां, तो इसका विचार न करें ॥

# पुरुषों के विशेष रोगों का वर्णन ॥

इस नाम की एक छोटी सी ५८ पृष्ट की सुन्दर पुस्तक कविविनोद वैद्य भूषण पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य की लेखनी से निकल चुकी है, जिसके पढ़ने के पश्चात् नवयुवक हमको लिखा करते हैं; काश ! कि यह पुस्तक हमको पहिले मिलती, और हमें यथप्रदर्शित करती, इसके भीतर वह २ उद्बोधन किए हैं, कि मनुष्य उनका पालन करके युवा और स्वस्थ रह सकता है । आज कल की दशा का फोटो बहुत उत्तमता से खैंचा गया है, हस्तमैथुन की हानियां, उससे बचने के उपाय, सम्भोगादि के विषय में सविस्तर शिक्षा, पुरुषों के विशेष रोगों का वर्णन इस में किया है, इस में वह २ शिक्षाएं और विधियां अंकित हैं, कि आप विविध इलाजों से निराश भी हो चुके हो, तो फिर से मर्द, स्वस्थ और युवा बन सकोगे ॥

यह पुस्तक )॥ का टिकट आने पर मुफ्त भेजी जाती है ॥

विज्ञापकः—

**हीरानन्द शर्म्मा मैनेजर देशोपकारक व अमृतधारा औषधालय लाहौर ॥**

तीन वैद्यक पत्रों के सम्पादक व २ दर्जन से अधिक पुस्तकों के रचिता

# कविविनोद वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य की तय्यार की हुई

[रजिस्टरी हुई] **"अमृतधारा"** [रजिस्टरी हुई]

लगभग उन सब रोगों का जो प्रायः घरों में होते रहते हैं हुक्मी इलाज है। **बीस सहस्र** सेवन करने वालों की यही सम्मति है, कि अमृतधारा हर घर में, हर जेब में सदा मौजूद होनी चाहिए, क्योंकि जो बीमारी या कष्ट होजावे, इस के खाने लगाने से ९० फीसदी तो आराम ही आता है, अन्यथा रोग रुक अवश्य ही जाता है, यही कारण है कि लगभग २० **सहस्र प्रशंसापत्र** प्रतिष्टित सज्जनों के मौजूद हैं। **अमृतधारा** कारखाना के वास्ते एक लाख रुपया लागत का एक विशाल मकान लाहौर में बनाया गया है, जिस का नाम "**अमृतधारा भवन**" है, इस भवन के पूर्व ओर जो सड़क है, उसका नाम कमेटी ने **अमृतधारा सड़क** रक्खा है, इसके भीतर एक डाकखाना खुला है। जिसका नाम **अमृतधारा डाकखाना** है, यह भवन श्रीमान् एफ. डब्ल्यू. [illegible] साहिब बहादुर डिप्टी कमिश्नर लाहौर के शुभ हाथों से लाहौर के प्रतिष्ठितों के बड़े भारी जलसा में खुला था। "**अमृतधारा**" सचमुच एक अद्भुत आविष्कार है, सविस्तर जानने के वास्ते "अमृत-पुस्तक" मुफ्त मंगावें, अमृतधारा की प्रसिद्धि के कारण इस की नकलें बहुत बन गई हैं। झूठी नकलों से सावधान रहें ॥



मूल्य अमृतधारा पूरी शीशी २॥) आधी शीशी १।) नमूना ॥) है

पत्र व्यवहार के लिये इतना पता पर्याप्त है:—**अमृतधारा लाहौर** ॥